Nārāyaṇa Paṇḍit.

~~विष्णुशर्मा~~

राजनीति

लल्लूलाल कवि - अनुवादक

बनारस - अखबार प्रेस
१८५४ ई०

शाहरबनारसमहल्लेदुंधविनायक राजनिति बनारसकेछापे॰मेमिलेगी



॥ राजनीति ॥

गजमुख सुखदाता अमत दुखदाहक गणईश पूरन अभिलाषा करौ शम्भू सुत जगदीश ॥ काहू समै श्रीनारायण पंडितने नीति शास्त्रनि ते कथानि कौ संग्रह करि ॥ संस्कृत में एक ग्रंथ बनाय· वा को नाम हितोपदेश धर्यौ सो संवत १८६९ में श्री लल्लू जी लाल कवि ब्राह्मण गुजराती सहस्र अवदीच आगरे वालेनें वा कौ आशय लै व्रज भाषा करी नाम राजनीति राख्यौ ॥ दोहा पंडित हैं ते जानिहैं कथा प्रसङ्ग प्रवीन ॥ मूरख मनमें मानिहैं लाल कहा यह कीन ॥ व्रजभाषा भाषत सकल सुरबानी समतूल ॥ ताहि बखानतु सकल कवि जान महारस मूल॥ या राजनीति के पढ़े सुनेतें मनुष व्रजभाषामें निपुण होय अरु जितेक संसार के ब्यौहार की बातें हैं तिन मांहिं प्रवीन ॥ प्रथम वा ग्रंथमें ऐसे लिख्यौ है ॥ कि जे चतुर हैं ते आपकौं अजर अमर समान जान विद्या अरु धन की चिंता करतु हैं आपनं बाधा हू की चोटी काल गहै होय ॥ ऐसो समझ वे धर्म करतु हैं ॥ पुनि ऐसे कह्यौ है ॥ कि सब पदार्थनि में विद्या रूपी पदार्थ उत्तम है ॥ क्यौं कि आहार की देनवारी ॥ पुन्य मार्ग की दिखावन हारी ॥ अरु सदा चतुराई की दाता है; जा कौ भागी भाग न लै सकै, अरु मोल नाहीं, सम नाहीं, यह गुप्त धन है, या कौं चोर ठग राजा छल करि न लै सकै; विद्या देति हैं नम्रता, नम्रता पाये भयौ सुपात्र, सुपात्र भये मिलतु हैं धन, धन मिले करतु है धर्म, धर्मतें सुखी रहतु हैं, अरु जैसे नदी नारे कौं समुद्र लौं पहुंचावे तैसें विद्या हू नर कौं राजा तक लै जाय आगे जैसौ वाके कपार में लिख्यौ हो।

य. तैसौ फल मिलै, शस्त्र विद्या औ शास्त्र विद्याये दोऊ जगत में उच्च पद की देनवारी हैं परवृद्ध अवस्था में शस्त्र विद्या कौं देखि हंसतु हैं अरु शास्त्र विद्या तें अधिक प्रतिष्ठा होतु है ताते बाल अवस्था ते लै वृद्ध अवस्यालौं शास्त्र संग्रह करनौं मनुष कौं उचित है; क्यौंकि जहां पंडित प्रवेश करतु हैं, तहां धनवान नहीं जा सकतु. तासों बालकनि के नीति शास्त्र सिखायवे कौं छल करि कथा कहतु हैं, क्यौं कि शास्त्र में प्रथम ही बालकनि का चित्त नहीं लागतु. पुनि ऐसें हू कह्यौ है जो, विद्या बाल अवस्था में सिखाइये सा भूलति नाहीं, जैसैं कोरे माटी के पात्र मैं जो भरिये, ताही कौ गुन लहै ॥ याहीतें पांच प्रकार की कथा करि कहतु हैं, पहली मित्र लाभ कहैं प्रीति करायवे की रीति दूजी सुहृद्भेद कहैं स्नेह छुड़ायवे की भांति तीजी विग्रह कहैं युद्ध करायवे की चालि॥ चौथी संधि कहैं मिलाप करायवे की युक्ति॥ संग्रामते पहिले होयकै पाछैं॥ पांचवीं लब्धप्रनाश कहैं एक वस्तु पायकरि हिराय दैनी. ॥ अथ कथा आरंभ ॥ कविवासी गृह कूप की कथा अपार समंद तैसी ये कछु कहतु हौं मति है जैसी मंद

श्रीगङ्गा जी के तीर एक पटना नाम नगर; तहां, सब गुननिधान, महाज्ञान पुन्यवान, सुदरसन नाम राजा हो. वानें एक दिन काहू पंडित तें द्वै श्लोक सुनें ताकौ अर्थ यह है कि अनेक अनेक प्रकार के संदेहनि कौं दूरि करै औ गूढ़ अर्थनि कौं प्रकाशै तातें सब की आंखि शास्त्र है, जाहि शास्त्र रूपी नेत्र नाहीं सो आंधरौ है अरु तरुनापन धन प्रभुता अविवेकता ये चारौं एक एक अनर्थ की करनिहारी हैं अरु जहां ये चारौं होंय तहां न जानिये कहा होय यह सुनि राजा आपने पुत्रनि की मूर्खता देखि चिन्ता करि कहनि लाग्यो कि ऐसे पुत्र भये कौन काम के जे विद्या करि हीन अरु धर्म सों रहित ते पुत्र ऐसें जैसें कानी आंखि देखिवे कौ तौ नाहीं पर दूखनी आवै तौ पीर करै कह्यो है ॥ पुत्र ताही कौं कहिये जाके जन्में तें कुल की मर्य्याद योह ॥ अरु यौं तौ संसार में मरकै का नाहीं उपजतु हैं पर सज्ञान अरु विद्यावान जो उ

त्र वंस में होतु है सो पुरुष सिंह है, जैसे चंद्रमा तें आकाश शोभा पावतु है तैसें वा पुत्र सां कुल जाकौ नाम गुनीन की गिनती में लिखनी तें नाही लिख्यौ गयौ ताही की माता कौ वद वांझ कहतु हैं अरु दान तप सूरता विद्या अर्थ लाभ में जिन कौ जस नाहीं भयो तिन की माताओं ने केवल जनवे ही कौ दुख पायो है पै पुत्र कौ सुख नाहीं देख्यौ कहतु हैं कि जिन नि वडे तीर्थन में अति कठिन तप व्रत किये हैं तिन के सुत आज्ञा कारि धनवान पंडित धर्मात्मा होतु हैं ये छह वस्तु संसार में सुख दायक हैं सदा धनकी प्राप्ति शरीर आरोग्य स्त्री तें हित नारी मिठ वोली पुत्र आज्ञा कारी अरु विद्यातें लाभ॥ ❀ ॥

इतनी कहि पुनि राजा वोल्यौ कि मेरे पुत्र गुनवान होय तौ भलौ यह सुनि कोऊ राज सभामेंतें वोल्यौ कि महाराज आयु कर्म वित्त विद्या अरु मरन ये पांच बात देहधारी की गर्भही में सिरजी हैं ताते जो भावी में है सो विना भये नाहीं रहति जैसें श्री महादेव जू की नग्नता अरु श्री भगवान की सर्प्पशय्या तासों चिन्ता मति करौ जौ तिहारे पुत्रनि के कर्म में विद्या लिखी है तौ विद्यावान होंयगे पुनि राजा कही यह तौ सांच है पर मनुष की परमेश्वर नें हाथ अरु ज्ञान दयौ है सो विद्या साधन के अर्थ जैसें एक चक्र कौ रथ न चलै तैसे विन पुरुषार्थ किये काज सिद्ध न होय तातें उद्यम सदा करिये कर्म की ई आसरौ करि न वैठि रहिये कह्यौ है कि जैसें कुम्हार माटी ल्याय जो कछु कर्यौ चाहै सो करै तैसें नर हू अपने कर्म समान फल पावै॥ कर्म तौ जड़ है वासों कछू न होय उद्यम करताह तासों कर्ता कर्म कौ प्रेरै तव भलौ वुरौ करता के कर्म संयोग तें होय अरु केवल कर्म की ई आसरौ करि वैठि रहनौ कपूत कौ काम है अरु जा के माता पिता सुत कौ विद्या कौ उद्यम न करावें ते शत्रु जानिये कह्यौ है कि मूढ़ पुत्र पंडितन की सभा में शोभा न पावें जैसें हंसनि में वगुला न सोहे

आगे या जानें यह विचारि पंडितन को समाज करि कह्यौ हे पंडितो॥ तुम में कोऊ ऐसो पंडित है जो मेरे पुत्रनि कौ नीति मार्ग कौ उपदेश दै नयौ जन्म करै॥ कह्यौ है जैसे काच कांचन की संगति पाय मरकत मनि जनाय तैसें

साध की सङ्गति में नीच ॥ ॥ दोहा ॥ संगति कीजे साध की हरे और की व्याधि ओछी संगति नीच की आठौ पहर उपाधि ॥ तहां राजा की बात सुनि विष्णुशर्मा वृद्ध ब्राह्मण सकल नीति शास्त्र कौ जान बृहस्पति समान बोल्यौ कि महाराजा राजकुमार तो पढाइबे योग्य हैं अयोग्य कौं विद्या न दीजिये क्यौं कि वह पढै तौ मिथ्या न होय अरु जो सिद्ध होय तौ अनीति विशेष करै विद्या को गुण छांड़ै औगुन दृढ़ करि गांठि बांधै तातें कुपात्र कौ न पढ़ाइये जैसें बिलाव कौं नवौ नवौ भोजन खवाइये तौ हू बिलूरबे की घात न तजै पुनि कोटि जतन करि बगुला कौं पढ़ाइये पर सुआ सौ न पढ़ै जौ मुनि धर्म में निपुण होय तौहू माछरी मारबे की घात अधिक सिखैवै महाराज ॥ तिहारे कुल में तौ निर्गुनी बालक न होंय जौं मनि मानिक की खान में काच न उपजै हम विद्या बेचत नाहीं तुमतें कछु लेतु नाहीं पर तुम्हारी प्रार्थना है यातें हौं तिहारे पुत्रनि कौ सहज सुभाव ही छः महिंना में नीति मार्ग में निपुन करिहौं ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

यह सुनि राजा वृद्ध ब्राह्मण विष्णुशर्मा तें बोल्यौ अहो पुहुप की संगति तें देखौ नान्हे कीट हू सज्जननि के माथे चढतु हैं तातें तिहारे सतसंग तें कहा न होय जैसें पाथर की प्रतिष्ठा किये सब मनुष देवता करि पूजैं पुनि उदयाचल परवत की बसन सूरज के उदै भये सबै वस्तु सूरज समान ही दीसै सुसंगते नीच की हू प्रतिष्ठा होय ॥ चौपाई ॥ कीट भृंगि ऐसें उर अंतर मन सरूप करि देत निरंतर ॥ लोह हेम पारस के परसे या जग में यह सरसै दरसै ॥ दोहा ॥ सेस सारदा व्यास मुनि कहतु न पावै पार ॥ सो महिमा सतसङ्ग की कैसे कहैं गंवार ॥ तुम मेरे पुत्रनि कौ पंडित करबे जोग हौ ऐसे वा राजानें बिनती करि ब्राह्मण कौं आपनें पुत्र सौंपे तब वह विप्र राजपुत्रनि कौं ले एक ऊंचे मंदिर में आय बैठ्यौ ॥ कौतुक सौं पाय कह्यौ सुनौं महाराजकुमार ॥ दोहा ॥ काव्य शास्त्र आनन्द तें रसिकन के दिन जात ॥ मूरख के दिन नींद में कलह करत उतपात ॥

हौं मित्रलाभ की कथा कहतु हौं क्यौं कि मित्रलाभ में लाभ बहुत हैं कि एक चित्रग्रीव कपोत औ कछुवा हिरन अरु मूसा ये परम मित्र हैं तिन के मिल

न श्री कर्म कहतु हों कि जे असाध्य हैं निधन हैं परबुद्धिवान नितइन सों श्री
ति हैं तिन के काज ऐसे सिद्ध होतु हैं कि जैसे काग कछुवा हिरन मूसा के भये
यह सुनि राजकुमारनि कहि यह कैसी कथा है तहां विस्नुशर्मा कहतु हैं ॥
गोदावरी नदी के तीर एक सेमल कौ रूख तापै सब दिस के पंछी
आय विश्राम लेतु हैं एक दिन प्रात ही लघुपतनक नाम काग जाग्यो वह
एक काल रूप व्याधी कौं दूरतें आवत देखि विचार करि कहनि लाग्यो आ
ज भोर ही की वेला अधर्मी दुराचारी कौ मुख देख्यो सो न जानिये कहा हो
य ऐसे विचारि लघुपतनक काग उड़ि गयो कह्या है कि स्यान की ठाम पंडित च
तुर नर हैं मूरख भय सोग दै ब्यौ सहे ॥ इतेक में व्याधी नें रूख तरें चांवर के कनि
का डारि तापर जाल पसार्यो तहां चित्रग्रीव कपोत कुटुम्ब समेत उड़त उत आ
य बढ़ौ तिन में तें एक पंछी देखि बोल्यो इन चांवरनि कौं हों चुग्यो चाहतु हौं
चित्रग्रीव कही अरे ॥ यावन में चांवर कहां तें आये यह कछु कौतुक है या
तें ये मोकौं नीके नाही लागतु ॥ सुनौ जौ तुम इन चांवरनि कौ लोभ करि हौ
तो वैसें होयगी जैसे कंकन के लोभ सों एक पथिक दलदल में फसि बूढ़े बाघ
को अहार भयौ यह सुनि पंछियन कही यह कैसी कथा है तब चित्रग्रीव क
पोत राज बोल्यौ ॥ ❖ ॥ ❖ ॥ हौं एक दिन वन में रह्यौ तहां यह देख्यो
जु येक वृद्ध बाघ पानी में न्हाय कुश हाथ मे लै मारग में आय बैठ्यो इतेक
में एक बटाउ ही ब्राह्मन आय कढ्यौ वानें जब पंथ में नाहर बैठ्यो देख्यौ
तब भय खाय व्हां ही ठिठक्यौ याहि भयातुर देखि सिंह बोल्यो अहो देवता
हौं जो गैल में बैठ्यो हौं सो पुन्य करनि के हेतु अरु मो पास सोना को कंक
न है सो श्री कृस्नार्पन देतु हौ तू लै यह सुनि उन आपनें मनमें विचा
र्यो ॥ कि आज तौ मेरी भाग जाग्यो दीसतु है ॥ पर ऐसे संदेह में जैबौ जो
ग नाहीं क्यौं कि बुरे तें भली वस्तु हू पाइयै ॥ पै आगे दुख होय जौ अमृत
में विष होय तौ मारै हीं ॥ रे ॥ पुनि ऐसें हू कह्यो है कि ॥ विन कष्ट द्रव्य
हाथ नहीं आवतु अरु जहां कष्ट तहां फल है ॥ जैसें अ हां माया तहां सं

प पुष्प तहा कंटक विन दुख सहे सुखनाहीं ॥ यह त्रिचारि ब्राह्मन ने वासों कही ॥ कहां है वह कंकना वाने हाथ पसारि दिखायो तब विप्र कौं लोभ आयौ अरु वोल्यौ ॥ अरे ॥ तू व्याध कौ करन हारौ म तेरौ विस्वास कैसें करौं नाहर वोल्यौ अहो ॥ एकतो मैं प्रातस्नान करि दाता होय वैठ्यौ हौं ॥ दूजे वढ़ भयौं तातें नख दांत अरु इंद्रियन की बल हू नाहीं अव मेरी प्रतीति कौं न करे ॥ कह्यौ है यज्ञ वेद पाठ दान तप सत्य धीरज क्षमा निर्लोभ ये आठ प्रकार कहें हैं ते पाखंडीतें न हौंय ॥ हौं तो अपनें अर्थ के लिये दियौ चाहतु हौं अरु वाघ मास खातु हैं सो मेरे नाहीं पर न जानतु है सो कहतु है जैसें कुटनी काहू कौं धर्म कौ उपदेश देइ तौ हू लोक न मानें अरु ब्राह्मन हत्यारौ हू मानिये ॥ तातें तू सांचौ है मेरी देह वढ़ भई अरु या काया तें मैं वहुत पाप किये हैं यह समझ सव पाप तज धर्म शास्त्र में पढ्यौ अरु सुन्यौ है ॥ प्रानी कौ ऐसौ चाहिये कि जैसौ अपना जीव प्यारौ है तैसो ही सव काहू कौ जानें अरु च्यार प्रकार तें दान देतु हैं धर्मार्थ भयार्थ उपकारार्थ स्नेहार्थ सो नाहिं मैं केवल तोहि दुखी जानि देतु हौं श्रीकृस्नचद्रनें हू राजा युधिष्ठिर तें कह्यौ है कि दान दरिद्री कौ दीजै तौ अधिक फल होय ॥ क्यौं कि औषध अरु पथ्य दुखी का देतु हैं सुखी कौं नाहीं अरु जो देश काल पात्र देखि दान देतु हैं सो दान सात्विकी कहिये तातें ब्राह्मन ॥ तू सरोवर में न्हाय आ सुच होय दान लै वाकी वात सुनि लोभ को मार्‌यौ ज्यौं वह सरोवर में उतर्‌यौ त्यौं दौ में फंस्यौ ॥ जव कींच तें पांव न काढ़ि सक्यौ तव वाघ हौलें हौलें वाकी ओर चल्यौ ब्राह्मन कही आहो ॥ तुम काहे कौं आवतु हौ ॥ वाघ कही कि तूं पानी में ठाढ़ौ रह तो पै प्रयोग पढ़वाय कंकन दै स्वस्ति शब्द सुनौंगौ यह कहत पास जाय वाकौं फंस्यो देखि नर हठी धरी तव विप्र आपनें मन में कहनि लाग्यौ कि दुष्ट कौ धर्म शास्त्र वेद कौ पढिवौ कछु काम न आवै क्यौं कि आपनौ सुभाव कौ कृ नाहीं तजतु जैसें गाय कौ दूध सुभाव ही तें मीठौ होतु है कछु वाके खैवे पीवे तें नाहीं अरु जाकी

इंद्री मन वस नाहीं ताकी क्रिया ऐसें जैसें हाथी को स्नान उत न्हायौ इत फेरि औं कौ त्यौं तातें मैं भक्ती न करी जो वाघ की प्रतीति करी सब अपने कुल व्यौहार चलतु हैं यह विचार करै तौ लौं नाहरने वाहि मार भक्षन कियौ तातें हौं कहतु हौं कि विन विचारे काम कवहू न करियै ॥ कुंडलिया ॥ विना विचारै जो करै सो पाछे पचताइ ॥ काम विगारै आपनौं जग में होत हंसाइ ॥ ऋ॰ ॥ जग में होत हंसाइ चित्त में चैन न पावै ॥ खान पान सनमान राग रंग मनहि न भावै ॥ कहि गिरधर कविराय दुख कछु टरत न टारै ॥ खटकत है जिय मांहिं कियौ जौ विना विचारै ॥ कह्यौ है पचायौ अन्न पंडित पुत्र पतिव्रता स्त्री सुसेवित्त राजा विचार करि कहवौ अरु करिवौ॥ इनते विगार कवहू न उपजे ॥ यह सुनि एक परेवा वोल्यौ अहो ॥ याडोकरा की वातें आपदा में कहां लौं विचारैं ॥ ऐसे संदेह करियै तौ भोजन करनौ हू न वनैं ॥ क्यौं कि अन्न पानीं मे हू संदेह है ॥ ऐसो विचार कर्यौ करैं तौ सुख सों जीवन हू न होय॰ कह्यौ है कि तृषावंत असन्तोषी क्रोधी सदा संदेही जो और के भाग की आस करै अति दयावंत ये छहौ सदा दुखी रहैं ॥ इतनी कहि वह परेवा चांवर चुगन उतर्यौ वाके साथ सब उतरे तव चित्रग्रीवने विचार्यौ कि इनकी लार जो होय सो होय पर साथ छोडनौं उचित नाहीं ॥ कह्यौ है मनुष अनेक शास्त्र पढै औरन कौं उपदेस देइ पर लोभ आय घेरै तव वुद्धि न चलै ॥ आगे विन के साथ चित्रग्रीव हू उतरौ अरु जव वे परेवे रू जाल में आये ॥ तव वानें जाल की जेवरी खेंची सव वझे तव जाके कहे उतरे हे ॥ वाकी निंदा करनि लागें ऐसें और हू ठौर कह्यो है कि सभा में सवतें आगै होय काम करै ज्यौ संवरै तौ सब कौं फल समान होय औं विगरै तौ दोष वाही कौं देइं जो आगे भऐ ॥ वाकी निंदा सुनि चित्रग्रीव वोल्यौ ॥ अरे ॥ या कौ दोष नाहीं जव आपदा आवतु है तव मित्र हू शत्रु होतु हैं जैसें वछरा के वांधिवे कौं गाय की जांघही थांभ होतु है ॥ ॥ दोहा ॥ वधिक वध्यौ मृग कान तें रुधिरौ दियौ वताय ॥ अति हित अन

हित होतु है तुलसी दुरदिन पाय॥ ॥ यथा जोतिष आगम जान सब भूत भविष्य वर्त्तमान॥ होंनहार जब होतिहै उलटि जातु है ज्ञान॥ तातें वंधु सो जो अपत्त में काम आवै॥ औ भई वात कौ पछितायवौ कपूत कौ काम है यातें धीरज करि छुटनि कौ उपाय करौ कह्यौ है॥ कुंडलिया॥ वीती ताहि विसारिदे आगेकी सुधि ले॥ जो वनि आवै सहज में ताही में चित दे॥ ताही में चित दे वात जाई वनि आवै॥ दुरजन हंसै न कोइ चित्त में खेद न पावै॥ कहि गिरधर कविराय यहै करि मन परतीती॥ आगे कौं सुख होय समझ वीती सो वीती॥ ॥

पुनि कह्यौ है कि आपदा में धीरज संपदा में विनय सभामें वचन चतुरई संग्राम में पराक्रम जसमें रुचि पढ़िवे में विसन ये महत पुरुषन के सुभाव हैं अरु पुरुष कौं छः दोष सदा छोरेवा हिये॥ निद्रा अधीरता भय क्रोध आलस्य सोग॥ इतनी कहि पुनि चित्रग्रीव वोल्यौ अव सव एक मति होय वल करौ या जाल कौं लै उड़ौ ऐसौ कह्यौ है॥ थोरेऊ मिलि एकौ करै तौ वड़ौ काम सिद्ध होय॥ जैसें घास मिलाय जेवरी वांटै तासौं हाथी वांध्यौ जाय॥ यह सुनि सव वल करि जाल लै उड़े॥ अरु व्याधीनें दूरगये देखे॥ तव मनमें कसो अव हीं सब एक मति हैं॥ उतरि है तव देख लैउंगौ॥ जव जाल धरती में न गिर्‌यौ तव वधिक निरास होय वैठ्यौ॥ तहां पंखेरू चित्रग्रीवसों कहनि लागे॥ अहो राजा॥ व्याधी तौ हमारे मांस की आस छोरि वैठ्यौ पर अव जाल सौं कैसे कढ़ें॥ चित्रग्रीव कही अरे सुनौं यासंसार में माता पिता अरु मित्र ये तीनौं सुभाव हीतें हित करतु हैं॥ तातें एक हमारौ मित्र हिरन्यक नाम मूसा विचित्र वन में गंडकी नदी के तीर रहतु है तहां चलौ तौ वह हमारे वंधन काटि हैं॥ ऐसे विचारि ईंदुर के द्वार कौं चले॥ अरु व्हां हिरन्यक हू आपनें द्वारपर वैठ्यौ है॥ सो पंखेवानि कौं आवतु देखि विल में पैठि छिप हू रह्यौ॥ तव चित्रग्रीव कही मित्र॥ वाहर आवौ मित्र कौ वोल पछानि वाहर आ

य बोल्यौ ॥ मेरे आज बड़े भाग जो मित्र चित्रग्रीव नें मोपै कृपा करि आय
दरसन दियो॥ अरु जाल में परवेरून की देखि कह्यौ मित्र यह कहा है॥
उन कही वंधु॥ यह पूर्व जन्म कौ पाप है॥ जाके भाग में जैसा लिख्यौ है
ताकों तैसौ फल मिलतु हैं॥ अरु रोग शोग वंधन औ दुख आपने किये
कर्म को फल है कह्यो है ॥ कवित्त॥ होत उदोत प्रभाकर के दिस पच्छिम
तौ कहु धो खौ नहीं है॥ फूलै सरोज पहारनि माहिं औ मेरु चलै चलै क
व ही है पावक सीतल होत समे इक मोतियराम विचारि कही है॥ अंक
मिटै न लिखें विधि के यह वेद पुराननि माहिं सही है॥ ॥ यह सुनि मूसा
चित्रग्रीव के बंधन काटनि लाग्यौ॥ तब चित्रग्रीव कपोतराज बोल्यौ हि
त॥ पहिलै मेरे संघातीन के फंद काटौ॥ तापाछें मेरे काटियौ ईंदुर कही
प्रीतम॥ ये बंधन कठिन मेरे दांत कोमल॥ तातें पहिलें तेरे बंधन काटि॥
तापाछें कटैंगे तो और के काटिहौं॥ चित्रग्रीव कही मित्र यह नायक कौ
कर्म नाहीं॥ जो आपने साथीन कौ वंधाय आप छूटै यासों पहिलै ये छूटि
लैंय॥ तौ हमारो छूटनौ वनें· पुनि मूसा बोल्यौ भाई॥ आपनी छोरि पराई बा
त कहनी यह नीति नाहीं॥ कह्यो है कि॥ दुख पाइके धन राखिये धन देस्त्री
की रक्षा कीजे॥ अरु धन स्त्री जाय ता जानि दीजे पर आपन पो राखिये क्यौं
कि धर्म अर्थ काम मोक्ष ये चार पदार्थ प्रान के राखे रहैं अरु गये जांय ॥ ब
हुरि चित्रग्रीव कहे मित्र॥ नीति तो एसें ही है पै पंडित होय सो सरनागत व
त्सल चाहिये कह्यौ है॥ पराये हेतु धन प्राण दीजे॥ क्यौं कि एक दिन तो शरीर
का नाश होय तातें और के निमित्त आवै तौ यासौं कहा भलौ है॥ यातें तू मेरे
अनित्य शरीर राखिवे कौ जतन छांडि अरु नित्य अविनासी जो जस ताके रा
खिवे कौ उपाय कर कह्यौ है॥ अनित्य देहतें नित्य जस पाइये॥ अरु मलीन
तें निर्मल वस्तु॥ तातें शरीर अरु जस में बडौ अंतर है॥ यह सुनि हिरन्यक सं
तोष करि बोल्यौ हित॥ तोहि इन सेवकन के सनेह तें त्रिलोकी कौ राज चूझि
यै यह कह उन सवही के वंधन काटे अरु कहीं वंधु॥ तुम आपनी बुद्धि की

दोषतें वंधे ॥ परअव मनमें दुख जिन करौ ॥ कह्यो है कि ॥पंछी एक जोजन तें भूमि पर्यो अन्न देखै पर जाल न देखै ॥ तातें तिहारी मति कौऊ दोषना हीं क्यों कि चंद्रसूर्यहू ग्रह पीडा पावतु हैं अरु गज भुजंगहू वंधनमें परतु हैं पंडित निर्धन होतु हैं अरु सुमें पाय पशु पंछी नभचर जलचर हू परवस होय दुखपावतु हैं ॥ जो भावी में होय सो विना भये नाहीं रहतु॥ ऐसे हिरण्यकने चित्रग्रीव कौं समझाय मनोहर वचन सुनाय ॥खवाय प्याय कुटुम्ब समेत विदा कियो ॥ अरु आप हू बिल में गयो ॥ तव लघुपतनक काग जो प्रात ही आधी कों देखि भाग्यो हो ॥ वाने ये समाचार पाय ॥ अपने मन माहिं कही ॥ कि संसारमें मित्राई वडौ पदार्थ है देखौ मित्र कौं ठौर काम आयौ ॥ यह विचारि रूखतें उडि मूषक के वार जाय बोल्यो ॥ अहो हिरन्यक तुम को मेरो प्रनाम है ॥ अरु तुम्हैं वडो जानि मित्राई करनि आयौ हों ॥ यह सुनि हिरन्यक बोल्यो॥ अरे तू को है ॥ इन कही हौं लघुपतनक नाम काग हौं ॥ यह सुनि हिरन्मक हंसिकर बोल्या ॥ मोसों तो सों कैसी मित्राई ॥ अरे शत्रु सों मित्राई करनौं विपत्त को मूल है ॥ अरु हम तिहारे भस तुम हमारे खानहारे ॥ यातें जहां मित्राई वूझिये तहां करौ ॥ अनमिल संग न होय अरु जो होय तो वैसें होय जैसे स्यारनें वंधायो हिरन कौं ॥ अरु छुडायो कागनें ॥ काग वोल्यो यह कैसी कथा है॥ तहां मूसा कहतु है ॥

मगध देसमें चंपक नाम वन ॥ वहां अनेक दिनते एक चंपा के रूख पर सुवुद्धि नाम काग अरु वाकै तरै चित्रांगद नाम हिरन रहै ॥ उन दोऊनने अति प्रीति ही तहां हिरकौ एक दिन काहू स्यारनें हृष्टपुष्ट देखि आपनें मनमें विचार्यो कि या सों प्रीति करौं तो याको मांस खै वे कौं मिलै यह विचारि हिरन के पास आय वोल्यो मित्र तुम कुशल तें हो मृग कही भाई तू को है पुनि हरखे तें उन कही· हौ क्षुद्रवुद्धि नाम स्यार हौं ॥ या वनमें मित्र करि हीन निरबंधु अकेलो बसतु हौं ॥ आज तिहारौ दरसन पायौ मेरे जीमें जी आयौ ॥ अब तिहारे पायन तरि रहि हौं ऐसें वातन लगाम वा

के संग लाग्यौ सांझ भई तब कुरंग आपनें आश्रम कौं चल्यौ अरु ऊ साथ लै लियौ ॥ निदान चलतु चलतु वहां आये जहां मृग कौ मित्र काग हो स्यार कौ देखि काग बोल्यौ मित्र यह दूसरौ तिहारे साथ को है मृग कही यह क्षुद्र बुद्धि नाम स्यार है॥ औ मोतें मित्राई कियौ चाहतु है काग कही हि तू॥ वेग परदेसी अनजानते सों प्रीति न कीजियै कह्यौ है कि॥ जाकौ सील सुभाव आश्रम नजानियै तासौं मित्रता न करियै अरु नीति तौ यौं है कि वाकौ आपनें घर में बास हू न दीजै॥ नजानिय कसौ होय॥ जैसें अनजानें बिलाव कौं वास दै॥ दीन गीध पंछी मार्यौ गयौ॥ मृग बोल्यौ यह कैसी कथा है॥ तहां काग कहतु है॥ ॥ ॥ ॥

गंगाजू के तीर गृध्रकूट नाम परवत तहां येक पाकर कौ रूख वाके खोडरे में एक अति बूढौ गीध रहै तहां और पंछी आपनौं चुनि ल्यावें ता में तें थोरौ थोरौ गीध कौं हू बांटि दें॥ जामें वह जीवै॥ अरु जब वे पंछी चुंगवे कौ जांय तब गीध उनके छौंनानि की रखवारी कियौ करै॥ एक दिन दीर्घकरन नाम बिलाव पंछीन के सिसु खैवे कौं वा रूख पर चढ्यौ वाकौं देखि वे छौंना पुकारे तब गीध ने उनकी पुकार सुनि खोंडरे तें मूंड निकासि कह्यौ अरे यह को है॥ तब बिलाव गीध कौं देखि डरि आपनें मनमाहि कहनि लाग्यौ॥ कि जौ यहां ते भागिहौं तौ यह पाछैं दौरि मारिगौ॥ यासौं या के पास गये ही बनें यह विचारि सरल सुभाव होय गीध के पास आय दंडवत करि बोल्यौ तुम बडे हौ॥ गीध कही तू को है॥ अरु इत कौं आयौ है॥ दूर रहि नातौ अबही मारतु हौं॥ बिलाव कही स्वामी प्रथम मेरे आवन कौ कारन सुनि लेउ तापाछै जो मन मानें सो करियैगौ॥ मैंनें ब्रह्मचर्य ब्रत पालन कियौ है अरु चांद्रायन ब्रत कौ नेम है मेरौ॥ अबहीं गंगाजू स्नान किये आवतु॥ गैल में पंछीन के मुख तें तिहारी बडाई सुनी कि तुम ज्ञान चरचा में निपुन हौ तातें तुम सों धर्म उपदेस सुनि वे कौं आयौ हौं॥ अरु विचार ऐसौ है कि जो कोऊ दिन ऐसे साधकी संगति में रहौं

तौ पवित्र होउं ॥ कह्यौहै ॥ दोहा ॥ हियतें मिटै असाधपन लहै अगाध विवेक ॥ लालजु संगति साधकी हरै उपाध अनेक ॥ ॥ मेरे तौ यह मनोरथहै ॥ यापर मारयौ चाहो तौ मारो ॥ कह्यौहै ॥ गृहस्तकौं ऐसो चाहियै कि वैरीकौ वैरीहू आपनें घर आवै तौ वाकी हू पूजा करै ॥ जैसें वृक्ष कौं कोऊ काटनि आवै तौ वह वाहू पर छांह करै यातें वृद्धके घरवालक हू पाहुनौं आवै ॥ तौ सेवाजोग है ॥ अवस्थाकौ विचार कछु नाहीं पाहुनौं घर आवै ताकौं सवतें वड़ो करि मानियै ॥ यथा योग्य पूजा कीजै ॥ जो और कछु घरमें न होय तौ मीठे वचन तृन कौ विछौंना सीतल जल दै ॥ अतिहित के मिल वैठै ॥ अरु इतनौं हू न करै तौ जाके घरतें अतिथि निरास जाय वाको धर्म लै जाय ॥ आपनो पाप दै जाय यातें साधुनि निर्गुन हू पर दया करतु हैं जैसे चंद्रमा सव ठांव प्रकाश करै ॥ गीधवोलौ विलाव कौं ॥ मासतें अधिक रुच होतु है ॥ अरु यहां पंछीन के सिसु रहतु हैं तातें ॥ तौसौं हौं कछु कहि नही सकतु पर जो तू यहां रहै तौ इन छौंननितें कपट जिन कीजो ॥ यह सुनि विलाव नें भूमिमें हाथ छुवाय कान हाथ धरि कह्यौ स्वामी ॥ मोतें ऐसी कवहू न होय धर्मशास्त्र पढि सुनि मैं वैराग दसा गही है ॥ अरु जीव हिंसा वडो अधर्म है सव शास्त्रनि में वर्जित है ॥ कह्यो है ॥ साधकौं ऐसो चाहियै कि परायौ अपराध सहै सवकौं पालै ॥ सो स्वर्ग लोक पावै ॥ यामें संदेह नाहि ॥ क्यौंकि धर्म सदा सहाय होय अरु जाकौ मास खाइयै सो तौ जीव ही सौं जाय खानिवारेकौं छिन एक जीभ ही कौ स्वाद ॥ तातें आपनौं सो जीव सव काहूकौ जानियै ॥ कह्यौहै जो वनके कंद मूल फल फूल पात सौं पेट भरै तौ जीव हिंसा काहे कौं करियै ॥ ऐसें कहि प्रतीति बढाय विलाव गीध के समीप रह्यौ ॥ कोऊ समय पाय द्वै चार पंछीन के छौंनानि कौं पकरि ल्यायौ जव वे सिसु पुकारे तव गीध वोल्यौ आहो दीरघकरन ॥ इन वालकनि कौं तू काहे सौं ल्यायौ है ॥ वानें कही स्वामी मेरे वालक मोतें विछुरे हैं ताके हेतु इनतें

दिन कटी करतु हों ॥ ऐसें कहि जरद्आपनों मनोरथ साध्यो तरद बिलाव हां तें परायो ॥ अरु पंछियन आय अपनें बालकनि के हाड़ चाम गीध के खोड़र समीप परे पाये ॥ तब उननि जान्यो कि हमारे छौंना इन पापी विस्वासघाती चंडारिनें खाये ऐसें समझि सबनि मिलि ॥ गीध कौं जीव सों मार्यौ ॥ तातें हौं कहतु हों कि बिन जानें मित्राई कबहू न करिये ॥ ❀ ॥ ॥ यह बात्त सुनि स्यार क्रोध करि बोल्यौ ॥ मित्त जादिन तुम हिरन सों मित्राई करी ॥ तादिन यह तिहारौ कुल सुभाव कहा जानतु हो जो मिल बैठ्यौ ॥ यातें आपनौं परायौ कहनौ मूरखनि कौ काम है ॥ पंडित कौं तौ सब आपनें ही हैं ॥ जैसें मृग हमारौ मित्र ॥ तैसें तमहू अरु भलौ बुरौ तौ व्यवहार हीतें जान्यौं जातु हैं ॥ हिरन कही मित्र विवाद कौं करतु हा ॥ जितेक मिल रहें तितेक ही भले काग कही भाई तुम जानो

इतेक में सब आपनें आपनें उदर की चिंता कौं गये अरु सांझ कौं आय इकठे भये ॥ याही भांति वहां रहनि लागे ॥ कितेक दिन पाछे स्यार नें हिरन कौ एकेलौ पाय कह्यौ मित्र ॥ हौं तिहारे लये आछौ हर्यौ कोमल जव कौ खेत देखि आयौ हौं ॥ जौ मेरी गैल चलौ तौ दिखाऊं ॥ या रीति कपट करि वाकौं कुमारग में ल्यायौ अरु बहू कुविसन कौ मार्यौ लोभ करि वाके संगही उठि धायौ ॥ ऐसें नित्त वाके संग जाय जाय खाय खाय आवे ॥ एक दिन वा खेत के रखवारे नें हिरन कौं आवतु देखि फांद रोप्यौ ॥ ज्यौं ही यह चरवे कौं पैठ्यौ त्यौंही बंध्यौ तब मन में कहनि लाग्यौ कि मित्र बिन मोहि या संकट तें को निकारि है ॥ अरु इत स्यार वा कौं फंस्यौ देखि नाचि नाचि मन में कहनि लाग्यौ कि मेरे कपट कौ फल आज मिलेगौ ॥ जब रखवारौ याकौ मास भक्ष करैगौ तौ हाड चाम में जो मास लपट्यौ रहैगौ सो हौं खाऊंगौ यह तौ या विचार में नाचि कूदि रह्यौ हो अरु मृग नें जान्यौं यह मेरौ ई दुख देखि व्याकुल हो हाथ पांव पटकतु है पर यह न जान्यौं कि दान कौ लोभी मढुवा की भांति कला करतु है ॥ आगें स्या

रकी दसा देखि मृग कही ॥ भाई मेरे निमित्त तूऐतौ देख क्यौं करतु है ॥ कह्यौ है कि आपदा में काम आवै सो हितू रनमें जूझै सो सूर दरिद्र में स्त्री की परिक्षा लीजियै ॥ दुख में बंधु जांचियै ऐसें मृगनें कह्यौ ॥ तद स्यार नें निकट जाय देख्यौ कि यह तौ कठिन बंधन में पर्यौ है तातें मेरौ मनोरथ शीघ्र सिद्धि होयगौ ऐसें विचारि बोल्यौ भाई यह जाल तौ तांत कौ है अरु मेरैं आदित कौ उपास है सो दांत करि कैसें काटौं जौ और व्रत होय तौ कछु चिंता नाहीं ॥ पर रवि के व्रत कौ तौ यह विचार है ॥ जो भंग होय तौ सब पाछली काष्ठा निरफल जाय यातें आज तौं यह बात है ॥ काल सकारे जो मोतें बनेगी सो करौंगो ॥ ऐसे कहि ह्वांते उसरि परै होय बैठ्यौ इतेक में निसा वितीत भई अरु ह्वां सुबुद्धि नाम काग जाग्यौ सो विचाय करि कहनि लाग्यौ ॥ कि रात्रि मित्र मेरौ नाहीं आयौ अब कहूं खोजौं यह कहि ह्वांतें चल्यौ ॥ आगें जाय देखै तौ जाल में वझ रह्यौ है काग कही मित्र यह कहा है उन कही ॥ हितू मैं तेरौ कह्यौ न मान्यौ ताही का यह फल है ॥ पुनि काग कही वह तेरौ नयौ मित्र कहां है ॥ इन कही वह मेरे मास कौ लोभी ह्वां ही होयगौ ॥ वहुरि काग कही भाई ॥ साधजन आपनौ सो सुभाव सब काहू कौ जानें ॥ अरु दुष्ट कौ जातीय सुभाव है जो वातें करै भलाई तातें वह करै बुराई ॥ कह्यौ है दुष्ट विन वुलायें आय पहिलै पाय परै पाछै काना वाती करै ॥ हित की रीति सों प्रीति जनाय कपट करि कुमारग बतावै ॥ अवसर पाय घात चलावै जैसें माछर पीठ पाछै आय कान सों लागि समैं पाय डंक मारै ॥ तैसें ही दुष्ट मनुष तातें हौं कहतु हौं ॥ कि वैरी कौ विस्वास कबहू न कीजे ऐसे हूं कह्यौ है ॥ ॥ कुंडलिया ॥ वैरी वंदुआ वानिया ज्वारी चोर लबार व्यभिचारी रोगी रिनी नगर नार कौ यार भूल परतीत न कीजे ॥ सौ सौ सौंहैं खाय चित्त एकौ नहिं दीजै कहि गिरधर कविराय धरै आवै अन घेरी हित की कहै वनाय जानियै पूरौ वैरी ॥ ॥ इतेक वातें सुनि मृग लांबी

सांस लै वोल्यौ ॥ जे झूठी वातें कहि औरकौ वुरौ करतु हैं तिन कौ भारए थ्वी कैसें सहति है ॥ ऐसें वतराय रहे हैं इतेक में रखवारौ आवतु देख्यौ तव वायस नें कुरंग तें कही ॥ अवतू आंखि फिराय मृतक होय रहि ॥ जव मैं पुकारौं तव उठि भगि ह्यौ यह सुनि उनि वैसें ही करी ॥ रखवारैः आय हिरकौं देखि वोल्यौ यह तौ आप ही मररह्यौ है याहि कहा मारौं आगे वाहि मर्यौ जान वंधन खोल कै चाहै कि वाहि उठावै ॥ सौं ही काग वोल्यौ अरु हिरन उठि भाग्यौ ॥ तव रखवारेनें खिसियाय कै लैठिया घाली सो स्यार के मूंडमें लागी ॥ अरु लागत प्रमान ही मर्यौ ॥ ऐसें औरहू ठौर कह्यौ है कि ॥ तीन दिन तीन रात तीन पक्ष तीन मास तीन वरष में पुन्य अरु पाप कौ फल मिल रहतु है ॥ ॥ ॥ ॥ इतनी कथा सुनि लघुपतनक कागनें हिरन्यक चूहा सों कही ॥ मित्र जो कदाचित मैं तुझैं खाउं तौ पेट हू न भरै ॥ यातें तुम सेमित्र धरमात्मा साधु कौ वुरौ काहे करि हौं सौं कि चित्रग्रीव सहित सव पंछी जव जाल में परे तव तुमनि सहायता करि उनके जीव वचाये ॥ कह्यौ है कि आपने कार्य सिद्ध करिवे कौं सज्जन तें मित्राई करियै ॥ जौ एक दिन काम आवै ॥ तौंतें हौं तिहारौ पठंगौ लियौ चाहतु हौं ॥ कि कवहू मेरे दुख में सहायता करि हो ॥ या कारन आयौ हौं ॥ तुम औरमत जानौ पुनि मूषक वोल्यौ कि चंचलसों मित्रता कवहू न कीजै ॥ दोहा ॥ कागरु भैंसा का पुरुष आन भेड मंजार ॥ इन पांचन के विस्वासतें आपुनि जैयै हार ॥ यातें इन सवनि कौं विस्वास कवहू न करियै ॥ वैरी मिल्यौ रहै ताके हित पर न भूलियै ॥ कह्यौ है ॥ कि कैसो हू तातौ पानी होय पर अग्नि कौं विन वुझाये न रहै ॥ निवल सवल न होय ॥ अनमिल वात कवहू न मिलै जैसें पानी में गाडी अरु भूमि पर नाव न चलै पुनि ऐसें हू कह्यौ है कि ॥ स्त्रीतें मर्म की वात न कहियै ॥ जो कहियौ तौ विरोध न करियै करियौ तौ जीवन की आस न राखियै ॥ कोउ ऐसें हू कहतु है ॥ कुंडलिया ॥ सांई ये न विरुद्धियै कवि पंडित गुरु यार वेटा वनिता

पौरिया यज्ञकरावन हार॥ यज्ञकरावन हार राज मंत्री जो होई विप्र परो सी बैद आप कौं तपे रसोई॥ कहि गिरधर कविराय यहै कैसी समुझाई॥ इनते रहतें तरह दिये बनि आवै सांई॥ बहुरि काग कही प्रीतम॥ जो तुम कह्यौ सो सब मैं सुन्यौं पर मेरौ यह विचार नाही जो तुमतें द्रोह करौं अरु जौ तुम मो सों प्रीति न करिहौ॥ तौ तिहारे द्वार पर उपास करि करि प्रान तजौंगो॥ मोहि राम लक्ष्मण जू की आन है॥ क्यौं कि असाध की मित्राई थोरेई दिन में टूटै॥ जैसे माटी कौ पात्र फूटि कै न जुरै॥ अरु साध की प्रीति ऐसें है जैसें सुवरन कौ पात्र वेग न फूटै॥ अरु जो फूटै तो फेरि संधै औ किते क सज्जन पुरुष नारियर की भांति रहतु हैं॥ कि ऊपर तें तौ कठिन॥ अरु भीतर कोमल पुनि दुष्टजनहू की वेर की सी रहन है कि ऊपर कोमल अरु भीतर कठोर॥ तातें सज्जन अरु दुष्ट जन सुभाव ही तें जान्यौ जातु है कछु रहन तें नाहीं अरु पवित्र दाता सूर संकोची स्नेही निर्लोभी सत्य वक्ता साधु होतु हैं असाधन हीं म॥ यासों तुमही कहो॥ कि साध जन पाय को न प्रीति करै॥ ॥ ॥ ॥ वा रूप की बातें सुनि॥ हिरन्यक मूसा बिलतें बाहर निकस बोल्यौ॥ कि तेरे वचन सुनि मैं अति सुख पायौ॥ जैसें कोऊ लूअ कौ मार्‍यौ स्नान करि॥ चंदन सब अंग पर चढाय शीतल होतु हैं॥ तैसें मेरौ हियो ठंढौ भयौ॥ कह्यौ है॥ छः प्रकार तें प्रीति बढति है॥ लेबौ देबौ गुह्य कहिबौ सुनिबौ खैबौ खवायबौ॥ अरु ये स्नेह के दूषन हैं सदा मांगबौ अप्रिय वचन कहिबौ मिथ्या भाषबौ चंचलता अरु जुआ सो तौ मैं एकहू नाही॥ यासों हौं तेरौ सुविचार देखि प्रसन्न भयौ॥ आज तें तू मेरो मित्र है॥ इतनी बात कहि काग कौं द्वार पर बैठाय मूसा बिल में गयौ॥ अरु व्हां तें कछु खैबे की सामग्री लाय॥ खवाय आपहू वाके पास बैठ्यौ॥ ऐसें वे दोऊ व्हां रहनि लागे॥

एक दिन काग कही भाई मूसा॥ या ठौर तौ अति कष्ट सों अहार जुरतु हैं॥ यासों वहां चलौ जहां बहुत चुगौ॥ सुख तें खैवे को मिलै॥ पुनि मू

षक बोल्यौ ॥ मित्र कह्यौ है कि जो सयानौ होय सो आगलौ पाय धरि पा
छलौ पग उठावै ॥ तातें प्रथम ठौर विचारौ ॥ ता पाछें ह्यांतें चलौ ॥ वायस
कही बंधु मैं नीकौ ठांव विचारी है ॥ कि दंडकारन्य वनमें कर्पूर नाम
सरोवर तहां मंथरक नाम कछुवा मेरौ मित्र है ॥ सो वडौ पंडित धर्मा
त्मा है कह्यौ है ॥ औरन के धर्म उपदेस देन कौं सव पंडित है ॥ पर आ
प धर्म मारग में दृढ राखें ते विरले जन होतु है ॥ तातें मित्र वह हम कौं
भली भांति राखि रक्षा करि है कह्यौ है सुनौं ॥ जा देसमें आपनी वडाई
मित्र विद्या की प्राप्ति ॥ सुसंग गुनविचार अरु तीरथ हू न होय ॥ तौ व
हां वसिवौ उचित नाहीं ॥ मूषक कही हित ॥ व्हां मो कौं हू साथ लै चलौ
ऐसें वतराय दोउ कछुवा पै गये ॥ इन्हें देखि कच्छप वोल्यौ मेरौ मित्र ल
घुपतनक आयौ इतनौं कहि आगे वढि शिष्टाचार करि आदरसों पाय
पखलाय आसन पर वैठाय पूजा करनि लाग्यौ तव कौवा वोल्यौ ॥ मित्र या
की पूजा विशेष करि करौ ॥ यह वडौ धर्मात्मा हिरन्यक नाम मूसा सव
चूहन कौ राजा है ॥ याके गुनकी स्तुति करिवे कौं मेरौ मुख नाहीं ॥ जो स
हस्र मुखतें शेषनाग जू कहैं ॥ तौ कहि सकैं इतनी कहि चित्रग्रीव की
सव कथा सुनाई ॥ तव मंथरक ने वा की पूजा करि पूछ्यौ ॥ आपु कौ
वास कहां अरु ह्यां आवनौं कैसें भयौ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ तव मूसा
कहनि लाग्यौ चंपानगरी में संन्यासियन कौ मठ तामें चूराकरन नाम
सन्यासी रहै ॥ सो जो भिक्षा मांगि अन्न लावै ॥ वह ऊंचे आरा में राखै
वा अनाज कौं हौं कूदि कूदि खाउं कितेक दिन पाछें वाकौ मित्र वीना क
रन नाम सन्यासी तहां आयौ ॥ चूराकरन वासौं वात करै ॥ अरु लकरी
धरती में खरकावै ॥ तव वीनाकरन कही तू जो मेरी वात नीकै चित्त दे ना
हीं सुनतु सु तेरौ मन कहां है ॥ पुनि उनि कही गुरुभाई हौं तौ तेरी वात
हियौ दै सुनतु हौं ॥ पर यह निगुरौ मूसा मेरी भिक्षा कौ अन्न सव खातु है
मोहि दुख देतु है याहि लालच लाग्यौ भाई ॥ या कौ कछु उपाय करौ ॥ वीनाक

रन बोल्यौ याको कछु कारन है॥ जौं एक तरुन स्त्रीनें बूढे पुरुष कौ आलिंगन चुम्बन करि॥ जार कौं छिपायौ॥ सौं यह मूसा बिन कारन नाही कूदतु चूरा करन कही यह कैसी कथा है पुनि बीना करन कहनि लाग्यौ॥ ॥

गौड़ देसमें कौशांबी नाम नगरी तामें चंदन दास एक बनियां उन बृद्ध अवस्था में धन के मदसौं लीलावती नाम और महाजन की बेटी ब्याही॥ सो काम के अधिकाई तें थोरेई दिननि में जोबनवती भई जब वह भरतार वाके सुख कों न पूजै॥ तब वाहि अन खावनौ लागै॥ जैसे बिरहिनि कौं चंद्र अरु घाम के तौं सेकौं सूरज न सुहाय॥ तैसें तरुन स्त्री कौं बूढौ स्वामी हू न भावै॥ क्यौं कि बृद्धकौं दर्पक हां॥ कह्यौ है जौं बालक कौ औषध न रुचै सौं वह हू वाहि नीकौ न लागै॥ पर बुढरा वातें अधिक प्रीति करै पुनि ऐसे हू कह्यौ है॥ न डोक रा भोग कर सकै न छांडि सकै॥ चाटतु चूमतु रहै॥ जैसें बिना दांत कौ कूकर हाड पाय न खाय न छांडै॥ जब वा की इच्छा पूरन न भई तब वह बनियां की बेटी लीलावती कुलकी मर्याद छांडि धर्म कौ भय नाखि लौक लाज तजि जोबन की अधिकाई सौं एक और बनियां के पुत्र नें बिभचार करनि लागी अरु कामातुर होय पिता के घर बसै था त्रा कौं जाय भरतार के आगें औरसौं बतराय॥ कह्यौ है॥ जो नारी पति के साक्षात और पुरुषसें बातें करैं सो निःसंदेह परकीया होय कहतु हैं इतनी भांतिसौं परकीया होति हैं॥ बाल होय जाकौ पति बृद्ध होय कुरूप होय बिदेस होय अशक्त होय पास न रहै हित न करै असंतान होय॥ नारी इतनी भांति बिभचारिनी होती हैं॥ अरु मद पीवै कुसंग मे बैठै॥ पति के औगुन औरसों भाषै॥ घर घर डोलै अति सोवै॥ नित तन मांजै सदा सिंगार करति रहै रात्र परधाम बसै॥ ये नारीन के दूषन हैं॥ अरु जिन के समान नाहीं ढिठाई नाहीं और पुरुष सों न बोलें॥ लाज बहुत ते स्त्री पवित्र जानियै कहतु हैं॥ नारी घृत समान॥ अरु पुरुष अग्नि सम तातें इनकौ संग भलौ नाहीं॥ पुनि कह्यौ है बाल अवस्था में पिता रक्षा करै॥ तरुनाई में पति रखवारी करै॥ बृद्ध

पन में पुत्र सावधानी तें राखे ॥ तौ स्त्री को धर्म रहै नातौ नष्ट होय ॥ ❧ ॥

आगे येक दिन वह लीलावती वनियां के पुत्र साथ आपनें घर में आनन्द करि रही ही ॥ यामें वाकौ पति वाहर तें आयौ ताहि आवतु देखि वेगिही खटिया तें उतरि सन्मुख धाय आलिंगन कियौ ॥ वाके देखिवे कौं तौ है आंख ही ॥ पर एक सौं दिसतु न हो अरु जासों दिसतु हो ॥ तापै चुंवन को मिस करि ॥ उनि मुख राख्यौ ॥ औ जार कौ वाहर निकारि दियौ ॥ कह्यौ है ॥ कि जो वृहस्पति तें विद्या पढि परउसात की ठांव वाहू की बुद्धि स्थिर न रहै ॥ अरु कछू न वनि आवे ॥ सो नारी छिन ही में उपाय करै ॥ आगे लीलावती कौ आलिंगन करति देखि ॥ एक कुठनीनें कारन विचारि ॥ वाहि डांट्यौ ॥ अरु कह्यौ ॥ ऐसौ काम फेर जिन कीजो ॥ तातें मूसा के कूदिवे कौ कारन में जान्यौ ॥ कि याके विल में माया है ॥ कौंकि धन विन वल नाहीं होतु कह्यौ है ॥ दोहा ॥ कनक कनक तें सौ गुनी मादक ता अधिकाय ॥ वह खाये वौरातु है यह पाये वौराय ॥ ❧ ॥ ॥ ऐसें कहि सन्यासि यन मिल कै मेरे विल तें सव धन काढि लियौ ॥ ता के दुख तें हौ वलहीन भयौ ॥ अरु मन में उत्साह हू नाहीं रह्यौ ॥ कौं कि देह में जो वल हर्ष होतु है सो माया तें ॥ अरु धन हीन तें कछु न वनें ॥ कह्यौ है ॥ धन हीन पुरुष संसार में मृतक समान है जव द्रव्य हीन भयौ ॥ तव निवलाई तें मोपै चल्यौ न जाय ॥ पुनि चूराकरन सन्यासी मोहि देखि वोल्यौ ॥ कि यह मूषक अव सीधौ भयौ जैसें ग्रीष्म रितु में नदी वलहीन होति है तैसौ व्है गयौ ॥ कहतु हैं द्रव्यहीन की मति स्थिर न रहै ॥ जापै धन सोई बुद्धिवान पंडित ज्ञानी दानी वली चतुर कुलीन गुनी है अरु पुत्र विन घर सून्य विद्या विन हृदै औ दरिद्री कौं संसार सूनौं लागतु है ॥ पुनि देखौ ॥ धन गये कैसौ हू सुरूप होय पर कुरूप व्है जातु है ॥ ऐसी वातें वा गुसांई की सुनी तव मैंनें आपनें मन माहि विचार्यौ ॥ कि अव ह्यां रहनौ जोग नाहीं ॥ कह्यौ है ॥ दोहा ॥ मंत्र मैथुन औषधी दान मान अपमान मर्म द्रव्य गृह छिद्र ।

ये प्रगटन लाल वखान ॥ जौ कहिये तौ मिथ्या आपनौं भरम गवैंये ॥ जव देवता असंतुष्ट होतु हैं ॥ तव जो उद्यम करै सो निरफल जाय ॥ अहं कारी कौं है वात ॥ जैसें धतूरा को फूल ॥ कै तौ भूमि पर्यौ सूखै ॥ कै महादेवके माथे चढै ॥ तातें भिक्षा उपाय करि जीवै जोग नाहीं कृपन तें मागिवौ ॥ औ मरवौ समान है ॥ कवित्त ॥ मान सनमानकी पयान होतु पहले ही यद्यपि निपट गुनी गिरहू तें गरुवौ ॥ कहै कवि देव वार वार जस उच्चर तु चुटकी देतु लागै कुढकी तें करुवौ ॥ अति ही अजान वाहु तऊ तन थोरे ही सम मन मांहि लसै जौ हिंडोरे कासौ मरुवौ ॥ तन हू तें तूल हू तें फैन हू तें फूल हू तें मेरे जान सव ही तें मांगवौ है हरुवौ ॥ ॥ ❀ ॥

पुनि चूराकरन तें वीनाकरन कहनि लाग्यौ ॥ कि पराधीन भोजन द्रव्य दै मैथुन ॥ विद्या करि हीन ॥ परदेस कौ वास ॥ काया रोगी ॥ पराये घर सोनौं ॥ ऐसे मनुष कौ जीवन मरन समान है ॥ कह्यौ है ॥ लोभ तें चित डुलै ॥ कष्ट पावै ॥ मरन होय ॥ लोक परलोक जाय ॥ जव वा गुसांई नें ऐसे वोल कहे तव मैंनें विचार्यौ ॥ कि हौं लोभी ॥ असंतोषी आतमद्रोही हौं ॥ तातें मेरी संपति गई ॥ अरु संतोषी की संपति कवहू न जाय जे संतोष करि अघाने हैं ॥ तिन कौं जैसो सुख है तैसो असंतोषी कौं नाहिं ॥ कह्यौ है ॥ जिन तृस्ना न राखिवी काहू की सेवा न करी अधीन वचन न भाषे ॥ विरह की पीर न सही ॥ अधीरता न की ॥ ऐसै पुरुषनि तें सो जोजन धन दूर रहतु हैं ॥ अरु संतोषी कौं हाथ की वस्तु कौ हू आदर नाहीं ॥ ऐसौ विचार कै हौं निरजन वन में आयौ ॥ तिहारौ आश्रम स्वर्ग समान पायौ ॥ कहतु हैं ॥ यह संसार विषय कौ रूख है ॥ यामें द्वै फल मीठे कहतु हैं ॥ एक तौ काव्यरस दूजौ साधकौ संग ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

इतेक वातें सुनि मंथरक कछुवा वोल्यौ मित्र ॥ धन में वडो दोष है एक तौ अनेक दुख पाय इकठ्ठो कीजे ॥ दूजे प्रानतें हू यत्न करि राखिये ऐसौ धन काहे कौ भलौ ॥ कह्यौ है ॥ जे आपनौं सुख छांडि ॥ पराये लयै द्रव्य

उपजाय राखैं ॥ ते ऐसें जैसें मोछिया मोछ वाहि मरैं अरु भोग औरही क
रैं ऐसें तौ सब धनवान ही कहावैं ॥ क्यौं कि दान भोग में तौ नाहि याते
दरिद्री औ धनी समान पर धनवान कौ एक और दोष ॥ कि वा हि
गये कौ सोंच सो निर्धन कौ नाहीं ॥ पुनि कह्यौ है ॥ चार वात संसार में आ
य मनुष तें हौंनी कठिन है ॥ प्रियवचन सहित दान गर्व बिन ज्ञान
क्षमा समेत सूरता त्याग लिये धन ॥ यातें धर्म कौ संचय करियै अति
लोभ न करियै जैसें एक स्यार अधिक लालच करि मार्यौ हिरन्य
क बोल्यौ यह कैसी कथा है कछुवा कहनि लाग्यौ ॥ ॥ ॥

कल्यान कटक नगर में भैरव नाम व्याधी सो एक दिन विंध्याच
ल के वन में गयौ हो ॥ सो ह्वां तें एक मृग मारि कांधे लिये आवतु हो ॥ गै
ल में एक सूकर आवतु देखि यानें लोभ करि चापे बान घाल्यौ सो सरखौ
वाकें लाग्यौ पर मरतु मरतु वानें याहू कौं आय मार्यौ इहिं बीच एक दी
रघराव नाम स्यार क्षुधित ह्वै आय कढ्यौ अरु इन तीननि कौं ह्वां परे दे
खि विन आपनें जी मांहिं विचार्यौ कि अहार बहुत पायौ याहि अनेक
दिन लौं खाऊंगो ॥ अरु आपनी काया पुष्ट करौंगो ॥ यह विचारि वह स्यार
वधिक के पास जाय ॥ ज्यौ पहिले धनुष की जेह खानि लाग्यौ ॥ त्यौं हीं जेह
टूटि छोर छूटि वाके कपाल में लाग्यौ अरु ततकाल प्रान देह तें निकरि
भाग्यौ जंबुक जीव सौं गयौ ॥ मांस सब ह्वां ही धर्यौ रह्यौ तातें हौं कहतु
हौं कि अति लोभ करि संचय न करियै ॥ अरु जो धन पाय न खाय न देय ॥ ता
को द्रव्य जौ लौं जीवे तौ लौं रहै मेरे पर वाके धन जन के और ही गाहक होतु
हैं ॥ जीवतु भर देखि मनरंजन करै मरें पै वाके काम कछु न आवे ॥ यातें
खाइयै लुटाइयै सोई आपनौं ॥ क्यौं कि यामें स्वारथ परमारथ दोऊ रहतु
हैं इतनी वात कहि पुनि कछुप नें मूसों कह्यौ कि अब तुम गये द्रव्य कौ सो
च जिन करौ ॥ क्यौं कि जो वस्तु पायवे जोग न होय ताकौ यत्न पंडित चतुर
नाहीं करतु हैं ॥ तातें मित्र तुम चिन्ता मत करौ ॥ कह्यौ है कि विद्या पढे तें सब

पंडित नाहीं होतु हैं ॥ जे क्रियावान ते ई पंडित हैं जैसें रोगी कौ रोग औषध कौ नाम लिये न जाय खाय तब ही जाय लाय तब ही जाय ॥ तैसें बिन उद्यम विचार किये धन हू न आवै आंधरे के हाथ दीपक कहा करै ॥ ॥ ॥ ॥

अपनी आंख की ज्योति बिन प्रकाश न करै ॥ पुनि कह्यो है ॥ दांत केस नख नर स्थान छूटे तें सोभा न पावै ॥ अरु सिंह सूर गज पान पंडित गुणवान ॥ औ जोगी ये जहां जहां संचरैं तहां तहां आदर बढावैं ॥ कहतु हैं जैसे कुंवा में दादुर सरोवर में कंवल आप ही तें आवै ॥ तैसें उद्यम किये लक्ष्मी हू आवै ॥ दुख सुख चक्र की भांति फिरतु हैं अरु जे पुरुष माहसी सूर ज्ञानी उद्यमी हैं तिन कौं दुख नाहीं आपत ॥ कह्यौ है कि कैसो हू पंडित गुनी तपसी सूर बंधु धनवंत होय पर लोभ किये अनादर ही पावैं ॥ गुनवान स्वभाव ही तें बडौ ॥ जैसें कंचन कौ आभूषन ॥ जौ कूकर के गरै बांधें तौ हू सुहावनौं लागै ॥ ताते हौं कहतु हौं कि धन कौ सोच न करिये क्यौं कि जब माता के गर्भ में विधाता बास देतु हैं ताके प्रथम ही दूध स्तन में प्रगट करतु है औ पाछे जन्म होतु हैं ॥ ऐसो विचारिये ॥ दोहा ॥ जिन तोते हरये किये स्याम काग हंस सेत ॥ मोर विचित्र जु रंग किये मो चिंता करि देत ॥ ॥

अरु सुनौं धन में ऐते दुख हैं उपजतु राखतु जातु ॥ औ बहुत बाढे हू धन सुख कबहू न देय ॥ यातें ज्यौं उपजै त्यौं दीजै ॥ खाइये तौ ही भलौ नातौ जैसें मास कौं ऊपर राखे पंछी खाय भूमि में स्यार कूकर पानी माह मच्छ कच्छ ॥ माटी मांहि कीरा कीरी खांय ॥ तैसें धन कौं चारभय राजभय अग्नि भय चोरभय दुष्टभय अरु ता हू में यह बडौ दोष कि माया के लोभ तें सेवक होय अधीनता करैं परभावी का हू सौं न टरै या सौं प्रीतम तुम हमारौ साथ अब जिन छांडौ ॥ जन्म भर ह्यां ही रहौ ॥ कह्यौ है संतोष करि रहनौं दान दैनौं क्रोध न करनौं ॥ ये साध के लक्षन है ॥ असाध तें नहीं य ॥ इतेक सुनि लघुपतनक काग बोल्यौ ॥ अहो मित्र मंथरक ॥ तुम कौं धन्य है अरु आश्रम के जोग महंत हौ आप दाम उद्धार देतु हौ ऐसें जैसें दह

दलमें परे हाथी कौं हाथी ही काढै अरु संसारमें तेई नरस्तुति करवे जोग
हैं जे पराये दुखमें सहायता करैं ॥ अरु जिनके द्वारतें सरनागत निरास न
जाय जाचक विमुख न फिरै ॥ इतनी कहि वे तीनौं काठांव सुखतें खातु
पीवतु क्रीडा करतु आनंदसों रहनि लागे ॥ ॥एक दिन तहां चित्रांगद
नाम मृग भोरही व्याधी कौ डरायौ आयौ ॥ ताहि आवतु देखि मंथरक
जल मांहि पैठ्यौ मूसा विलमें धस्यौ ॥ काग रूख पर उडि वैठ्यौ ॥ अक
वानें दूरलौं दृष्ट करि देख्यौ कि याके पाछे और तौ कोऊ नाहिं यह अकेलौ
ही आवतु है तव काग वोल्यौ भाई कुछ भय नाहिं सब निकरि वैठौ यह
सुनि वेऊ निकसि आये औ तीनौं मिल वैठे हिरन इनके पास आयौ
तब मंथरक वोल्या मित्र ॥ तुम कुशलक्षेमतें नीकें आये ॥ कह्यौ है उत्तम
पुरुषनि कौ यह धर्म है ॥ घर आये कौ पहिलें तौ कुशलात पूछे ॥ पुनि
आदर करि वैठावै ॥ फेरि अति सनमान करि भोजन कौं पूछे ॥ यह उत्तम
जन कौ व्यौहार है ॥ इतनौं पूछि पुनि कह्यौ ॥ अहो मित्र इत आवन
तिहारौ कैंसें भयौ ॥ मृग कही हौं व्याधी कौ डरायौ आयौ हौं अरु तुम
तें मित्राई कियौ चाहतु हौं ॥ हिरन्यक कही हम तुम तौ सहज ही मित्र
हैं औ परंपराय तुमतें हमतें मित्राई चली आवतु है ॥ कह्यौ है ॥ जो अपदा
में राखे सो तौ सदा ही कौ मित्र है ॥ तुम इत आये सो भली कीनी ॥ आपने घ
रतें ह्यां नीकी भांति रहिहौ ॥ यह वात सुनि कुरंगनें आहार कियौ अरु पा
नी पी रूख तरे विसराम लियौ पुनि मंथरक वोल्यौ मित्र ॥ तुम कह्यौ कि हौं
व्याधी के डरतें आयौ ॥ सो या निरजन वनमें व्याधी कहां ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

हिरन कही कलिंग देसकौ राजा रुक्मांगद सर्वदिसजीत ॥ चंद्रभा
गा नदी के किनारे आय उतर्यौ है ॥ अरु सकारें इत आयया कर्पूर सरोवर
में जारि डारि मच्छ कच्छ पकरिहैं यह वात हौं धीवर के मुखतें सुनि आयौ
हौं तातें यहां रहनौं भलौ नाहीं ॥ कह्यौ है कष्ट आवतु देखि दूरतें टारियै मैं
तौ यह कह्यौ पर अब तिहारी वुद्धिमें आवे सो करौ मंथरक वोल्यौ हौं औ

रसरोवर में जाऊं तब काग औ मृग नें कह्यौ ॥ कि पानी के जीवकौं पानी कौ
वल ऐसे हैं कि जैसे राजा कौं आपने राजकौ ॥ पुनि हिरन्यक मूसा बोलि
उठ्यौ ॥ कि भाई तुम नौ बातकौ भेद न समझ ऐसौ विचार करतु हौ ॥ जै
सौ एक बनियां के पुत्र नें अनजानें विचार कियो अरु पाछै आपनी स्त्री
कौं देखि दुख पायौ मंथरक कहीं यह कैसी कथा है ॥ तब मूसा कहतु
है ॥ ❀ ॥ ॥ वीरपुर नगर वाकौ वीरसेन नाम राजा ताकै पुत्र भयो
जाकौ नाम तुंगवल धर्यौ जब वह सामर्थ्य भयौ तब राजानें राज सुत
कौं दयौ ॥ आप हरि भजन करनि लाग्यौ ॥ औ राजकुमार राज एक दि
न वह राजपुत्र देव दरसन किये आवतु हो ॥ वानें काहू बनियां की स्त्री
तरुनि अति रूपवती गैल में देखि वाकौ रूप चाहि यह काम कौ सतायौ
निज मंदिर माहि आयौ ॥ अरु वह लावन्यवती हू राजकुमार कौं देखि
कामातुर होय आपने धाम कौं गई ॥ कह्यौ है स्त्रियन कै ना कोऊ प्रिय औ
ना अप्रिय ॥ जैसे वन मांहि गैयां नये नये हरे हरे तृन चरैं ॥ औ मन संतुष्ट
करैं ॥ तैसें जुवती हू नवान नवीन नर चाहैं पुनि राजकुमार नें एक दूती
बुलाय वाकौं आपनी अवस्था जताय वाके निकट पठाई ॥ वानें जाय
राजपुत्र की सब अवस्था सुनाई तब उनि कह्यौं हौं तौ पतिव्रता हौं अ
रु नारी कौं ऐसौ कह्यौ है ॥ कि बिन स्वामी की आज्ञा कछु काम न करै
यातें जो मेरौ भरतार कहैगो सो मैं करौंगी ॥ कुटनीनें कह्यौ यह तैं भ
ली कही ॥ हौं ऐसे ही करिहौं ॥ इतनौं कहि दूती राजपुत्र पै आई अ
रु वाकौ संदेसौ कह्यौ ॥ राजकुंवर कही यह कैसें व्है है ॥ बहुरि कुट
नी कह्यौ महाराज कछु चिंता जिन करौ उपाय करिहौं कह्यौ है ॥ जो
कार्य उपाय तें होय सो बल तें न होय ॥ जैसें स्यारनि उद्यम करि गज़ कौ
कीच मांहिं फसाय कै मार्यौ ॥ राजपुत्र कही यह कैसी कथा है ॥ तब
दूती कहति है ॥ ॥ ❀ ॥ ब्रह्मारन्य वन में एक कर्पूरतिलक नाम हा
थी रहै है ताहि देखि सब जंबुक मतौ करनि लागे कि काहू प्रकार तें या गज़

कौमारिये ॥ तौ चौमासे भर खैवे कौं अहार मुकते होय ॥ यह सुनि
चिनमे तें एक वद्ध स्यार बोल्यौ या हाथी कौं हौं युक्ति करि मारिहौं इ
तनी कहि वह वृद्धो जंवुक गजके निकट गयौ ॥ अरु धूर्त्तनें मन मांहिं कप
ट करि वासौं यौं कह्यो ॥ हे देव तुम मोपर कृपा करौ गज कही अरे ॥ तू को है
अरु कहां तें आयो है इन कही सब वन वासियन मिल मोहि तुम पै पठायो है
औ विनती करि कह्यौ है कि या वन में हमारौ कोउ राजा नाहिं वनके राजा
तुम हौ सबगुन संयुक्त कह्यो है जो कुलवंत आचार प्रताप धर्म नीति संयुक्त
होय ताकौं राजा करिये ॥ अरु राजा नीकौ होय तौ धन स्त्री कौ संचय करिये
कहतु हैं प्रानी कौं जैसो मेह कौ आधार तैसो ई राजा कौ भरोसो है ॥ क्यों कि
राजा के भयतें सब धर्मे रहै ॥ दुर्वल रोगी दारद्री पनिहू की पत्ली भूपाल के भय
तें सेवा करै ॥ यातें अब तुम विलंब जिन करौ वेग चलौ ॥ शुभ कर्म में ढिल
करनी जोग नाहीं यह कहि स्यार हाथी कौं ले चल्यौ अरु गज हू राजपद के
लोभ कौ मार्यौ वाके साथ ह्वै लियौ आगे आगे स्यार पाछे पाछे कुंजर ऐसें
दोउ चले जा पैंडे माहि वरषा की दहदल ह्वै रही ही ताहीं गैल वह वाकौं लैच
ल्यौ ॥ आगे जाय हाथी दैंमें फंस्यौ तब बोल्यौ मित्र अब हौं कहा करौं स्यार क
ही मेरी पूंछ पकरि चल्यौ आव यौं सुनाय पुनि जब देख्यौ यह या माहि फं
स्यौ ॥ तब इन कही तुम सोच जिन करौ हौं तिहारे निकारिबे कौं आपने स
जाती भाइयन कौं टेरि ल्यावतु हौं इतनी कहि सब जंवुकनि बोलि लै आयो
अरु काढनि के मिस दांतनि तें वाकौ चाम फारि फारि खायौ गज चिचाय
चिचाय कै मर्यौ ॥ ❁ ॥ ॥ इतनौ कहि दूती वोली महाराज उपाय
तें कहा न होय ॥ यातें अब हौं कहौं सो तुम करौ प्रथम तो लावन्यवती के
पति कौं चाकर राखौ ॥ पाछे जो हौं कहौं सो कीजो यह सुनि राजकुमार
ने लावन्यवती के भरतार चारुदंत कौं चाकर राख्यौ पुनि दूतीने राजपु
त्र कौं सब छल छिद्र की वातें सिखाय दई तब उनि वाकी प्रतीति बढा
य वाहि सब काम में प्रधान कियो एक दिन राजपुत्रने चारुदंत सौं कही

॥२८॥ अथ सुहृद्भेदः ॥ ॥

राजकुमारनि विस्नुशर्मा सौं कह्यौ ॥ अहो गुरुदेव मित्रलाभकी कथा
तौ हमनि सुनी ॥ अब कृपाकरि दूजी सुहृद्भेद की कथा सुनावो ॥ तहां वि
स्नुशर्मा कहतु है कि महाराजकुमार ॥ पहिलै एक बरध औ बाघसों प्री
ति करवाई स्यारनें आफ पाछै बरधकौं मरवायौ वाही वाघ सौं राजकुमार
नि कही यह कैसी कथा है तद विस्नुशर्मा कहनि लाग्यो कि॥ ॥ ॥
दक्षिन दिसा में सुवर्ना नाम नगरी तहां एक वर्द्धमान नाम वनियां
सो बडौ धनवंत हो काहू दिन वानें एक और सेठ की संपति देखि आपनें
मनमें विचार्यौ कि काहू भांति और हू लक्ष्मी इकठी करौं तो भलौ ॥ कह्यौ
है आपतें अधिक वल द्रव्य विद्या देखि काकौ मन मलीन न होय ॥ अ
रु ऐसें हीं आपनी संपत की बढवार देखि जो न मन मांहि अहंकार करै
कौ कि धनाढ्य कौं सब कोउ मानें ॥ पुनि ऐसे हू कह्यो है कि असाहसी औ
आलसी न कौं लक्ष्मी आप ही त्यागति हैं ॥ जैसें वृद्ध पुरु कौं तरुन स्त्री न
चाहै ॥ तैसें विन्हें लक्ष्मी हू ॥ अरु जे आलसी होय संतोष करि घरमांहिं
वैठ रहैं ॥ तिनकौ विधाता कबहूं न बढावैं कह्यो है॥ भगवान असाहसी
पुत्र हू काहू कौं न देय बहुरि कहतु हैं कि ॥ अनपाई वस्तुकौ यत्न कीजै तौ
प्राप्त होय ॥ अरु वाकी चिन्ता न करियै तौ न मिलै ॥ ऐसें विचारि वनियां पु
नि मन में कहनि लाग्यौ कि जो धन पाय न खाय न उठावै वह धन कौन का
म आवै औ वल भये शत्रु कौं न मारियै तौ वा विद्या तें कहा लाभ पुनि स
रीर पाय उपकार न होय अरु इंद्री न जीतै तौ सरीर सों कहा अर्थ ॥ कह्यौ

हू थोरी थोरी उद्यम करै हू धन वाढै॥ तैसें बूंद बूंद जलकरि घट भरै अ
रु विन दियां औ धन जोजन सांस लेतु है॥सो लुहार की धवनि समान
जानिये॥ ॥ ॥ ऐसें सोच विचार करि वर्द्धमान बनियां नंद
क औ संजीवक लद्द रथ मांहिं जोति बहुत धन द्रव्य लादि रथ पर
चढि काश्मीर की ओर चल्यौ कह्यौ है सामर्थी कौं कहा भार व्यापारी
कौं कहां विदेस मीठो वोलै ताहि कौन पराये॥ आगे अेध वरगैल
में चलत दुर्ग नाम महा वन माहि संजीवक कौ पांव टूट्यौ वरध गि
र्यौ पाचार खा कै वाहि गिर्यौ देखि महाजन कहनि लाग्यौ कि
कोउ कितेक उपाय करि मरौ फल विधाता के हाथ है ऐसें विचा
रि वरध कौं वहां हीं छोरि वनियां आगे कौं चल्यौ बरध ह्वां रह्यौ कितेक
दिवस मांहिं वह हरे हरे तृण खाय निर्मल जल पी अति बलवान भयौ
अरु एक समैं परमानंद करि दडूक्यौ॥ वा ठौर एक पिंगल नाम वाघ राज
करतु हो पर वाहि काहूनें राजतिलक न दयौ हो॥ कह्यौ है आपनें वल
करि सिंह मृगराज ही कहावै॥ सो नाहर वाही काल जमुना तीर नीर पी
वन गयौ ह्वां जाय संजीवक के दडूकवे कौ शब्द सुनि मन हीं मन भ्रा
मान होय पानी अनपियें ही आपनौ ठाम आय वैठ्यौ तहां दमनक
औ करटक द्वै स्यार रहैं सो यम चरित्र देखि दमनकनें करटतें कह्यौ
कि मित्र तुम कछू देख्यौ जु आज यमुना तीर पै जाय वाघ विन पानी
पियैं आपनी ठांव सुचितौ होय आनि वैठ्यौ ताकौ कारन कहा॥ कर
टक कही बंधु॥ मेरौ तौ यह विचार है कि जाकी सेवा न करियै ताकी
बात पूछेतें कहा प्रयोजन कहतु हैं जा गांव न जानौ वाकौ पैंडो पूछ
वेतें कहा काम॥ मोहि तौ अव याकी सेवा करतु हू लाज आवति है
पर अहार के लोभतें करतु हौं॥ कह्यौ है जे सेवा करि धन चाहतु हैं ते
आपनौं शरीर पराये हाथ वेचतु हैं अरु जे और के हेतु भूख प्यास घा
म सीत वर्षा सहतु हैं तिनकी तपस्या में खोट जानियें क्यौं कि पराधी

नपरवस कौजीवन मृतक समान है कहतु हैं ॥ कवित्त ॥ दोनौं भलौ सुप थ कुपथ पै नकुनौंभलौ सुनौंभलौ भौंन पै नखल साथ न करिये ॥ संत नकौ लघु संग जडि कौ गुरु छांडि साधु कौ सहज औ असाधुकपाडरि ये॥ धोरिये सराफी नफा बहुत जुवा कौ छांडि परि कै सुसंग आप बलसों सपरिये हारि मानिलीजै पै त्यारि कीजै नीचनि सों सरवस दीजै नपरवस परिये ॥ मृतक कौंन कों कहतु हैं कि ॥ जा सेवक कौ ठाकुर न चाहै अरु क है इततें उतजा बोलै जिन ठाढो रहै ऐसें अविज्ञा करि वाकौ मानमर्दन करै तौ हू मूरख धनके हेतु पराधीन रहै जैसें वेस्या परपुरुष के निमित्त सिं गार करै तैसें मूरख हू पढि गुनि परायो आधीन होय॥ यातैं मेरे जान सेवक के समान मूरख जगत में कोउ नाहीं ॥ दमनक कही मित्र तुम यह वात जि न कही कह्यौ है वडो जतन करि भलौ ठाकुर सेइयै जासों मन कामना पूर न होय ॥ छत्र चमर गज अश्व आदि सब लक्ष्मी के पदारथ मिलैं॥ जो न सेइये तौ कहां सों पाइये तातें सेवा अवश्य करिये बहुरि करटक कही हितू जो तुम कह्यौ ॥ तासों हमें कहा प्रयोजन कह्यौ है विन सम झे बूझे काहू के वीच परै सो मरै ॥ जैसें एक वनचर मर्यौ ॥ दमनक क ही यह कैसी कथा है तहां करटक कहतु है ॥ ❀ ॥ ॥ मगध देस मे सुभदत्त नाम कायथ तिन धर्मोरन्य वन में क्रीडा की ठौर बनावन कौ आरम्भ कियो तहां कोउ वढई काठ चीरतु चीरतु ॥ वामांहिं लक री की कील दै काहू काम कौं गयो ॥ अरु एक वन कौ वानर चपलाई करतु करतु काल वस वाही काठ पर कील पकरि आय वैठ्यौ ॥ अरु वा के अंडकोश वा काठ की संधि मांहि लटकि परे॥ ज्यौं उनि चंचलता सौं युक्ति करि कील काढी त्यौं काढत प्रमान अंडकोस चपे औ मर्यौ ॥ ॥

तातै हौं कहतु हौं ॥ कि विन स्वारथ चेष्टा न करिये दमनक क ही मित्र जो प्रधान होय सो सब काम करै ॥ सेवक कौं ऐसौं विचार नौं जोग नाही ॥ करटक वोल्यौ भाई ॥ आपनो काम छोरि और के काम

में परनौ उचित नाहीं ॥ अरु जो परै तौ वैसें होय जैसें पराये काज में परि विचारौ गदहा मारयौ गयौ॥ दमनक कही यह कैसी कथा है॥ तब करटक कहतु है॥ ॥ ॥ ॥ वारानसी नगरी मांहिं कोउ कर्पूरपाट नाम धोबी रहै सो तरुन स्त्री व्याह ल्यायौ वाके साथ एक दिन रात कौं क्रीडा करि सुख नींद मांहिं सोवतु हो॥ वाके घर में चोर पैठे अरु ताके अंगना में एक गदहा औ कूकर हो॥ सो गदहा चोरनि कौं देखि कूकर तें बोल्यौ॥ अरे यह तेरौ काम है कि ठाकुर कौं जगाय दे॥ उनि कही अरे मेरे काज की चर्चा जिन कर॥ तू जानत नाहीं जु यह मोहि खैबे कौं नाहीं देतु सुनि कह्यौ है॥ जवलौं ठाकुर पै आपदा न परै तवलौं सेवक कौ आदर हू न करै॥ पुनि गर्दभ कही सुन रे बावरे॥ जो काम परे मांगै सो कैसौ चाकर॥ उनि कही जो काज परे सेवक कौं चाहै सो कैसो ठाकुर सेवक औ पुत्र समान है॥ इन कौ पोषन भरन करनौं स्वामी कौं उचित है॥ गदहा बोल्यौ॥ अरे तू तौ पापी है जो स्वामी को काज नाहीं करतु॥ अरु मेरौ नाम स्वामिभक्त है तातें जामें स्वामी जागिहै सो उपाय करिहौं वहुरि स्वान कहीरे सूरज कौं पीठ दे सेइये॥ अग्नि आगें धरि तापिये अरु स्वामी सों आगे पाछे शुद्ध भाव रहिये॥ पर यह स्वामी वैसौ नाहिं॥ अरु जो तू मेरे काज मांहिं पाय धरैगौ तौ मेरौ मौन तोहि लागिहै॥ वाकी बात सुनि गदहा व्हांतें उसरि धोबिया के निकट जाय कान सों मुंह लाय रैंक्यौ॥ तब वा रजक ने नींद सो चौंकि क्रोध करि गदहा कौं लोहांगियन मारयौ॥ वा मारतें वह मरयौ॥ ॥ ॥ ताते हौं कहतु हौं॥ कि और के अधिकार मांहिं कबहू न परिये॥ हमारौ काम तौ यह है॥ कि अहार खोजनौं पै आज हमें वाहू की सोच नाहीं॥ क्यौं कि काल्ह कौ मास वहुत धरयौ है॥ यातें हम अनेक दिन पेट भरि काटिहैं दमनक कही जो तू अहार ही के लयें सेवा करतु है॥ तौ यह भलौ नाहिं राजा की सेवा करनौं॥ सो तौ स्वारथ पर

मारथ के निमित्त ॥ कि जाकी सेवातें मित्र साधनि कौ उपकार करिये
औ शत्रु दुष्टनि कों मारिये ॥ यह मनमें वासना रहति है केवल उदर
भरन के हेतु नाहीं सेवतु कह्यौहै संसार में जाके आसरे अनेक लोग
जीवें ताही को जीवन सुफल है ॥ सब सेवक समान न होंय ॥ सेवक
सेवक में हू वडो अन्तर है ॥ जैसें एक पांच कौरी कों हू अकरौ ॥ औ ए
क लाखनि ते हू न पाइये कहतु हैं घोरा हाथी काठ पाथर कपरा स्त्री
पुरुष अन्न इन के मोल मोल में बडो भेद है देखो कूकर थोरी ई मास
हाडतें लपट्यौ पावै तो वाही माहिं संतोष करि रहै ॥ अरु सिंह आगे स्या
र ठाढो रहै तौ हू वह वाहि छांडि गज कौं ही मारै ॥ ताते हौं कहतु हौं
कि ॥ जे बडे हैं ते बडोई काम करतु हैं ॥ पुनि कूकर पूंछ हिलावै पेट दि
खावै तव टूका पावै अरु हाथी स्यान वंध्यौ केते जतन उपाय करि घ
ने आदर सों अहार कौ ग्रास लेय कह्यौ है ॥ जगत मांहिं ज्ञान पराक्रम
जस अहंकार सहित एक घरी जीनौं हू भलौ ॥ अरु मान रहित काग
की भांति विष्ठा खाय अनेक दिन जिया तौ कहा ॥ जो आपनौ ही पेट
पालि जियौ तौ वा मनुष औ पशु में कहा अन्तर है ॥ पुनि करटक कही
कछु हम तुम या राजा के सेवक नाहिं बहुरि दमनक कही भाई ॥ स
भैं पाय मंत्री हूवे कौ यत्न करिये वडो पाथर कष्ट करि उठाइये पे गि
राइये सहज में औ आपनी प्रतिष्ठा राखिवे कौं उपाय सदा करिये ॥ पु
नि करटक कही बंधु तुम कछु जानतु हौ कि सिंह आज काहे डर्यौ
दमनक वोल्यौ भाई या में कहा जानवौ है पंडित विन कहे ही जानें
अरु कहे तें तौ पशु हू पिछानें ॥ पर जा कौ जो भावै सो भलौ मेरे जान
तौ राजा की सेवा मांहि रहिये औ जब राजा पुकारै ह्यां कोऊ है तव कहि
यै यह तौ श्रीशिवजू कौ वाहन है औ तुम पार्वती के यातें वह तिहारे आ
श्रम जानि निर्भय गाजतु हैं तुम कौं वाकी आगता स्वागता करि सेवा कर
नी जोग है क्यौं कि आज वुह तिहारौ पाहुनौ है ॥ वाकी सेवातें ईश्वर पावे

तौ प्रसन्न होयगें यह सुनि दमनकतें सिंह वोल्यौ कि तुम शिष्टाचार करि वाहि मोतें मिलावौ वह तौ हमारौ भ्राता है पुनि दमनकने संजीवक वरधकौं पिंगलक वाघसों मिलायौ दोऊ आनि मिलि अधिक सुख पायौ कछुक दिननि पाछें उन माहि अति प्रीति भई आगे एक दिन स्तिकरन नाम सिंह राजा कौ भाई तहां आयौ तव संजीवकने यह टेरि सुनायौ कि महाराज आज तुमनि जो मृग मास्यौ हो वाकौ मास कहां है॥ सिंह कही भाई करटक दमनक जानें पुनि संजीवक वोल्यौ महाराज तुम उनतें पूछौ तौ सही है कै नाहीं वहुरि नाहर उत्तर दियौ कि हमारै यही रीति है जो ल्यावें सो उठावें फेरि संजीवक वोल्यौ महाराज मंत्री कौं ऐसो न वूझिये कि जो आवै सो उठावै कै राजा की आज्ञा विन काहू कौं देइ यह नीति नाहीं कह्यौ है आपदा के अर्थ धन राखियै औ मंत्री ऐसो चाहियै जो राजा के धन कौ संग्रह करै थोरो उठावै वहुत जोरै राजा को भंडार प्रान समान है सव कोऊ धन के निमित्त राजसेवा करतु हैं धन हीन भये घर की नारी हू न मानें और की तौ कहा चली॥ या संसार में धन ही की प्रभुता है जाके पास धन सोई वडो ये प्रधानके दूषन हैं अति खरच है प्रजा की रक्षा न करै अनीति अधर्म करि भंडार भरै राजा के सनमुख झूठ वोले तौ अल्प दिननि में ही राज भ्रष्ट होय क्यौं कि विन सोचे विचारे काज करे तें काज कबहू न रहै॥ संजीवकने जव यह वात्त कही तव स्तिकरन वोल्यौ भाई तैं इन स्यारन कौं अधिकारी कियौ सो भली करी॥ पर हम प्राचीन लोगनि तें सुन्यौ है कि ब्राह्मण क्षत्री संवंधी उपकारी औ मित्र इनकौं अधिकार न सौंपिये॥ क्यौं कि ब्राह्मन धन खाय तौ राजा दंडु न दे सकै अरु क्षत्री जव वल पावै तव राज दवाय लेय पुनि संवंधी आज्ञा न मानें उपकारी सव तुच्छ जानें मित्र राजा सम आप कौं गनें॥ तातें इन कौं अधिकार कपहू न दीजियै वहुरि ऐसें हू कह्यौ है कि चट प्रधान कौं न तोरियै ❧ सहजें सहजनि चोरियै जों स्वान को चीर जट वानें याहि

भरमाया तर या हूके मनमांहिं कपर छायौ॥ कहतुहैं वेस्या काकी स्त्री औ
राजा काकी मीत ॥ कवित्त ॥सांप सुसील दयायुत नाहर कागपवित्र औ
सांचौ जुवारी॥पावक सीतल पाहन कोमल रैन अमावस की उजियारी॥
कायर धीर सती गनिका मतवारौ कह्यौ मतवारौ अनारी ॥ मोतिय राम
सुजान सुनौं किन देखी सुनी नरनाहकी यारी पुनि राजा बोल्यौ कि भ्रा
ता तुम सांच कहतु हौ ॥ये दोऊ मेरौ कह्यौ नाहीं मानतु औ मोहि दुख दे
तुहैं॥ बहुरि सितकरन कही भाई॥ कह्यौ है कि अहंकारतें जसजाय
कुविसनतें ज्ञान॥आलस्य तें धन॥ क्रिया विन कुल औ लोभतें धर्म॥ पुनि
ऐसी हू कह्यौ है॥दोहा॥ आज्ञाभंग नरेंद्र कौ कि ग्यानीकौ अपमान ॥ भिन्न सेज
नारीन कौं विना शस्त्र वध जान ॥ अरु नीति तौ यौं है कि ॥ पुत्र हू कह्यौ न
मानें तौ राजा वाहूकौं दंड देय पुनि चोर अरु लोभी प्रधानतें प्रजा की रक्षा
करि॥ पुत्र की भांति पालै अरु सुनि भाई॥आज मैं तेरौ अन्न खायौ है तातें
हौं तेरे हितकी कहतु हौं यह संजीवक बडौ साधु है शुभचिंतक औ सुकृति
की खान है यातें अपनौं भलौ चाहौ तौ याहि अधिकारी करौ॥ यह बात रा
जानें भाई की सुनि संजीवक कौं अधिकारी कियो औ दमनक करटक तें
अधिकार खोस लियौ॥तब दमनक नें करटक तें कह्यौ मित्र अब कहा
करियै यह तौ हमारौ ई कियौ दोष है जैसें चित्र लिखे कौं छूवत कंदर्प केतु
नें औ मणि के लोभतें महाजननें अरु अपनी करतूतें दूतीनें दुख पायौ तै
से हम हू आपनें किये कौ फल पायौ पुनि करटक बोल्यौ यह कैसी कथा
है॥तब दमनक कहतु है॥ ॥ कंचन पुरमें वीरविक्रमादित्य नाम राजा
हो वाके सेवक एक नाऊ कौं मारनि लै चले तहां कंदर्प केतु सन्यासी अरु
साहु नें वाहि देख्यौ तब सन्यासीनें राजा की चाकरनि सों कह्यौ कि॥ या
नै वाकौ कछु अपराध नाहीं सेवकनि कही याकौ व्यौरौ कहौ पुनि सन्या
सी बोल्यौ कि प्रथम मेरौ दोष मोहि लाग्यौ ॥सो सुनौ सिंहल दीपकौ जंबु
केतु राजा ताकौ मैं पुत्र हौं अरु कंदर्पकेतु मेरौ नाम है एक दिन एक व्यौपारी

मेरे नगरमें आयौ अरु उत्तम पदारथ उनि मोहि आनि दिखायौ॥ जब मैंनें वासों पूछ्यो कि तैंने यह कहांतें पायौ॥ तब उनि प्रसङ्ग चलायौ कि महाराज हम व्यौपारी लोग समुद्रके तीर बनजुकों जातु हैं॰ तहां बरसवें दिन सागरमें तें एक वृक्ष निकरतु है तापै अति सुंदरि नवजोवना रतन जडित आभूषन पहरै एक नायिका बैठी बैठी अछे अछे पदारथ भेज भेज देति है अरु महाजन व्यौपारी सब लेतु हैं॥ औ देस देस बेचत फिरतु हैं॥ इतनी बात जब वानें मोसों कही तब मैं वाहि साथ लै समुद्रतीर गयौ॥ अरु व्हां जाय वाहि देखत प्रमान समुद्रमें कूद्यौ॥ कूदत ही मोहि येक कंचन कौ मंदिर दृष्ट आयौ तहां हौं हू उठि वा मांहिं धायौ मोकौ देखि॥ वानें एक दूती पठाई सो चली चली मेरे ढिग आई॥ मैंनें वासों पूछ्यौ॥ यह को है उनि कही॥ यह कंदर्पकेलि विद्याधरनि कौं राजा ताकी पुत्री है॥ अरु रतन मंजरी याकौ नाम है यह बात सुनि मैंनें आगे बढि॥ वाके निकट जाय अधिक सुख पायौ॥ तद उनि कह्यौ स्वामी स्वइच्छातें तुम ह्यां रहो॥ पर यह चित्रलिखी विद्या कबहू मत छूइयो आगें गंधर्व विवाह करि हौं वहां कितेक दिन रह्यौ एक दिन वाकौ कह्यौ न मानि ज्यौं वह विद्या में छुई त्यौं उनि मोहि एक लात ऐसी दयी कि॥ हौं मगधदेसमें आनि पर्यौ तादिनातें वाही के वियोगमें सन्यासी भयौ डोलतु हौं॥ आज तिहारी नगरी में आय॥ रात हौं अहीरके घर मांहिं रह्यौ सु व्हां देख्यौ कि वह घोस आपनी घुसायन कौ जारिके साथ बतराति देखि क्रोध करि थांभसों बांधि मतवारो होय सोय रह्यौ अरु जब आधी रात बाजी तब एक नायन कुटनी वाके पास आय बोली कि॥ सुनरी तेरे विरहतें वह बापरौ मरतु है वाकी दया विचारि हौं॥ अब तू विलम्ब जिन करै मोहि या थांभ तें बांधि जा अरु वाकौ भलौ मनाय आ वाकी बात सुनि उनि वैसे हीं करी तब अहीर जाग्यौ औ वासो कहनि लाग्यौ कि अब तू जार पास क्यौं न जाय उर वह न बोली॥ तद उनि वाकी नाक उतार लई॥ अरु मद कौ मातौ पुनि सोय रह्यौ॥ इतेक में घुसायन नें आय नायनसों पूछी कि अरी कुशल है

उनिकही वीर तूतौ कुशलतें आई परमैंनें ह्यां आपनी नाक गंवाई यह सुनि ग्वालनि आप बंधगई॥ अरु वानें नायन कौं बिदा दई जबनायन आपनें घर आई॥ तब फेर घोस जाग्यौ औ जो कछु वाके मुख आयौ सो कहनि लाग्यौ॥ वा समैं अहीरी बोली तूमेरौ धनी है॥ मार बांध जो चाहै सो कर और ऐसौ को है॥ जो मोहि कलंक लगावै॥ मेरौ कर्म औ धर्म अष्ट लोकपाल॥ चांद सूरज धरती आकाश अग्नि जल पवन रात्रि दिन दोऊ संध्या जानति हैं अरु प्रानी जो कर्म करतु हैं॥ ताकी उनकौं गम्य है॥ अब हौं आपनें धर्म सतसों कहति हौं कि हे सूर्य देवता जौ मैं आपनें सत धर्म तें हौं॥ तौ मेरी नासिका कटी नजनातूघी यह वात सुनि अहीर वाके ढिग जाय देखौ तौ नाक ज्यौं की त्यौं बनी है देखत प्रमान वह वाके पायन पै गिर्यौ॥ औ बोल्यौ कि तू मेरौ अपराध क्षमा कर मैं तोहि विन अपराध सतायौ पुनि वह वाके कंठ लागि बोली कि स्वामी यामैं तिहारौ कछु दोष नाहीं यह मेरौ ही कर्म कौ फल है॥ आगे नायन निज घर जाय नाक हाथ मांहिं लियें बैठी ही कि भोर भये वाके भर्त्तारने पेटी मांगी इन एक छूरा वाके हाथ दियौ उनि क्रोध करि याकी वोर फेंक्यौ तद यह पुकारी कि हाय इन निर्दई नें मेरी नाक पै छुरा मार्यौ याकी पुकार सुनि तुम वाहि विन सोच विचार किये पकरि ल्याये औ मारन कौं लिये जातु हौ परयाकौ कछु अपराध नाहीं॥ अरु साधु महाजन मेरे संग हैं॥ ताकी वात सुनौ कि॥ यह वारह वरस बिदेस कमाय धन लियै आपने घर कौं जातु हौ॥ सो या नगर में आय रात वेस्याके घर रह्यौ॥ वा सामान्याने आपने द्वारपर एक काठ कौ बैताल वनाय कल लगाय॥ वाके मुंडपर एक रत्न जडि राख्यौ हो यह साध लोभ कौ मार्यौ आधी रात कौ उठि बैताल के निकट जाय हाथ बढाय ज्यौं हीं रत्न लयौ चाहै॥ त्यौं ही वाकी कल छूटि याके दोउ कर बंधे॥ कल छूटवे कौ शब्द पाय वह बार विलासिनी वाके ढिग आय बोली कि तूं मलयागिर तें मुक्तानि की जो माला ल्यायौ है सो मोहि दै नातो भोर तोहि कोटवार के ह्यां आनो होयगो॥ अरु ह्यां

तैं जीवत न फिरैगी इतनी बात महवा की सुनि॥ भयरवाय आपनौं सब ध न वाहि दै मेरे संग आय लाग्यो है॥ यह वात सन्यासी तें सुनि राजा के से वकनि न्याय विचा स्यौ॥ औ वाहि छांडि वेस्यातें साध कौं धन दिवाय यथा योग्य दंड दै॥ सबकौं छांडि दियौ तातें हौं कहतु हौं कि॥ ज्यौं उन नि आपनें दोषतें दुख पायौ॥ तैसें हमहू आपनें किये कौ फल पायौ॥ पर भाई करटक अव जो भई सो भई॥ परंतु तुम जिन सोच करौ सुनौं॥ जैसें मैंनें इनतें प्रीति कराई॥ तैसें ही अव वैर करवाय हौं॥ कह्यौ है जे चतुर हैं ते झूठी वात कौं हू साची करि दिखावैं॥ जैसें एक अहीरी नें झूठ कौं सांच करि स्वामी के देखतु जार कौं घरतें निकास्यौ करटक क ही यह कैसी कथा है॥ पुनि दमनक कहतु है॥ ॥ ❀ ॥ द्वारिका नगरी में एक घोस की नारि विभिचारिनी थी सु कोतवाल औ वाके मौंडा तें भोग करि रही ही॥ ता मांहि कोतवाल आय बार पर पुकार्यौ तब यानें वाके छोटा कौं कोठी में लुकाय द्वार खोल दियौ॥ अरु ताहू कौ भलौ मनायौ॥ इतेक में वाकौ धनी आयौ तब इन कोतवाल कौं यह सिखायौ कि हौं तौ वार उघारनि जाति हौं॥ पर तुम सौंटिया कौं धैयै धरि क्रोध करि घरतें निकरौ ता पाछै हौं वात वनाय लेउंगी॥ उनि वैसें ही करी॥ तव अहीरनें घर में आय॥ आपनी स्त्री तें कह्यौ कि आ ज कोतवाल हमारे घरतें रिसाय कैं क्यौं गयौ॥ अहीरी वोली कोतवा ल हमारे घरतें क्यौं रिसायगौ॥ वाकौ पूत वातें रिसाय मेरे घर मांहिं आय छिप्यौ है॥ सु वह आपने मौंडा कौं मो सों मांगतु हो॥ इतेक मांहि तुम जो आये सो तुम्हे देखि चल्यौ गयौ यह कहि॥ घुसायन नें कोतवाल के पुत्र कौं कोठी तें निकारि कह्यौ कि॥ तू कछू भय मत क रै॥ मैं तोहि वाहर निकारि देती हौं॥ जित तेरे सींग समाय तितै चल्यौ जा ऐसें कहि वाहि घरतें निकारि दियौ॥ कह्यौ है॥ दोहा॥ पुरुषनि तें दुग नी क्षुधा वुद्धि चौगुनी होय॥ काम आठ साहस छःगुन या विधि तिय

सबकोय॥ तातें हौं कहतु हौं काम परैं जाकी बुद्धि फुरै सोई पंडित॥

बहुरि करटक बोल्यौ भाई॥ इन दोऊन में तौ अति प्रीति है तुम कैसे बिगार करवाय हो॥ फेरि दमनक बोल्यौ कि मित्र जो काज उपाय तें होय॥ सो बलतें न होय॥ जैसें एक सांपकौं काहू कागनें मरवायौ तैसें हौं हूं याहि मरवाऊंगौ करटक कही यह कैसी कथा है॥ तहां दमनक कहतु है॥ ☙ ॥ ॥ उत्तर दिसा में विद्याधर नाम पर्वत वहां एक तरु पर काग कागली रहै अरु वाकी जर में एक सांप हू जब कागलीनें अंडा दये तब सर्पनें रूख पर चढि खाय लिये॥ अरु अंडानि के लालच सौं नित वृक्ष पै चढि॥ वाके खौंधा में जाय जाय बैठै॥ पुनि कागली गर्भ सौं भई॥ तौ उनि वायस तें कही रे स्वामी॥ या तरवर कौं तजि अन्त जाय बसिये तौ भली॥ क्यौंकि कह्यौ है॥ जाकी नारी दुष्ट मित्र सठ॥ सेवक वादी घर में नाग कौ वास॥ ताकौ मरन निस्संदेह होय॥ यासौं यांकौ रहनौ उचित नाहीं॥ काग कही हे प्रिये॥ अब जिन डरै क्यौं कि मैंनें या नाग कौ अधिक अपराध सह्यौ पर अब न सहौंगौ॥ कागली बोली तुम याकौ कहा करौगे काग कही प्यारी जो काम बुद्धि तें होय सो बल तें न होय॥ जैसें एक ससा नें बुद्धि करि॥ महाबली सिंह कौ मार्यौ॥ तैसें हौं हू याहिं विन मारे न छांडिहौं॥ कागली बोली यह कैसी कथा है॥ तहां काग कहतु है॥

मंदर गिरि पै दुर्दान्त नाम एक सिंह हो सो बहुत जीव मार्यौ करै॥ एक दिन बन के सब जीवनि मिलि विचार करि॥ आपुस में कह्यौ कि॥ यह सिंह नित आय एक जंतु खातु है औ अनेक मारतु है॥ तातें याकै पास चलिकै एक जंतु नित देनौं कहि आवैं॥ अरु बारी बांधि पहुंचावैं तौ भलौ ऐसें वे आपुस मैं बतराय सिंह के पास गये औ कर जोरि प्रनाम करि मर्यादसौं याके सन्मुख ठाढे भये इन्हें देखि नाहर बोल्यौ॥ तुम कहा मांगतु हौ इननि कही स्वामी तुम अहार के लयें नित जातु हौ॥ अधिक मारतु हौ अल्प खातु हौ॥ यातें हमारी यह प्रार्थना है कि हम तिहारे खै

वे कौं एक जंतु नित ह्यां हीं पहुंचाय जैहैं तुम परिश्रम जिन कियौ करौ उनि कही अति उत्तम ॥ ऐसें वे बाघ तें वचन करि आये ॥ आग जाकी बारी आवै सो जाय वह खा जाय ऐसें कितेक दिन पाछें एक बूढे ससा की बारी आई तब वाने आपनें जी में विचार्यौ कि मेरौ सरीर छोटौ है यासौं वाकौ पेट न भरैगौ ॥ तद हमारे और भाइयन कौं खायगौ तातें हमारौ कुल तौ एक दोइ बार में ही पूरौ करैगौ ॥ यातें आपनें जीवतु ही याकौ नास करौं तौ भलौ यह विचारि आपने स्थान तें उठि ॥ हरवै हरवै चलि वह सिंह के पास आयौ तब वह याहि देखि क्रोध करि बोल्यौ अरे तू अवेरौ क्यौं आयौ पुनि ससानें कर जोरि यह वचन सुनायौ स्वामी ॥ मेरौ कछु दोष नहीं ॥ हौं चल्यौ आवतु हो तुम पाहीं ॥ गैल मांहि दूजौ सिंह मिल्यौ तिन मोसों कह्यौ रे तू कित जातु है चल्यौ ॥ मैं कही कि हौं आपने स्वामीं पास जातु हौं ॥ उनि कह्यौ या वन कौ स्वामी तौ मैं हौं ॥ और स्वामी ह्यां कहां तें आयौ ॥ पुनि मैं कह्यौ कि आज लुराय तौ तुम कौ ह्यां कबहू न देखौ हो इतनी बात के सुनते ही वानें क्रोध करि मोहि वैठाय राख्यौ ॥ तद मैं वासों कह्यौ कि यह सेवक कौ धर्म नाहीं जु मेरौ ठाकुर न जानैगौ ॥ वरन मेरौ कह्यौ झूठ मानैंगो अरु निज मन में कहैगौ कि यह घर जाय सोय रह्यौ औ मोसौं आय मिथ्या भाषतु है यातें तुम मोहि जिन अटकाऔ हौं आपनें स्वामीं पास होय आऊं ॥ वह मेरी बाट जोवतु होयगौ तुमसें यह वचन दियें जातु हौं कि मैं स्वामी कौं कहि उलटे पाय न वगदि आवतु हौं या वात के कहतें उनि वचन बंध करि मोहि बिदा कियौ तब मैं तिहारे पास आयौ स्वामी ॥ यामें मेरौ कहा दोष है ॥ इतनी बात सुनि सिंह बोल्यौ अरे मेरे वन में और सिंह कहां तें आयौ ॥ तू मोहि वाहि अबहीं दिखाव ॥ मैं वाकौं विन मारे आज भोजन न करिहौं ॥ ऐसें बातें करि ॥ वे दोऊ ह्वांतें चले ॥ आगे आगे ससा पाछें पाछें सिंह जब चलतु चलतु वन मे कितनी एक दूर पहुंचे तब ससा एक कूवा के निगजा

य ताको भयौ ॥ तहां सिंह बोल्यौ ॥ अरे वह तो हि रोकनि वारो कहां है ॥ स
सानें उत्तर दियौ कि स्वामी वह तिहारे भयतें या कूप मांहिं पैठ्यो है ॥ इ
तनी सुनि सिंह नें क्रोध करि कूआ के मनघटा पर जाय ज्यौं जल मांहि
देख्यौ त्यौं वाहि वाकौ ही प्रतिबिम्ब दृष्ट आयौ परछांई देखत प्रमा
न वह जल में कूद्यौ औ डूब मर्यौ ॥ तब ससानें आपनें स्थान पर आय
सब बनवासियन कौं सुनायौ कि हौं सिंह कौं मारि आयौ ॥ मैंनें तिहा
रौ जन्म जन्म कौ दुख दूर कियौ॥ यह सुनि सब बनवासियन वाहि आ
सीर्वाद दियौ ॥ ❧ ॥ ॥ इतनी कथा कथ कागनें कागली तें कह्यौ
कि हे प्रिये तूं देखि जो काम बुद्धि तें भयौ सो कबहूं बल तें न होतौ ॥ सुनि
कागली बोली स्वामी ॥ जामें भली होय सो उपाय करौ तद वायस व्हां तें उ
डि आगे जाय देखै तौ एक राजपुत्र काहू सरोवर के तीर पै वस्त्र शस्त्र आ
भूषन राखि वामें स्नान करतु है ताकी मोतिन की माल यह लै उड्यौ अरु
आपनें खोंदा पै जाय वह माल सांप के कंठ में डारि अलग होय बैठ्यौ या
के पाछें लागे वा राजा के सेवक हू देखत चले आये हे ॥ तिन भिजब
काग की चोंच में हार न देख्यौ तब विनमें तें एक रूख पर चढ्यौ तानें दे
ख्यौ कि खोंडर में कारौ नाग वह माला पहरे बैठ्यौ है॥ यह देखि राजा
के वा किंकर नें निजमन मांहिं विचार्यौ कि माला तौ देखी पर अब कु
छ विन उपाय हाथ न ऐहै यासौं कछु यत्न कीजे इतनौ कहि वानें सर्प
कौं तीर निते मारि माला राजपुत्र कौं ल्याय दई ताते हौं कहतु हौं भाई
उपाय किये कहा न होय ॥ ❧ ॥ ॥ बहुरि करटक कही भाई तुम जो
जानौं सो करौ ॥ आगे दमनक नें व्हांतें उठि पिंगल सिंह के पास जाय क
ह्यौ कि महाराज ॥ यद्यपि तिहारे पास हमारौ कछु काम नाहीं पर सम
य असमय आपके निकट हमकौं आवनौं उचित है ॥ कह्यौ है जब रा
जा कुमारग में चले तब सेवक कौ धर्म जाय॥ आगे राजा मानौं कि जि
न मानौं पर वा कौं कहनौं जोग है महाराज राजा भोग करिबे कौं हे औ

सेवक सेवा करन कौं पुनि कह्यौ है॥जौ राजाको राज विगरै तौ मंत्रीकौ
दोष कहै॥ राजा कौं कोऊ कछु न कहै॥ यातें प्रधान कौं चाहिये आपने
स्वामी के काज कष्ट पाय धन तन दे‍इ पर राज न जानि देइ॥ अरु जो प्रधा
न राज काज विगरत देखि राजासों न कहै सो कैसौ सेवक औ जो राजा सम
य असमय किंकर की बात न सुनें सो कैसौ ठाकुर॥ पिंगल बोल्यौ तुम
कहा कह्यौ चाहतु हौ॥ सो कहौ दमनक कहनि लाग्यौ पृथ्वीनाथ यह सं
जीवक तिहारी निंदा करतु हौ॥ अरु कहतु हौ कि अब यह राजा प्रताप
हीन भयौ प्रजा की रक्षा करी चाहिये॥ या बात में महाराज मोहि ऐसी
समझ परयो कि॥ अब वह आप राज कियो चाहतु है॥ यह बात सुनि
राजा चुप ह्वै रह्यौ॥ पुनि दमनक बोल्यौ धर्मावतार तुम ऐसौ प्रचंड
मंत्री कियो कि॥ जो राज काज काम तौ तुम तें न पूछि एका एकी आ
पही राज करनि लाग्यो सो भलौ नाही जैसें चानक मंत्री नें राजा नंदक
कौं मारयौ कहूं वैसें न होय॥ राजा पूछी यह कैसी कथा है तहां दमनक
कहतु है॥ ॥ ॐ ॥ ॥ काहू देस में नंदक नाम राजा॥ वाकौ चानक नाम
मंत्री सु राजा वा मंत्री कौं आपनें राज काज कौ भार दै आप निश्चिंत हो
य॥ आनंद करनि लाग्यौ॥ अरु मंत्री राज एक दिन वह राजा प्रधान कौं
लार लै आहेर कौं गयो॥ वन में जाय ऐक मृग देख्यौ॥ वाके पाछै विन
नि घोरा दपटे तब और लोग हू झपटे॥ पर इनके अश्वन की समान
काहू की अश्व न पहुंच्यौ॥ पुनि सब लोग अटपटाय पाछै रहे॥ औ
वे दोऊ आगै गये जब हिरन चपरि उनके हाथ तें वन में पैठ्यौ॥ तब
राजा हू घाम प्यास कौ मारयौ घोरा तें उतरि एक रूख तरै बैठ्यौ॥ निदा
न वह महीपति आपनो हय प्रधान कौं थंभाय तृषा कौ मारयौ वहां तें
जल खोजतौ चल्यौ कितेक दूर जाय देखै तौ एक वापी निर्मल जल भ
री वाहि दृष्ट परी॥ वह अमृत प्रमान प्रसन्न ह्वै वामें नीर पीवन उत
रयौ॥ जल पी फिरनि लाग्यौ॥ तौ वाने एक पाथर में यह लिख्यौ वांच्यौ कि

राजा औ मंत्री तेज अरु बलमें समान होय तौ हूय मेंतें एक कौं लक्ष्मीत्या
गै॥ यह वांच वह पाहन पै कादौ लपेट मंत्री के ढिग आयौ पुनि मंत्री हू
जल पीवन वा वावरी में गयौ॥ औ उनि देख्यौ अरु कह्यौ कि॥ यह तौ को
ऊ अब ही पाहन पै गारतथेर गयौ है॥ बहुरि उनि पाथर धोय लिख्यौ
पढि निज मनमें कह्यौ ताकौ जानै मोसों दुराव कियौ॥ ऐसें समझि पानी
पी मंत्री राजा के पास आयौ॥ राजा सोयौ तब मंत्रीनें हन्यौ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

यातें महाराज हौं तुमसौं कहतु हौं कि॥ जो बलवान प्रधान होय
सो आपही कौं राजा करि मानें॥ अरु जौ राजा एक ही मंत्रीकौं अधिकार
सौंपै तौ वह गर्व करै॥ औ गर्वतें अज्ञान होय॥ अज्ञान भये वाहि धर्म
अधर्म कौ विचार न रहै॥ कह्यौ है विषमिल्यौ अन्न दियौ दान॥ अरु दुष्ट
मंत्री इनकौं निकट कबहू न राखियै महाराज॥ जो सेवक कौ धर्म हो सो
मैं तुमसों कहि सुनायौ आगे आप की इच्छा मांहि आवै सो करौ॥ संसा
रमें ऐसे लोग थोरे हैं॥ जिनकौ राज औ धन कौ लालसा नाहि॥ तातें मैं तुम
सौं अब स्पष्ट कहि देतु हौं कि वह तिहारौ राज लियौ चाहतु है॥ आगे तु
म जानौ सिंह बोल्यौ॥ संजीवक मेरौ बडौ मित्र है वह मेरौ बुरौ कबहू न चि
तैगो॥ क्यौं कि जो प्रिय है सो अप्रिय न होय॥ कह्यौ है अग्नि घर जरावै॥
तौहू अग्नि विन मरै॥ बहुरि दमनक कही कि महाराज कोऊ कितेक
करौ पर दुरजन औ गंवार आपनौ जातीय सुभाव न छांडै॥ ज्यौं कूक
रा की पूंछ तेल मसलसें कियै॥ तऊ टेढि की टेढी रहै॥ त्यौं नीच कौ स
नमान करियै॥ तौ हू भलौ न मानैं॥ अरु नीम कौं मधु दै सींचियै॥ परवा
कौ फल मीठौ न होय॥ कह्यौ है प्रीतम सो जो आपदा निवारै॥ कर्म व
ह जातें अपजस न होय॥ स्त्री अरु सेवक सो जो आज्ञाकारी रहै॥ बु
द्धिवान वह जौ गर्व न करै॥ ज्ञानी सो जो तृस्ना न राखै॥ पुरुष वह जो
जितेंद्री होय॥ अरु महाराज मंत्री वह जो हितकारि होय॥ संजीवक तिहा
रौ सुखदेवा नाहि॥ यह दुख कौ मूल है याकौं शीघ्र ही नास करौ कह्यौ है॥

जो राजा धनांध कामांध होय ॥ आपनौं भलौ बुरौ न जानें सो इच्छा मातौ र है ॥ अरु जब अहंकारतें दुख पावे ॥ तब मंत्री कौं दोष लगावे ॥ या बात के सुनेंतें ॥ सिंहने जीमें विचार्यौ कि विन समझे बूझे काहू कौं दंड देनौं उचित नाहीं ॥ पुनि दमनक कही पृथ्वीनाथ ॥ संजीवक आज ही तिहारे मारिवेके उद्यम में लाग्यौ है ॥ तुम वाहि बुलावौ अरु भेद दुरावौ कह्यौ है ॥ मंत्र औ बीज गुप्त राखिये ॥ जो गुप्त न राखिये तौ वाकौ फल न होय ॥ अरु दुष्ट कौ यह सुभाव है कि पहिले मीठी मीठी बातें कहि मन धन हाथ कर लेइ पाछे दुष्टता करि वाकौ सर्वस खोय देइ ॥ जैसें शकुनने दुर्योधन कौं कपट सिखाय ॥ महाभारत करवायौ ॥ पिंगल कही वह हमारौ कहा करिहै ॥ बहुरि दमनक बोल्यौ कि महाराज तुम यह जिन जानौं कि ॥ हम वलवान हैं ॥ कह्यौ है ॥ समय पाय छोटौ हू वडौ काज करै ॥ जैसें एक टिटोरनें समुद्र कौं महा व्याकुल कियौ ॥ राजा पूछी यह कैसी कथा है तव दमनक कहिवे लाग्यौ ॥ ॥ ॥ समुद्र के तीर एक टिटोर औ टिटिहिरी रहै ॥ जब टिटीहिरी गर्भसों भई ॥ तव वानें आपनें स्वामी सों कह्यौ कि ॥ रे स्वामी मोहि अंडा राखिवे कौं ठौर बताव उनि कही यह तौ नीकी ठौर है ॥ पुनि टिटिहरीनें कह्यौ ॥ ह्यां तौ समुद्र की तुंग तरंग आवति है वह हमें दुख देहै ॥ तौ हमहूं याकौ उपाय करिहैं ॥ बहुरि टिटिहरी हंसिकै बोली कहां तुम औ कहां समुद्र ॥ यासौं प्रथम ही विचार करि काज करौ तौ पाछे दुख न होय पुनि टिटोर कह्यौ तुम निचिंताई सों अंडा धरौ ॥ फेर हम समझ लैहैं ॥ यह बात सुनि वानें तहां अंडा दये अरु समुद्र हू वाकी सामर्थ देखिवे के लये लहर सों अंडा बहाय ले गयौ तव टिटीहरी बोली ॥ रे स्वामी अंडा तौ सागर वहाय ले गयौ ॥ अव कहा करैगौ सो कर टिटोर कही ॥ हे प्रिये तू कछु चिंता जिन करै ॥ हौं अवही लै आवतु हौं ॥ इतनौं कहि वह सव पंछियन कौं साथ लै ॥ गरुड के पास गयौ अरु गरुडने श्रीनारायणसौं जाय कह्यौ ॥ श्रीनारायण जूनें

समुद्रकौं दंड़दै॥ आज्ञाकरी॥ विन अंडा पाछे द्ये॥ तव वह सद्पक्षी समेत अंडाले आपने घर आयौ॥ तातें महाराज हौं कहतु हौं कि विन काम परे काहूकी सामर्थत्ता जानी नजाय॥ बहुरि राजा कही॥ हम कैसें जानें कि वह हमतें लरिबे कौं आवतु है॥ दमनक बोल्यौ महाराज वाकौं तौ सींग कौ वल है॥ जब सींग साम्हनें करै तब॥ जानियौं अरु जो तुमतें होसकै सो करियौ॥ ॥❁॥ ॥ इतनी वात कहि हातें उठि॥ दमनक संजीवक वरध के निकट गयौ॥ औ मुख सुखाय वाके सनमुख ठाढो भयौ॥ तद उनि यातें कुशल पूछी॥ इन उत्तर दियौ मित्र सेवक कौं काहे की कुशल क्यौं कि॥ वाकौ तौ मन रात्रिदिन चिन्ताहीमें रहतु है अरु विशेष राजा कौ सेवक तौ सदा सर्वदा भयमान रहतु है क्यौं है॥ द्रव्य पाय कानें गर्व न कियौ॥ संसारमें आय कानें आपदा न भुगती॥ काकौ मन स्त्रीके वस न भयौ॥ कालके हाथ को न पर्‍यौ राजाका कौ मित्र भयौ वेस्या काकी स्त्री भई॥ वैरी के फंद को न पर्‍यौ॥ जब दमनक नें ऐसी ऐसी उदासी लियें वातें कहीं तब संजीवक वोल्यौ कि मित्र तुमपर ऐसी कहा गाढ परी जो ऐसे उदास वचन कहतु हौ॥ तुम मोसौं तौ कहौ॥ दमनक कही हितू॥ मैं बडौ अभागौ हौं॥ जैसें कोऊ समुद्र मांहि डूवत सांप कौं पाय न पकरि सकै न छांडि सकै॥ तैसें हौं हू एक वात है ताहि न कहि सकौं॥ न कहे विन रह सकौं॥ क्यौं कि कहौं तौ राजा रिसाय॥ न कहौं तौ मेरौ धर्म जाय॥ तातें दुख समुद्रमें पर्‍यौ हौं॥ संजीवक बोल्यौ मित्र जो तिहारे मनमें है सो कहौ॥ इन कही भाई हौं कहतु हौं॥ यह वात अप्रगट राखियौ अरु जो तिहारी बुद्धिमें आवै सो कीजो॥ क्यौं कि तुम ह्यां हमारी बाहतें आये यातें अपजस सौं डरि आपनौं परलोक संभारवे कौं तुम्हैं सावधान कियें देतु हौं॥ तुम चौकस रहियौ॥ क्यौं आज तुमपर कुदृष्ट है॥ उननि मोसौं कह्यौ कि आज संजीवक कौं मारि सकल परिवार कौं तृप्ति करिहौं यह वात सुनि संजीवकनें अति

दुखपायौ॥तद दमनक बोल्यौ कि प्रीतम तुम जिन दुख करौ अब जो बुद्धिमें आवै सो करौ॥ बहुरि संजीवक कही यह काहूनें सांच कह्यौ है जो कृपनकैं धन होय॥ मेंह ऊसरमें बरसे॥ सुंदर स्त्री नीचसों रति करै राजा कुपात्रकौं बढावैं इतनी कहि उनि निज मनमें बिचार्‍यौ कि यह आपसों कहतु है कै राजानें ऐसौ बिचार्‍यौ है॥ यौं सोचि पुनि मनही मन कहनि लाग्यौ कि उज्जल के संग मलीन मलीनता करि सोभा न पावै॥ जौं काजरतैं नेत्र सोभा पावैं पर काजर सोभा न पावै तातैं याकी कहा सामर्थ है॥ जो यह आपतें कहै॥ उनहीं कही होयगी॥ मैं तौ सावधानी सों सेवा करतु हौं राजानें ऐसा मेरौ कहा अपराध देख्यौ जो मन मैलौ कियौ॥ पुनि बूझ्यौ कि याहू में अचरज नाहिं क्यौं कि॥ जैसें कोउ देवता की अति सेवा करै॥ अरु वह वाहि थोरे ही दोषमें भ्रष्ट करि डारै॥ तैसें राजाहू नेक दोषमें मारै॥ अब याकौ कछु उपाय नाहिं ऐसें संजीवकनें आपनें मन मांहिं समझि बूझि दमनक तें कही॥ भाई॥ मैनें राजाकौ ऐसौ कहा काम बिगार्‍यौ है॥ जो उनि ऐसी बिचारी॥ अब हौं वाकी सेवा न करौंगो क्यौं कि राजसेवा करनौं महा कठिन है॥ जो भलौ काम करै बुरौ मानें ताकी सेवा करनीं जोग नाहीं॥ अरु राजाकी प्रीति ओर लौं नाही रहति कह्यौ है॥ असाध कौ उपकार करनौं औ मूर्ख कौं उपदेस देनौं वृथा है॥ पुनि ज्यौं चंदन में सर्प पानीमें सेवार॥ आपतें आप आवति है त्यौं सुखमें दुख हू आय घटतु है॥ पुनि दमनक बोल्यौ मित्र॥ दुष्टजन प्रथम दूरतें आवतु देखि जो आदर करि बैठाय हित सों प्रियवचन कहै सो न जानियै कि वह पाछै कहा दुष्टता करै कहतु हैं समुद्र तरिबे कौं जहाज़ अंधकार कौं दीपक गरमी कौं बीजना मातेगज कौं आंकुस ऐसे बिधाता नें सबके उपाय बनाये हैं पर दुष्टजन के मन कौ कछु यत्न न करि सक्यौ बहुरि संजीवक कही भाई॥ हौं धान पानी कौ खानि हारै होय याके बस कैं़ौ रहौं॥ कह्यौ है राजा के चित्तमें मित्र भेद पर्‍यौ मिटतु नाही ज्यौं स्फटिक

कौ पात्र टूटि फेरि न जुरै त्यौं नरपति कौ मन हू उचटि फेरि न मिलै॥ कह तु हैं राजा कौ क्रोध वज्र तुल्य है पर एक समय वज्रसों बचै पै भूपाल के क्रोध से कब हू न बचै॥ तातें अब दीन होय मार खानौ नीकौ नाहीं बरन संग्राम करि मरनौ भलौ॥ क्यौं कि सूरा तन में दोय बात जीते तौ सुख भोगवै औ मरै तौ मुक्ति पावै॥ यासों या समय युद्ध करनौं ही उचित है फेरि दमनक बोल्यौ अहो मित्र॥ तुमतें हौं कहे देतु हौं कि जब वह कान पूंछ उठाय मुख पसारै ता बेर तुम तें जो पराक्रम बनि आवै सो कीजो॥ वा में काहू भांति कसर जिन कीजो कह्यौ है॥ बलवंत होय आपनौं बल न प्रकासै तौ निरादर पावै॥ जैसें तेज हीन अग्नि कौं सब कोऊ उठावै तैसें निबल मनुष कौं सब सतावैं॥ इतनौ कहि दमनक बोल्यौ भाई अब ही यह बात मन में राखौ काम परे बूझी जायगी ऐसें कहि दमनक संजीवक सों बिदा होय करटक के ढिग गयौ॥ तब उनि पूछ्यौ हितू तू कहा करि आयौ दून कही मैं दोउ अन मांहिं बैर कराय आयौ पुनि करटक कही या में संदेह नाहीं॥ कह्यो है दुष्ट जन कहा न करि सकै॥ क्षिमा तें को न पंडित कहावै पुनि कैसो हू बुद्धिवान होय पर असाध की संगति तें बिगरै ही बिगरै॥ क्यौं कि दुष्ट के संग तें जो न होय सो थोरौ॥ जैसें अग्नि जहां रहै तहां ई जरावै ऐसें दोऊ बतराये पुनि दमनक पिंगल के निकट गयौ कर जोर सन्मुख ठाढौ भयौ अरु बोल्यौ महाराज सावधान होय बैठौ पशु युद्ध करवे कौं आवतु है॥ ज्यौं ही सिंह संभल बैठ्यौ त्यौं ही बिजार क्रोध भर्यौ वा बन में पैठ्यो॥ पुनि जिम वाहि देखि सिंह उठि धायौ तिमि यानें हू पहुंचकै सींग चलायौ अरु दोऊ पशु यथा शक्ति लरै निदान सिंह के हाथ तें बरध मार्यौ पर्यौ तब सिंह पछतानि लाग्यौ कि हाय॥ मैं यह कहा कियौ जो राज औ धन कौ लोभ करि वा परे तम भन्न खानि वारे बिजार कौं मारि महा पाप सिर लियौ॥ या संसार में धन के भागी अधिक हैं पर पाप बंटावनिहारो कोऊ नाहिं कह्यौ है सिंहराजा

सोजो गजराज कौं पछारै॥ पुनि दमनक बोल्यौ महाराज यह कहां कीरीति है जु तुम शत्रुकौ मारि पछतात हौ॥ राजधर्म में कह्यौ है कि पिता भ्राता पुत्र मित्र जो राज लैन की इच्छा करै ताहि नरपति बिन मारै न रहै जो बडौ धर्मी होय तौ हू दया न करै॥ पुनि जो सन्यासी कौं छिमा भूषन है सैं हीं राजा कौं दूषन बहुरि नीति शास्त्र में कह्यौ है॥ दयावंत राजा सर्व भक्षी ब्राह्मन कामातुर स्त्री सेवक शत्रु दुष्ट मित्र असावधान अधिकारी॥ औ गुननाशक आदि जित्तनें हैं तिन्हैं तत्काल सागिये॥ पुनि ऐसें हू कह्यौ है कि॥ जैसी वेस्या तैसो राजा कहूं लोभी कहूं दातार कहू सांचो कहूं झूठौ कहूं कठिन कहूं कोमल कहूं हिंसक कहूं दयाल अरु सदा अधिक धन जन चाहै याभांति दमनकनें राजा सिंह कौं समझाय बुझाय वाकौ शोक मिटाय राज पाट पर बैठायौ॥ अरु पुनि आप मंत्री हो सब राज काज करनि लाग्यौ इतनी कथा कहि विस्नुशर्मा नें राजपुत्रनि कौं आसीस दयी कि॥ महाराज कुमार तिहारे शत्रुनिकौ मित्रभेद होय अरु मित्रनि कौं कल्यान॥ इति सुहृद्भेदो नाम द्वितीय कथा संग्रहः संपूर्णः॥ २॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ विग्रहः॥ ॥

विस्नु शर्मा जब और कथा की आरंभ करनि लाग्यौ तब राजपुत्रनि कही अहो गुरुदेव॥ अब विग्रह सुनिबे की लालसा हम कौं है सो कृपा करि सुनाइये विस्नु शर्मा बोल्यौ महाराज कुमार तुम शांत सुभाव होय सुनौं हौं विग्रह की कथा कहतु हौं॥ एक हंस औ मोर बल बुद्धि राज प्रताप में समान हे॥ पर एक कागनें बिस्वास घात करि हंस कौं हरायौ अरु मोर कौं जितायौ राजकुमारनि कही यह कैसी कथा है तब विस्नु

शर्मा कहनि लाग्यौ॥ ॥ ॥ ॥ कर्पूर द्वीप के मांहिं पद्मकेलनाम एक सरोवर है का हू समैं तहां के सब पंछियन मिल एक हिरन्य गर्भ नाम हंसकौं राजा कियो सो व्हां राज करनि लाग्यौ॥ कह्यौ है॥ जहां राजा न होय तहां की प्रजा सुख सों न रहै जैसें समुद्र में बिन केवट नाव न चलै तैसें संसार में हू राजा विन धर्म न निभै॥ राजा प्रजा की नित नित्त अधिकाई चाहै निज पुत्र की समान जानैं॥ अरु जो राजा प्रजा कौं पालन करि न बढावै सो जगत में प्रतिष्ठा हू न पावै॥ आगे एक समय वह राजा हंस रत्न सिंहासन पर सभा मांहिं बैठ्यौ हो तहां कौन हू द्वीपतें एक दीरघ मुख नाम बगुला आयौ औ दंडवत्त करि हाथ जोरि राजा हंसकै सन्मुख ठाढो भयौ तब राजा नें बाहि आदर करि बैठाय पूछ्यौ कि अहो दीरघ मुख॥ जा देसतें तुम पधारे॥ तहां के समाचार कहो उनि कही महाराज॥ याही बात के लयै तौ हौं तिहारे ढिग आयौ हौं कि॥ जंबू द्वीप में विंध्याचल नाम एक बड़ौ परवत्त है तहां के सब पंचियन कौ राजा मयूर है सो वा ठाम बसतु है तिन मोहि वचननि में चतुर देखि पूछ्यौ कि तू कहां तें आयौ॥ औ को है॥ तब मैं कही कि कर्पूर द्वीपतें तौ मैं आयौ अरु व्हां के महाराज हिरन्य गर्भ कौ सेवक हौं॥ तिहारौ देस देखिबे कौं ह्यां आयौ हौं तब उनि पक्षियन कही कि तिहारे हमारे देस आ राजानि में कौन भलौ है पुनि मैं कही कि तुम कहा कहतु हौ॥ अरे कर्पूर द्वीप तौ स्वर्ग समान॥ अरु आज राजा हंस दूसरौ इंद्र है॥ या बुरे देस में तुम क्यौं परे हौ॥ चलौ हमारे देस में वसौ॥ जब यह बात मैं कही तद उनि परखेरुवन मोपै अति क्रोध कियौ॥ कह्यौ है कि जैसें सर्प कौं पय प्याये अधिक विष बढै॥ तैसे पंडित कौ उपदेस मूरख के मन में न आवै वरन वह उलटौ वाही कौं सतावै॥ जौं वानर कौं उपदेस दै॥ विचारे पक्षियन आपनौं कियौ आप पायौ राजा पूछी यह कैसी कथा है॥ तद बक कहनि लाग्यौ॥ ॥ ॥ ॥ नरमदा नदी के तीर एक पर्वत ताके तरे एक सेमर कौ

रूख॥ वापै पंछी आपनें घौंसुवा बनाय॥ सुखसों रह्यौ करैं एकवेर वरषाकाल में भादौं की अंधियारी रात्रि समय दामिनी दमकि दमकि घटा घेर घेर आई अरु बडी बडी बूंदनि घन गरज गरज जल मूसल धार लाग्यौ बरसन ताही काल एक वानर वा पहारतें भींजतु उत्तरि सीतकौ मार्‍यौ थर थर कांपतु ताही रूख तरै आय बैठ्यौ॥ वाहि दुखित देखि दयाकरि पक्षियन कह्यौ अरे वनचरतू देखितौ सही कि हमनि आपनी चोंच सों तृन आनि घर कियो है॥ तोहितौ भगवाननें हाथ पाय दये हैं तैंनें क्यौं न घर वनायौ॥ जो तैं घर बनायौ होतौ तौ यासमैं सुखसों पाय पसारैं सोतौ॥ यह सुनि वा मरकटनें जान्यौं कि ये पक्षी या समैं निज घर में सुखसों बैठे हैं॥ ताहीते मों पंडित कौं मूरख जानि उपदेस देतु हैं यह समझ वह हंसके वोल्यौ अरे॥ बरषा वीते तुम मेरौ कियौ देखियौ॥ इतनौ कहि वह क्रोध करि मष्ट मारि बैठ्यौ॥ इतेक मांहि भोर भयौ॥ अरु मेह उघरि गयौ॥ जव श्री सूरज देवनें प्रकाश कियौ॥ तब वह वा रूख पर चढि सब पंछियन के अंडा भूमि में पटकी घौंस चा खसोट कै वोल्यौ॥ अरे मूढ पक्षियौ॥ जे अंहित हैं ते कहा घर करवे कौं असमर्थ हैं॥ तिन कौं तौ सुभाव ही है कि घर ना ही करतु यह वा की वात सुनि॥ वापरे पखेरू मौन साध रहे तातें हौं कहतु हौं कि॥ मूरख कौ उपदेस कबहू न दीजै॥ पुनि राजा बोल्यौ आगे कैसी भाई सो कहो वगुला बहुरि कहनि लाग्यौ महाराज पुनि उनि पक्षियन मोसों रिसाय के कह्यौ अरे तेरे हंस कौं राजा किन कियौ मैं कह्यौ रे तेरे मयूर कौं किन राज दियौ॥ या वात के सुनें तें वे मोहि मारन का उठे तब मैं हूं आपनौं पराक्रम दिखायौ कह्यौ है॥ मनुष कौं और समैं छिमां वूझियै पर जब शत्रु लरवे कौं आवै तब पराक्रम ही करनौं उचित है॥ जैसें नारी कौं लाज आभरन है तैसें रति समैं ढिठाई हू आभूषन है राजा हंस कही जो आपनौं औसर न देखि क्रोध करै सो अतिदु·

ख पावै अरु ऐसेही जो आपनी सामर्थ्य न जानि चेष्टा करै सोऊ ज्यौं आ
पनी सामर्थ्य न जान बाघ कौ चाम वोढि येक गदहा मार्यौ गयौ ॥
बक बोल्यौ यह कैसी कथा है तहां राजहंस कहतु है॥ ॥❀॥ ॥

हस्तिना पुरमें एक विलास नाम धोबी रहै ताके घर एक गदहा
वापै बोझ लादतु लादतु जद वाकी पीठ पर चांदी परी तब वह धो
बिया गदहा कौं रात्रिके समय बाघ कौ चाम वोढाय ॥ काहू जव के
खेतमें छोडि आयौ ॥ वा खेत कौ रखवारौ ताहि देखत ही पराये ॥
याही भांति यह नित नित वा कौ खेत खाय खाय आवै तद वा रख
वारेनें नाहर मारवे कौ यत्न कियौ ॥ औ वाही खेत की पगार के निक
ट धूरी कामरी वोढि धनुष चढाय आपहू काहू झूड तरै दबकि र
ह्यौ है पहरराति के समैं अंधेरे में गदहा आयौ ॥ आ याकी धूरी का
मरिया कौं देखि गदही जानि वह कामांध होय रैंकतु धायौ पुनि र
खवारेनें जान्यौं कि यह तौ गदहा है पर बाघ कौ चाम वोढि आयौ
है ऐसें कहि क्रोध करि रखवारेनें वाहि लौठियन लौठियन मारि गि
रायौ वाकौ प्रान गयौ ॥ तातें हौं कहतु हौं कि ॥ आपनौं वल विचा
रि काज कीजै॥ ॥❀॥ ॥ इतनी कथा कहि पुनि राजा हंस बोल्यौ ॥
आगे जो भई सो कही बगुला कहनि लाग्यौ महाराज ॥ उन पक्षियन
मोसौं कही अरे दुष्ट बगुला ॥ तू हमारे देसमें आय हमारेई राजा की
निंदा करतु है ॥ इतनौं कहि उननि मोहि चोंचनि सों मार्यौ अरु क
ह्यौ अरे जैसें कुआ का दादुर कुआही कौं सराहै ॥ तैसें तू है अरु ते
री राजा यह सुदेस छुडाय तू हम कौं वा कुदेसमे जैवे कौं कहतु है ॥
रे मूर्ख कह्यौ है ॥ चेष्टा करि बडी रूख सेइयें ॥ जौ फल न मिलै तौ सीरी
छांह बैठवे कौं तौहू मिलै ॥ अरु वोछे की संगति तें प्रभुता जाय ॥ जैसें
कलाल के हाथ में दूध को बासन होय तौहू जो देखै सो कहै यामें मदि
रा होगी ॥ अरु बडे के नाम तें हू बडाई पाइयें ॥ जैसें चंद्रमा के नाम तें ससा

सुखी भये यह सुनि मैं उनितें पूछी यह कैसी कथा है पुनि विन मैं तें एक पक्षी कहनि लाग्यौ॥ ॥ ॥ एक समै वरषाकाल विन वरसे वनमें पानीकी अति खैंच भई तब ह्यांके हाथियन आपनें यूथपतिसों कही स्वामी ह्यां विन पानी प्यास के मारे मरतु हैं यह सुनि गजराजनें एक सरोवर पहारमें वतायौ॥ वाके तीर ससा बहुत रहैं जब गज वहां जलपीवनकौं गये इनके पायन तरें बहुतसे ससा चांपे गये तब एक सिलीमुख नाम ससा हो वानें विचारयौ कि जो या भांति ये हाथी इत आयहैं तौ एकहू ससा जाति हमारी यहां जीवतु न रहैगी यह बात सुनि एक विजय नाम अति वृद्ध ससा बोल्यौ अहो तुम अब भय जिन करौ॥ मैं या उपाध कौ यत्न करिहौं॥ इतनी कहि वह वहां तें उठि चोल्यौ॥ औ गैलमें चलत चलत वानें मन मांहिं कह्यौ कि॥ हाथियनके निकट कैसें जैंहौं॥ वे तौ छूवत मारैं इतनी सोच वह एक पर्वत पै चढि दिखाई दियौ॥ अरु इन जद उनतें रामराम करी तद विन मैं तें एक गजमर्व करि बोल्यौ और तू को है इन कहीरे हौं चंद्र दूत हौं॥ औ तिहारे पास आयौ हौं॥ पुनि उननि कही आपनें आवन कौ प्रयोजन कहौ इन कही मोंहि चंद्र महाराज नें यह कहि तुम पास पठायौ है कि आज तुमनि आय हमारे या चंद्र सागरमें पानी पियौ॥ सो तौ भली करी॥ पर तिहारे पायन तरें हमारे ससा चांपे गये॥ यातें हम तुमतें अति प्रसन्न भये क्यौं कि हमारी ओरतें ससा ही या सरोवर के रखवारे हैं मैं इनकी रक्षा करतु हौं याहीतें मेरौ नाम लोग ससी कहत हैं यह सुनि गजराज बोल्यौ कि भाई तू यह सांच कहतु है पुनि ससानें कह्यौ कि यह धर्म दूतको नहोय जो मिथ्या भाषै कह्यौ है॥ दूतकौं कोउ मारिवेकौं हू ले जाय पर वह झूठ न बोलै॥ ऐसें सुनि गजराज भयमान होय बोल्यौ कि आज हम इत अनजाने आय कढे पर बहुरि न आयहैं॥ पुनि ससानें गजपतिसौ कह्यौ कि॥ तुम निज मन मैं कछु जिन उ

रै हौं तिहारौ अपराध चंद्रदेवसौं कहि क्षमा कराय हौं ॥ ऐसें वाकौ संवोधन करि रात्रि भये गजराज कौं सरके तीर लै जाय चंद्रमा कौ प्रतिविंव दिखाय हाथ जुरवाय आप पुकारिकै वोल्यौ हे चंद्र महाराज ॥ ये वापरे गज तिहारे सरोवर पै अनजानैं आय कढे है ॥ इनकौ जो अपराध भयौहै सो आप छिमा कीजे ॥ पुनि इनतें ऐसौ कवहू न होयगौ ॥ इत्तनौ कहि वानें हाथियन कौं विदा कियौ ॥ औ विननि हू जलमांहिं प्रतिविंव देखि सस जान्यौ कि चंद्रमा सरोवरमें आयौ है ॥ ताते हौं कहतु हौं कि वडे के नामही तें कार्य सिद्ध होय ॥ ❧ ॥ ❧ ॥

यह सुनि महाराज पुनि मैं कही अरे हमरौ राजा वडौ प्रतापी है यह सुनि वे पक्षी मोंहि पकरि राजा मयूर के निकट लै गये ॥ मोसौं दंडवत करवाय हाथ जुरवाय वाके सन्मुख ठाढौ राखि ॥ विन पक्षियन राजासौं कह्यौ महाराज ॥ यह दुष्ट वगुला हमारेही नगर में रहि हमारी ही निंदा करतु है ॥ राजा कही अरे यह कोहै औ कहांतें आयौ है ॥ पक्षियन उत्तर दियौ महाराज यह कहतु है कि हौं कर्पूर द्वीप के हिरन्य गर्भराजा कौ सेवक हौं वाही देस तें आयो हौं यह सुनि वा राजा कौ मंत्री गीध वोल्यौ कि ॥ तेरे राजा कौ मंत्री कोहै ॥ मैं कही सर्वज्ञ नाम कछुवा सोई सब राजकाज में प्रधान है गीध वोल्यौ कि कह्यौ है जो सदेसी कुलवंत युद्ध विद्या में निपुन धर्मात्मा आज्ञाकारी प्राचीन प्रसिद्ध पंडित गुनगाहक द्रव्य उपायक उपकारी हितकारी होय ताकौं राजा मंत्री करै ॥ पुनि एक सुवा वोल्यौ पृथ्वीनाथ या जंबूद्वीप केही मांहिं कर्पूरद्वीप है अरु वहां आपकौही राज है या वात कौं सुनि वह राजा वोल्यौ कि तू सांच कहतु है सौ हमारेही देसमें है कह्यौ है राजा वालक उनमत्त धनवंत औ स्त्री ये पांचौं अनपावनी वस्तु लेन कौं हू हठ करै ॥ पुनि मैं कही कि जो वातनही प्रभुनाई पाइयै तौ हौं हू कहतु हौं कि हमारौ राजा हिरन्यगर्भ

हौ सब जंबूद्वीप कौ राजा है वहुरि कीर कही यह कैसें जानिये पुनिमैं कह्यौ ॥ युद्ध कियेही जानिहौ फेरि वह राजा बोल्यौ कि तू आपनें राजा कौं जाय कह हम आवतु हैं तब मैं कही आपनी वसीठ पठावौ ॥ राजानें कह्यौ कौंन कौं पठाईये ॥ मैं कही कि ऐसें कह्यौ है जो स्वामिभक्त गुनवान पवित्र चतुर ढीठ विसन रहित क्षमायुक्त धीर गंभीर संदेसी पराये मनकी जाननिहारौ जाकौ उत्तर न फुरै ॥ ऐसौ होय सो दूत के जोग है ॥ ताही कौं भेजिये ॥ राजा बोल्यौ ॥ ऐसे तौ हमारे ह्यां बहुत हैं ॥ पर कह्यौ है ब्राह्मन कौं पठाइये ॥ क्यौं कि विप्र ससवक्ता औ अहंकार रहित होतु हैं ॥ पुनि मैं कही कि महाराज ॥ प्राचीन लोगन के मुख सुन्यौ है कि निज स्वभाव कोऊ नाहीं तजतु जैसें कालकूट विष मैं महादेव कौ कंठ पायौ पर स्यामता न त्यागी ॥ पुनि मैं कह्यौ कि महाराज सुआ कौं पठाइये तब राजा मयूर नें सुआ तें कह्यौ कि कीर तुम या बगुला के संग जावौ ॥ अरु राजा हंस तें हमारौ संदेसो कहि आऔ ॥ सुक बोल्यौ महाराज की आज्ञा मूंड पै पर या दुष्ट वक की गैल हौं न जैहौं कह्यौ है ॥ दुष्ट जन के साथ रहे ॥ साधु जन हू दुख पावै ॥ जैसें रावन के समीप रहिवा परौ समुद्र बांध्यौ गयौ ॥ पुनि ज्यौं काग के सङ्ग रह हंस औ वटेर मारी गई ॥ राजा पूछी यह कैसी कथा है तब सुक कहनि लाग्यौ ॥ ॥ ❀ ॥

महाराज उज्जैन नगरी की गैल में एक बडौ पीपल कौ रूख ता पर एक काग अरु हंस रहै ग्रीषम ऋतु की दुपहरी मांहिं एक वटोही घाम कौ मार्‌यौ वा की छांह तरै आय शस्त्र खोल सीर कपाय सौयौ जब घरी च्यार पाछै वाके मुख पर घाम आई ॥ तब हंस दया करि वाके मुख पर छांह करि बैठ्यौ ॥ अरु काग दुष्टता करि वाके मुंह पै बीठ करि भाग्यौ ॥ त्यौं ही वटोही जाग्यौ औ वानें हंस कौं तीर तें मार्‌यौ ॥ आगे एक समैं सब पक्षी मिल गरुड़ की यात्रा कौं चले तामें एक वटेर हू काग के साथ चली ॥ तहां गैल में एक अहीर दहेंडी लिये जातु हो सो दहें

डौ कागजुठाय भाग्यौ॥ अरु वापरी बटेर क्रूं मारीगई॥ तातें हौं कहतु हौं महाराज॥ दुष्टको संग काहू भांति करनौ उचित नाहीं॥ पुनि मैं कही माई सुवा॥ तुम ऐसी बात कौं कहतु हौ॥ हमारे तौ जैसे राजा तैसे तुम महाराज॥ इत्तनौ सुनि वह प्रसन्न भयौ॥ कह्यौ है मरखकौ अपराध करि स्तुति कीजे॥ तौ वह प्रसन्न होय जैसें एक खाती स्तुति किये जार सहित स्त्रीकी खाट माथे लै नाच्यौ॥ यह सुनि राजा हंस कही यह कैसी कथा है पुनि बगुला बोलनि लाग्यौ॥ ॥ ॥ श्रीनगरमें मंदबुद्धिनाम एक खाती रहै सो आपनी नारीकौं विभिचारिनी जानें॥ पर वाहि जार समेत कबहू न पावै॥ एकदिन वानें वाके जारको पकरिवेंकै लियें वासों कह्यौकि आज हौं गांव जातु हौं॥ सु तीन चार दिन में आयहौं इतनीं कहि वह बाहर जाय फेरि घर में आय खटिया तरें छिप रह्यौ वाकी स्त्रीनें ताहि गांव गयौ जानि निज जारकौं बुलायौ॥ अरु क्रीडाके समें कछु आहटपाय जान्यौं कि यह मेरी परीक्षा लैनकौं खाटिया तरें लुक्यौ है॥ यौं जानि वह मनमें चिंतति भई अरु जब जार कही रमति कौं नाहीं॥ तब वह बोली आज मेरे घरकौ धनी घर नाहीं यातें मेरे भायें आज़ गांव सूनौं बन खंडसौ लगतु है पुनि जार कही जो तेरी वासों ऐसौ ही सनेह होतौ वह तोहि काहे छांडि गयौ॥ उनि कही अरे बावरे तू यह नाहीं जानतु॥ सुनि कह्यौ है कि स्वामी स्त्रीकौं चाहै कै न चाहै परनारीकौ यह धर्म है जु पतिकौ एक पल हू न बिसारै॥ अरु भरतारकी मारगारी सिंगार जानें॥ सो धर्मकौं पावै॥ औ कुलवंती सती कहावै॥ धनी घरमें रहै कि बाहर पापी होय कै पुन्यात्मा परनारी वाहि न बिसारै॥ क्यौं कि स्त्रीकौ अलंकार भर्त्तार है॥ पतिहीन अति सुंदरी हू नीकी न लागै॥ औ तू जार है सो तौ पान फूल के समान एक घरी कौ पाहुनौ दैव के संजोग आनि मिल्यौ॥ कर्मकी रेख मेटी न जाय विधातासों काहू की कछु न बसाय॥ अरु वह मेरौ स्वामी

हौं वाकी दासी जौ लौं वह भौ लौं मेरौ जीव है वाके मरे हौं सती हौंउगी कह्यो है जो सती होय सो प्रथम तो आपनैं कुकर्म तें छूटै ॥ दूजैं कैसो हू वाको भर्त्तार दुष्कर्मी पापी होय तौ हू जेते देहमें रोम हैं ॥ तेते वर्ष वह निज स्वामी कौं साथ ले स्वर्ग भोग करै औ जैसें गारुडी सांपकौं मंत्र की शक्ति करि पाताल तें बुलावै ॥ तैसें ही सहगामिनी आपनें पतिकौ नरक सों काढि परम गति दिवावै यह वात सुनि वह खाती आपनें जी मांहिं कहनि लाग्यो ॥ धन्य मेरे भाग ॥ जु ऐसी नारी पाई कि आप तरै औ मोहि तरावै वह ऐसें विचारि उछाह कौ मार्‌यो उनही उ ख्रन समेत खाट माथे लै नाच्यौ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ तातें हौं कहतु हौं मूरख दोष देखिहू स्तुति कियें प्रसन्न होय पुनि राजा हंस कही आगे कैसी भई ॥ तव वगुला कहनि लाग्यो महाराज ॥ उनि दूत विदा कियौ है सो मेरे पाछें आवतु है यह जानि जो वूझिये सो करौ या बात कौं सुनि वा राजा कौ मंत्री चकवा बोल्यौ कि धर्मावतार यह वगुला दुष्ट है यह काहू कौ सिखायौ आयौ है ॥ कह्यो है वैद्य रोगी चाहै पंडित गुनग्राहक ढूंढै राजा सूरसेवक खोजै ॥ अधिकारी ठाकुर कौ विग्रह मनावै ॥ पुनि राजा कही या वात कौ विचार जो करनौं उचित होय सो करौ मंत्री कही महाराज प्रथम एक जासूस पठाय उनकौ करतक औ विचार जानिये ॥ क्यौं कि राजा की आंख जासूस है जा राजा जासूस रूपी नेत्र नाहि सो आंधरौ है ॥ अरु जाके अच्छे जासूस होंय सों नरपति घर वैठ्यो सव संसार की विभौ देखे कह्यो है ॥ तीरथ आश्रम देवालय तौ शास्त्र तें जानिये ॥ औ गूढ़ वात जासूस तें तातें महाराज जो जासूस जल थल में जा सकै ताहि पठाइये औ अवही यह वात गुप्त राखियै क्यौं कि जो मंत्र फूटै तो आगलो सावधान होय यातें हौं कहतु हौं कि नीकौ जासूस पठाये युद्ध जीत हो ॥ राजा औ मंत्री ऐसे वतराय रहे हैं पौरिया बोल्यौ महाराज ॥ एक सुआ जंवूद्वीप तें आ

सौ है सुपोरिपै ठाढौ है वाहि कहा आज्ञा होति है यह सुनि राजानें चक
वाकी ओर देख्यौ तद चकवा बोल्यो महाराज॥ पहिलै बाकौं डेरा दि
वाऔ पाछै बूझी जायगी॥ इतनी बात के सुनते ही द्वारपाल वाहि
डेरा दैन गयौ॥ बहुरि राजा कही अहो॥ विग्रह तौ उपजौ चकवा
बोल्यो॥ महाराज मंत्री कौ यह धर्म नाहीं॥ जो स्वामी कौं लराव कै
भगावै॥ कह्यौ है विचार के युक्त सौं बल करै॥ तौ थोरे पराक्रम ही तें
कार्य सिद्धि हो॥ जैसें मनुष काठ की सांग तें भारी पाथर उठावै तैसें
नरपति हू युक्ति किये जै पावै॥ पुनि कहतु हैं॥ यौं तौ सब ही सू
रहैं पर और कौं बल देखि न डरि मन स्थिर राखै॥ ताही कौं बलवा
न कहियै॥ बहुरि जौ समैं पाय काम करै तौ वेग ही सिद्ध होय॥ ज्यौं
बरषा काल की खेती सूरु महत के गुन सुभाव ये हैं कि समैं विन
दूर तें डरावे औसर पाय नेरें आय सूरा तन करै आपदा में धीरज
राखै सब बात की सिद्धि में उतावली न करै॥ कह्यौ है धीरै पानी
परवत फोरै महाराज॥ चिरबरन राजा बडो बली है॥ बलवान
के सनमुख युद्ध करनौं जोग नाहीं जो निबल सबल के सनमुख
होय लरै तौ दीपपतंग की भांति होय कै जैसें कोऊ चैंटिन कौं
पाथर न मारै तैसें मारौ जाय॥ पुनि कह्यौ है॥ सनमुख युद्ध करि
वे कौ काल न होय तौ कछुवा के से पाय सकेल बैठियै॥ पाय नाग की
सौ फन निकारियै क्यौंकि समैं जान छोटौ हू उपाय करै॥ तौ बडे
कौं मारै॥ ज्यौं बरषा काल पाय नदी कौ प्रवाह ठाढे रूख कौ गि
रावै सौं समैं लहि सब काम हाथ आवै यातें सनमुख लरवे कौं वि
चार न करि गाढ संवारियै तौलौं वाके दूत कौं गिरावै सौं समैं लहि
सब काम हाथ आवै॥ यातें सनमुख लरिवे कौं विचार न करि गढ
संवारियै तौलौं वाके दूत कौं विरमाय राखियै॥ कह्यौ है कोऊ
पर कौ एक जोधा सहस सों लरै॥ पुनि जा राजा के देस मां हिं गढ

नाहिं ताकौ राज शत्रु वेगही लेय॥ कोट विन राजा कौ राज स्थिर न रहै तातें महाराज अब कोट वनाइये कह्यौ है॥ नदी के तीर गढ रचियै तरें खाई खनाइये चारों वोर निविड वन राखियै औ पैठवे निकसवे कों गैल भांति भांति के अस्त्र शस्त्र यंत्र गोला भरियै अरु अन्न रस धन जन कौ संचय सदा करियै॥ राजा वोल्यौ गढ साजवे का काज कौन कों दैंय मंत्री कही जो चतुर होय ताकों देउ पुनि राजा कही॥ या काज मांहिं तौ सारस निपुन है प्रधान कही॥ वाही कों दीजिये॥ वहुरि राजानें सारस कों बुलाय करि कह्यौ कि॥ तुम नीकी ठौर देखि गढ रचौ उन कही महाराज मैं या सरोवर कों अनेक दिन तें तक राख्यौ है कि॥ याहि मांहिं गढ रचिये तौ भलौ क्यौं कि याके तीर अन्न अधिक होतु है॥ अरु अन्न हीतें सब कछु होतु है कह्यौ है॥ रत्न औ कंचन सब वस्तु सों उत्तम है परम तुष कों अन्न विन न सरै जैसें नौन विन सब फीकौ॥ तैसें अन्न विन कछु न नीकौ॥ पुनि राजानें सारस सों कह्यौ॥ तुम वेग जाय गढ रचौ॥ इतेक मांहिं पौरिया आय वोल्यौ कि धर्मावतार संगल दीपतें एक काग मेघवरन नाम आयौ है सु आपके दरसन की अभिलाषा किये द्वार पै ठाढौ है॥ मोहि कहा आज्ञा होति है राजा कही काग दूरदर्सी होतु है यातें वाहि राखनौं उचित है मंत्री बोल्यौ॥ महाराज तुम भली कही॥ पर मेरे जान याहि राखनौं जोग नाहीं क्यौं कि यह थल कौ वासी औ हमारे शत्रु कौ साथी है यातें याकौ रहनौं क्यौं हू नीकौ नाहिं कह्यौ है॥ जो राजा आपनौं पंथ छांडि पराई चाल चलै सो राजा कूकर दमनक की भांति मरै राजा पूछी यह कैसी कथा है॥ तब मंत्री कहनि लाग्यौ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

एक समैं काहू स्यार कों नगर के निकट कूकरनि आनि घेर्यौ सो भयमान होय भाग्यौ॥ औ गांव में जाय एक नील के कुंड मांहिं गिर्यौ॥ जब नील वालेनें वाहि मर्यौ जानि वासौं काढि गैल में डारि दियौ तब वह शृगाल भय कौ मार्यौ नगर की गली मांहिं मृतक ह्वै रह्यौ तहां पनिहा

रियन वाछिपसौ देखि आपुस में पूछ्यौ आली यह कौन जंतु है॥ काहूनें कह्यौ वीर॥ यह स्यार है॥ पुनि एक उनमें तें बोली अरी॥ याकौ कान काटि वालक की कंठ में वांधै तौ डाकिनी न लागै॥ दूजी वोली बहिन याकी पूंछ काटि मीडा के गर में डारै तौ भूत पिशाच न लागै तीजीनें झटकार ही लये तव चौथीनें कह्यौ याके दांत तोरि छोहरा कौ गुदरीमें राखै तौ कछु रोग न होय॥ यह वात सुनि वा स्यारनें आपनें मनमें कह्यौ कि या गांव के लोग वडे पापी हैं कान पूंछ काटि अव दांत तोस्यौ चाहतु हैं॥ यातें ह्यां तें भागियै तौ वचियै॥ यह विचारि वह स्यार ह्यां तें पराय वन में आय सोचन लाग्यौ॥ कि अव मेरौ नील वरन भयौ जामें आपनी प्रभुता होय सो करौं॥ यह विचारि वानें सव स्यारनि कौं आनि कह्यौ कि॥ आज या वन के देवता वोंनें निज हाथनि औषधीन तें अभिषेक करि मोहि या वन कौ राज दयौ है तुम मेरौ वरन देखौ यह सुनि विन स्यारनि वाकौ वरन देखि ताकी वात मानि सवनि हाथजोरि कह्यौ कि अव जो कछु महाराज की आज्ञा होय सो करैं॥ तव उनि कही॥ तुम सव मेरे पास रहौ पुनि वे कुरहनि लागे॥ ऐसें जव उनि आपनें सजातीन में आदर पायौ तव औरहू वन के जीव वाघ चीता आदि सव आज्ञाकारी भये॥ पुनि उनि स्यार खेद दये॥ तद वे स्यार सव जुरि चिंता करि कहनि लागे कि अव कहा करैं॥ वहुरि विनमें तें एक वूढौ जंवुक वोल्यौ अरे तुम जिन पछतावो मैं याकौ भेद पायौ है कि यह गाव में तौ पूंछ कान कटाय आयौ॥ अरु ह्यां आय इन आपनौं नाम राजा कूकर दमनक धरायौ॥ ये सिंह चीता अनजानतें याकी सेवा करतु हैं तातें मैं एक उपाय विचास्यौ है कि सांझ समैं सव स्यार इकठे होय याके सनमुख पुकारौ तव यह हू जाति कौ सुभाव न छांडि उनमें वैठि वोलि है कह्यौ है जो कूकर कौं राज होय तौहू वह टूटी पन

ही चवाय निजजातकौ सुभाव न तजै ऐसें बूढे स्यार की वात सुनि उननि वैसेंही करी जब राजा कूकरदमनक नाहर चीता न्निमें वैठि वोल्यो॥ तव उननि वाहि मारि खायौ॥ ❀॥ ❀॥ ॥ तातें हौं कहतुहौं कि महाराज आपनैं पंथ कबहू न छांडियै॥ औ घर कौ भेद वात कौ मरम काहू सों न कहियै॥ कह्यौ है खोडरकी आग तरुकौं जरावै॥ यातें महाराज विदेसी कौं भेद कबहू न बताइयै न घरमें राखियै पुनि राजा कही अहो वाततौ ऐसें ही है॥ पर दूर तें आयौ है॥ तातें वाहि बुलाय कै देखियै जो राखिबे जोग होय तौ राखियै नातौ विदा करियै चकवा कही॥ महाराज अबतिहारो गढ साजो गयौ॥ चित्रवरनराजा के दूत कौं बुलाय विदा कीजे॥ कह्यौ है भूपाल औरभूपाल के वसीठ तें एकलौ न मिलै॥ तासों आपनीं सभाके सब लोगन कौं बुलाय वैठारियै॥ तव सुवा कौं बुलवाइयै अरु वाके साथ काग कौं हू यह सुनि राजानें वैसें ही करि विन दोऊ नकौं बुलाय आसन दै वैठाये॥ तव सीस झुकाय कीर बोल्यो अहो हिरन्यगर्भ राजाधिराज तुम कौं श्री महाराज राजाचित्रवरन नें कह्यो है॥ जो आपनौ प्रान राख्यो चाहौ तौ हमारी सरन आऔ नातौ आपनैं रहनि कौ अन्त ठौर करौ यह वात सुनि राजा हंस क्रोध करि बोल्यौ॥ है रे कोऊ जो या वसीठ कौं मारै इतेक सुनि वह काग बोल्यौ महाराज मो कौं आज्ञा होय तौ या दुष्ट कौं मारौं चकवा कही धर्मावतार दूत राजा कौ मुख है तातें या कौ कछु दोष नाहीं जैसें ह्यां सुनी तैसें ह्यां आनि कही॥ यह मिथ्या न भाषै अरु वसीठ के कहे कछु आपनी हानि न वाकी प्रभुता तासों याकौं मारनौं काहू भांति उचित नाहि॥ कह्यौ है जा सभा में बूढौ न होय सो सभा न सोभै॥ सो बूढौ नाहिं जो धर्म न जानैं वह धर्म नाहि जहां सत्त न होय वह सत्त हू नाहिं जहां दया न उपजै ऐसें समझाय मंत्रीनें राजा कौं क्रोध निवारन

कियौ पुनि तोता ह्वांतें उठि चल्यौ नर मंत्रीनें वाहि मनाय बैठायौ औ
वस्त्र अलंकार दिवाय राजातें विदा करायौ ॥ ॥ॐ॥ ॥ जब वह
आपनें राजा के पास गयो तब राजा चित्रवरन नें वातें पूछी सुक ॥
कहौ वह देस कैसौ है सुवा कही ॥ महाराज ॥ पहलै युद्ध की सामा
करौ ॥ पाछे हौं कहतु हौं ॥ राजा वोल्यौ ॥ हमारै लराई कौ सब सा
मान इकठ्ठौ है तुम कहौ ॥ पुनि सुआ कहनि लाग्यौ ॥ महाराज ॥
कर्पूर द्वीप सातवें स्वर्ग समान है ॥ अरु मोंपै वरन्यौं नाहीं जातु
यह सुनि राजामें आपनें सब मंत्रियन कौं वुलायकें कह्यौ ॥ अ
हो कीर कहतु है कि राजा हंसतें युद्ध करै ॥ सो तुमतें पूछतु हौं
कि अव कहा करनौं उचित है ॥ अरु मेरौ हू मनोरथ यह है कि
युद्ध करौं कह्यौ है ॥ असंतोषी ब्राह्मन लाजवती वेस्या ॥ कुलवती
निर्लज्ज औ राजा संतोषी होय तौ ये सब थोरेई दिन मांहिं नष्ट
होंय ॥ यह सुनि राजा कौं मंत्री दूरदर्सी नाम गीध वोल्यौ महा
राज आपनें मंत्री मित्र कटक ॥ प्रजा आदि सब एकमत हौंय
अरु शत्रु के मित्र मंत्री औ प्रजामें विरुद्ध होय तौ युद्ध करियै यह
नीति है राजा कही मेरौ दलमैं सब देख्यौ यह खानिवारौ है परका हू
काम कौ नाहीं यातें तुम वेग जोसी बुलाय मुहूरत देखौ ॥ गीध कही
पृथ्वीनाथ शीघ्रही यात्रा न चूकियै ॥ कह्यौ है ॥ शत्रु विन विचारें वाके
भूमिमें जाइयै तौ नान्हौ हू बडे कौं जीतै ॥ पुनि राजा कही जो परभूमि
लयौ चाहै सो कौन भांतितें लेइ ॥ यह तुम कहौ मंत्री वोल्यौ महाराज
उद्योग करै मन कामना पूरन होय अरु विन उद्योग कछू न होय जै
सें औषध खाये रोग जाय वाकौ नाम लियें न जाय अब महाराज की
आज्ञा प्रमान परभूमि लेवे की रीति कहतु हौं जो राजनीतिमें कही
है ॥ ॥ॐ॥ ॥ प्रथम तौ राजा आपनें मंत्री जोधा महाजन मुखियन
कौं बुलाय सनमान करि साथ लेय अरु शस्त्र वस्त्र अलंकार धन गज

घोडा निज लोगन कौं बांटै॥ जो जाके जोग होय ता कौ तैसौ मन मान मान करै पाछे कटक साथ लै चलै॥ अरु जहां पर्वत वन डर की ठांव होय तहां सेनापती कटक इकठ्ठौ करि चलै॥ भले भले सूर साथ राखै औ रनवास ठाकुर भंडार न्हानें लोग बैपारी बीच मांहिं पुनि राजा औ मंत्री सब पै द्दष्ट राखै औ बनवासी पर्वत निवासी लोग आगे धर लेय बहुरि जहां विषम भूमि होय के बरषा काल होय तौ राजा हाथी पर चढि चलै॥ कह्यौ है॥ गज की देह में आठ शस्त्र हैं॥ चार पांव दै दांत एक सूंड औ माथौ यातें राजा हाथी अधिक राखै तौ भलौ क्यों कि गयंद चलतौ कोट है अरु जो घोडनि पै चढि लरैं तिनतें देवता हू डरैं औ पयादेन कौं बल सदा राखै पुनि परभूमि में जाय राजा सदा सावधान रहै काहू कौ विस्वास कबहू न करै जोगेश्वर की नींद सोवै॥ अरु राजा आपनें साथ द्रव्य राखै क्यों कि धन प्रान तुल्य है॥ बिन धन प्रभुता नाहीं लक्ष्मी पाय को नजू ही मनुष द्रव्य के हेतु सेवा करतु है कह्यौ है नर धन तें बडा औ धन ही तें छोटौ॥ पुनि शत्रु कौ देस लूटि खसोटि क उजारै क्यौं कि॥ तातें अरि दुचितौ होय अरु वाकौ अन्न रस ईंधन न्यारे जो पावै सो लूटि ल्यावै॥ औ गढ गढी औ सर कूप वापी फोरि नाखे बन उपवन वारी काटि डारै॥ ऐसें अनेक अनेक भांति की पीडा शत्रु कौं उपजावै औ आपनें लोगनि तें सदा प्रसन्न होय बतरायौ करै जातें लोग जानें कि हमारौ स्वामी हम सौं संतुष्ट है कह्यौ है॥ ठाकुर के सनमान औ हित वचननें जैसौ सेवक काज करै तैसौ धन दियें॥ अरु कटु वचन तें न करै पुनि जब सेवक काज करि आवै तब वाहि प्रसाद देइ अरु जो प्रसाद न देय तौ वाकी जीविका दूनी कर देय औ यहू न होय तौ ताकौ कमायौ पैसा चुकाय देय अरु जो स्वामी सेवक कौ महीना देत आज काल करि टारै॥ ताकौ किंकर उदास रहै॥ औ असमय पर कानीं देय तातें जो राजा शत्रु कौं जीत्यौ चाहै॥ सो दासनि औ सेवकनकौं

प्रसन्न राखै तौ जहां जाय तहां विजय पावै॥ अरु या वातकौं सुनि अरि
के सेवक भूखे टूटे होंय ते आपतें आप आय मिलैं तौ लरनौं हू न परै
वहुरि रिपुके जीतवेकौ एक वडौ उपाय कह्यौ है कि॥ वाके भाई भांजे
भतीजन सों भेद उपाय करि तिनकौ आदर मान कीजै॥ अरु मंत्री प्र
जाकों हू अपनाय लीजै॥ औ जो लरैं तिनकौ नास कीजै॥ अरु जे सरन
गहैं तिनकों भय मिटाय दीजै॥ अरिकौ देस उजारियै॥ आपनौं वसाइ
यै शास्त्र में कह्यौ है या प्रकारतें राजा चलै तौ युद्ध जीतै पुनि राजा वोल्यौ
मैं जान्यौ जातें आपनी जीत औ शत्रु की हार होय ताकी यह रीति है
पर शास्त्र के पैंडेतें मन की उमंग कौ पंथ न्यारौ है॥ मन की उमंग में जो
शास्त्र विचारै तौ न वनै॥ जैसें अंधकार औ तेज इकठौ न रहै इतनौं क
हि राजाने जोसी वुलाय शुभ मुहूर्त ठहराय भली लगन में दिग विजय
यात्रा करी तव राजा हंसके दूतनें आय आपनें राजासों कही कि म
हाराज राजा चित्रवरन नें मलयाचल परवत के हेठ आय डेरा करे
तुम आपनें गढ की रक्षा करौ॥ औ आपनौं पराभौ कीन्हौं वाकौ मंत्री
अति चतुर है॥ मैं वाकी वातसैं जान्यौ कि उनि हमारौ गढ लेनकों आ
पनौं मित्र काग पठायौ है॥ वहुरि राजा हंस कौं मंत्री चकवा वोल्यौ॥
महाराज या कागकौं न राखियै॥ राजा कही जोय कागवाकौ पठायौ
हो तो तौ वा सुवाकौ मारनि न उठतौ॥ अरु उन तौता के गये पाछै युद्ध
का मता कियौ है यह वातें प्रथम आयौ हो मंत्री वोल्यौ महाराज॥ तऊ
नये आयेतें डरियै॥ राजा कही अहो॥ जो नयौ आयौ आपनौं उपकार
करै ताहि मित्र जानियै अरु वंधु मित्र होय आपने काम न आवै
ताहि शत्रु करि मानियै॥ जैसें वनकी औषधी तुरतकी आई रोगी
के रोगकौं दूर करि सुख देइ॥ तैसें कोऊ कोऊ मनुष हू नयौ आयौ
उपकार करि जस लेइ पुनि ज्यौं भूद्रक राजाके वीरवर सेवकनें अ
ल्प दिननि ही में सहायता करी चकवा वोल्यौ॥ महाराज यह कैसी क

कथा है॥ पुनि राजा कहतु है॥ ॥ ॥ शूद्रक नाम एक राजा वा की क्रीडा कौं एक सरोवर नामें कर्पूर केलनाम राजा हंस हो॥ वाकी बेटी को नाम कर्पूरमंजरी॥ तापै आसक्त होय मैं हां रह्यौ तहां वीरवर नाम एक राजपूत काहू देसतें उद्यम के लिये आय राजद्वार पै ठाढौ भयो॥ अरु उनि पौरियन तें कह्यौ मोहि राजा तें मिलाऔ॥ हौं सेवा करनि के हेत आयौ हौं द्वारपाल यह बात जाय राजासों कही तब राजानें वाहि बुलाय कै पूछ्यो तुम दिन प्रति कहा लेउगे उनि कही चारसौ तोला सुबरन पुनि राजा बोल्यौ॥ और तिहारे साथ कोहै उनि कही॥ है हाथ तीजौ खडग राजा कही इतेक हम तें नदियो जायगो॥ यह सुनि वीरवर जुहार करि चल्यो॥ तब मंत्रीनें राजा सों कही महाराज चार दिन तौ याहि सुवरन दै राखिये॥ औ या कौ पराक्रम देखिये इतेक जोग है कै नाहिं मंत्री की बात मानि राजानें वाहि सोनौ दै राख्यो॥ वादिन कौ कंचन ले॥ वानें आपनें घर जाय आधौ तौ ब्राह्मननि कौं संकल्प करि दियो अरु वाकौ आधौ भूखे भिखारी भिक्षुकन कौं बांटि दियौ औ एक भाग निज भोजनार्थ राख्यो याही भांति वह पुत्र पत्नी स्त्री सहित ह्वां रहनि लाग्यो जब सांझ होय तब खांडो फरी लै राजसेवा में जाय उपस्थित होय एक दिन कृष्ण चतुर्दसी की आधी रात कौं घन घुमडि मेह भयौ॥ ता समैं काहू नारी के रोवन कौ शब्द सुनि राजा बोल्यो कोउ है वीरवर कही महाराज कहा आज्ञा होति है॥ राजा कहीं देखतौ॥ को रोवतु है राजा की आज्ञा पाय वीरवर चल्यौ तब राजानें आपनें मन में विचार्‍यो कि मोहि ऐसौ न बूझिये जु या अंधेरी रैन मौंहिं रजपूत कौ एकलौ पठाऊं तातें याके पाछे पाछे जाय देखें तौ सही यह कहा करतु है या प्रकार राजा मन में विचारि ढाल तरवार गहि वाके पाछे ह्वै लियौ आगे जाय वीरवर देख्यो तौ एक नारी नवजोबना अति रूपवती सव

आभरन पहरें ठाढी धाय मारि मारि रोवति है इनवासों पूछी तू को है उनि कही हौं राज लक्ष्मी हौं ॥ पुनि इन कह्यौ तू रोवति काहे ॥ उनि कही ॥ मैं बहुत दिन या राजाकी भुजानि की छांह में विश्राम कियौ ॥ अरु अब याराजाकौं छांडि जाऊंगी या दुख तें रोवति हौं ॥ इन कही तू काहू भांति हू रहै ॥ उनि कही जो तू निज पूतकौं बलदेइ तौं हौं रहौं ॥ अरु यह राजा अनेक दिन अखंड राज करै ॥ पुनि वीरवर कही माता जी लौं मैं आपनें घर है आऊं ॥ तौ लौं तुम ह्यां रहौ ॥ ऐसें कहि घर जाय वीरवर पुत्र औ स्त्री कौं जगाय ॥ लक्ष्मीके कहे वचन कहिवे लाग्यौ तौ पुत्री हू जागी यह बात सुनि सब चुप रहे तद पुत्र बोल्यौ धन्य भाग मेरे जु यह देह देवी के निमित्त लागै औ स्वामी कौ काज सरै ॥ यामें पिता जू विलंब जिन करौ ॥ क्यौंकि कबहू तौ या काया कौ विनास होय तातें काहू के काज लागै सो तौ भली ही है ॥ कह्यौ है ॥ विद्या धन प्रान पराक्रम जाकौ पराये काम आवै ताही कौ संसार में जन्म लेनौं सुफल है पुनि वीर वर की पत्नी बोली जौ तुम यह कार्य न करौगे तौ राजा के ऋनतें कैसें उतरिन होउगे ॥ ऐसें बतराय सब देवी के मंदिर पै गये अरु पूजा करि ॥ हाथ जोरि इतनौं कह्यौ माता ॥ हमारौ राजा चिरंजीव होय राज करै यह कहि पुत्रकौ मूंड काटि वीरवरनें देवी कौं दयौ ॥ अरु आपनें मन मांहिं कह्यौ कि ॥ राजा के ऋनतें तौ उतरिन भयौ पर अब निपूती होय जगत में जीवनौं उचित नाहिं यह समझि आपनौं हू सीस काटि भवानी के आगू धर्यौ उन दोउ अनकौं मर्यौ देखि वाकी स्त्रीनें विचार्यौ कि संसार में रांड निपूती है जीनौं जोग नाहिं ऐसें ठानि वाहू नें निज माथौ चढायौ विन तीननि कौं मर्यौ देखि ॥ वाकी पुत्रीनें विचार्यौ कि निगोडी नाठी है जगमें जीवनौं भलौं नाहिं ॥ यह समझि विन हू मस्तक काटि देवीके सनमुख राख्यौ यह चरित्र देखि नरपतिनें जी मांहिं विचार्यौ कि मोसे जीव अनेक पृथ्वी में उपजत खपतु हैं ॥

परऐसे सूर नर होनें कठिन हैं॥ तातें अब याकौ कुटुम्ब नास करि मोहि
राज करनौं जोग नाहिं॥ यह सोच समझि॥ ज्यौं भूपाक निज मूंड उतारनि
लाग्यौ त्यौं हीं देवीनें आय कर गह्यौ॥ अरु कह्यौ राजा॥ तू साहस जिन
करै॥ अब तेरे राजमें भंग नाहिं॥ राजा कही माता॥ मोहि राजतें कछु
प्रयोजन नाहिं पुनि॥ देवी बोली हौं तेरे धर्म॥ औ सेवक के कर्म पर संतु
ष्ट भई॥ अब तू जो बर मागै सो देउं राजा कही मा॥ जो तुम तुष्ट भई हौ
तौ इन चारन कौं जीवदान देउ जब उन पाताल तें अमृत लाय॥ विन
चारन कौं जिवायौ॥ तब राजा चुपचाप हां तें चलि निज मंदिर में आ
यौ औ वीरवर हू उन तीनौं कौं घर राखि आप राजा के समीप पहुंचौ॥
नरपतिनें वाहि पूछौ तुम गये हे॥ तहां कहा देखि आये॥ पुनि कर जो
र उन कही महाराज एक नारी रोवति ही॥ जौ लौं हौं वहां गयौ तौलौं वह
चुप रही मैं वाहि न पायौ पुनि मैं वगर आप के ढिग आयौ॥ ऐसें सुनि
राजानें मनमें कह्यौ कि यह कोऊ वडो सिद्ध पुरुष है॥ याकी स्तुति हौं
कहां लौं करौं॥ कह्यौ है दयावंत दानी तपसी सत्यवादी औ सूर जो आ
पनी बड़ाई न करै तौ वाहि सिद्ध पुरुष जानियै॥ आगे राजानें प्रात भये
पंडितन की सभा में वैठि रात्रि की सब वृत्तांत कह्यौ अरु संतुष्ट होय वा
रवर कौं करनाटक देस कौ राज दयौ॥ तातें हौं कहतु हौं॥ सवन ये दू दु
रै न होंय संसार में तीन प्रकार के मनुष होतु हैं उत्तम मध्यम अधम
बहुरि चकवा बोल्यौ महाराज॥ यह काज करवे जोग नाहिं॥ आगे म
हाराज की इच्छा कह्यौ है॥ पराई रीस पंडित चतुर कबहू न करै॥ अरु
जो करै तौ वैसे होय जैसें एक क्षत्रीनें आपनीं तपस्या तें धन पायौ॥
औ वाकी रीस करि एक नाऊनें निज प्रान गवांयौ॥ नरपति कही यह
कैसी कथा है तब चक्रवाक कहनि लाग्यौ॥ ॥ ॥ ॥ अयोध्या
पुरी मांहिं एक चूडाकरन नाम क्षत्री रहै तिन धन के निमित्त अति क
ष्ट करि श्री महादेवजू की सेवा करी तब सदाशिवजूनें वाकौं स्वप्न में द

रसन दै॥कह्यौ अरे आज पाछिली रात्रि समैं सौर होय॥स्नान करि एक नाऊनें निज धाम गवायौ॥नरपति कही यह कैसी कथा है तव चक्रवाक कहनि लाग्यौ॥ ॥कथा॥ ॥अयोध्यापुरी मांहिं एक चूड़ाकरन नाम क्षत्री रहै तिन धनके निमित्त अति कष्ट करि श्री महादेव जूकी सेवा करी॥तब सदासिवजूनें वाकों स्वप्न में दरशन दै कह्यौ कि अरे आज पाछिली रात्रि समैं सौर होय स्नान करि लोठिया कर धरि आपनी पौरि मांहिं कैवारके पाछै लुकरहियौ॥जब कोऊ भिक्षा कौं आवै॥तब वाहि लकुटनि मारि घरमांहिं लहियौ वह सुवरन भरौ कलसहू है॥तातें तू जब लग जीवैगो तब लग सुखी रहैगो यह बर पाय विन दूजे दिन नाऊ को बुलाय वैसेंही कियौ जैसें भोलानाथनें कह्यौ हो जद वह भिखारी सुबरन घट भयौ तद इन लै घर में धर्यौ यह चरित्र देखि वा नौवा नें विचार्यौ कि धन पायवे की जो यही रीति है तो हौं हूं क्यौं न करौं॥ऐसी समझि निज घर आय उनहू एक सन्यासी मार्यौ॥तब वाहि राजा के सेवकनि पकरि लैजाय सन्यासीके पलटि मार्यौ॥तातें हौं कहतु हौं कि औरकी कबहू न करियै॥पुनि राजा कही॥पाछली बात विन करौ॥आगे जो करनैा होय सो करौ मलयागिर परबत के तरें राजा चित्रबरन कौ डेरा है अब कहा करियै सो कहौ॥मंत्री बोल्यौ महाराज हम हू सुन्यौं है कि वह लरबे कौं आयो है पर तुम कछु चिंता जिन करौ हम वाहि जीतिहैं क्यौं कि वानें आपनें मंत्रीं कौं कह्यौ नाहीं मान्यौ कह्यौ है कि जो शत्रु लोभी कूढ आलसी कायर झूठौ औ अधीर होय अरु धन राखन जानें ताहि विन कष्ट मारियै॥महाराज जौलौं वह हमारो गाढ नगर कटक औ घाट बाट नदेखै तौलौं वाके मारिबे कौं सेना पठाइयै ऐसें औरहू ठौर कह्यौ है कि दूरकौ आयौ थक्यौ भूख्यौ प्यासो भयमान असावधान रात्रिकौ जाग्यौ॥ औ परवत तरैं बस्यौ होय ऐसे शत्रु

कौं दौरि मारियै ॥ यातैं उचित है कि अब ही हमारो सेनापति वाके दल कौं आय मारै तौ भलौ यह बात मंत्री तें सुनत प्रमान राजानें सेना पती कौं टेरि आज्ञा दई कि तुम यही समैं राजा चित्रवरन की सेना कौं जाय मारौ उनि वैसें ही करी जब चित्रवरन के जोधा अनेक मारे गये तब वह चिंता करनि लाग्यौ पुनि वाकौ मंत्री गीध बोल्यौ अब काहे चिंता करतु हौ बहुरि राजा कही बाबाजू ॥ अब काहू भांति हमारी सेनाकी रक्षा करौ ॥ ऐसें भयमान राजाकौं देखि गीध बोल्यौ महाराज कह्यौ है कि गर्व तें लक्ष्मी टरै ॥ बुढापो पौरुष हरै चतुर संदेह मिटावै ॥ अभ्यास करे विद्या आवै न्याय प्रताप बढावै ॥ विनयतें अर्थ पावै ॥ अरु मूर्ख राजा होय तौ पंडितनकी सभा तें सोभा ॥ जैसें नदीके तीर रूख हर्यो रहै ॥ ॥ ॥ इतनौं कहि पुनि गीध बोल्यौ महाराज तुमनें आपनों कटक देखि गर्व करि साहस कियौ अरु मेरौ कह्यौ न मान्यौ ता अनीति कौ यह फल है कह्यौ है ॥ जो राजा मंत्र चूकै तौ ताकी नीति कौ दोष है ॥ जैसें कुपथ्य तें रोग होय रोग तें मरै तैसें धन तें गर्व होय औ गर्व तें दुख ॥ पुनि निर्बुद्धि कौं शास्त्र यौं ज्यौं आंधरे के हाथ अरसी ॥ यह समझि हमहू मान गहि रहे ॥ इतेक बातें सुनि राजा नें हाथ जोरि ॥ गीधसों कही बाबाजू मोतें अपराध भयो क्षमा कीजै ॥ अरु अब काहू भांति जो कटक बच्यौ है ताहि साथ लै निज घर की बाट लीजै सुनि गीध कही महाराज ॥ ऐसो कह्यो है कि राजा गुरु ब्राह्मन बालक वृद्ध औ रोगी इन पै ज्यौं क्रोध उपजै सौंहीं जाय तातें तुम डरौ जिन ॥ धीरज धरौ कह्यौ है मंत्री ताही कौ कहियै जो बिगर्यो काज सुधारै औ वैद्य सो जो सन्निपात निवारै ॥ यातें तुम कछु चिंता मत करौ हौं तिहारे प्रताप तें वाकौ गढ तोरि कटक समेत आनंद सों घर लै चलि हौं ॥ राजा बोल्यौ थोरी कटक रह्यौ अब गढ कैसे विजय करिहौ ॥ गीध कही महाराज जो संग्राम

जौसौ चाहौ तौ विलंब जिन करौ आज ही चलिवाकौ कोट छेकिये ॥ ॥

यह बात सुनते ही चक्रवानें राजा हंसतें जाय कही । कि महाराज राजा चित्रवरन थोरेही कटकतें तिहारी गढ के केरौ । चाहतु है यह बात में वाके मंत्री तें सुनि आयौ हौं यह बात सुनि राजा हंसनें आपने मंत्री सों कह्यौ कि अब कहा करियै चकवा बोल्यौ महाराज आपनौं कटक देखौ । यामें कौन भलौ है औ कौंन बुरौ भलौ होय ताहि धन वस्त्र घोडा हाथी शस्त्र दीजे औ बुरौ होय ताहि गढ कटकतें बाहर कीजै कह्यौ है जु राजा एक समैं तौ दाम कौं लाख करि मानें अरु एक काल लाख कौं दाम करि जानें । तौ वा राजा कौं लक्ष्मी न छांडै पुनि यज्ञ दान विवाह आपत्त औ शत्रु मारिबे में जो धन उठावतु है । सोई स्वार्थक है । अरु मूरख थोरे देनतें डरि । सब ही गंवावै । राजा बोल्यौ तुम कौं ऐसी कहां की आपदा है । मंत्री कही महाराज कह्यौ है जु लक्ष्मी रिसाय तौ आयौ धन जाय तातें दान कीजिये । जो धर्म के आधीन है । लक्ष्मी रहै बहुरि राजनीति में हू कह्यौ है कि विग्रह के समय राजा आपनें जोधान कौ समाधान करै जो जैसौ ताकौ तैसौ । क्यौं कि जे उत्तम प्रवीन कुलीन सीलवंत सूरवीर धीर नीके पोखे होंय तें पांच पांच सौ तें लरैं । अरु अकुलीन अप्रवीन अधम अधीर कायर निर्लज्ज होंय ते पांच सौ पांच तें परांय । महाराज सुनि जा राजा कौ मंत्री असावधान होय ताकौ हू राज नरहै । अरु जो राजा आपनौं परायौ नजानें मंत्री की प्रतीति न मानें सेवक कौ दुख सुख न गनें सो राजा कबहू निचिंतो न रहै । औ जो राजा आपनौं परायौ दूझै सेवक कौ दुख सुख विचारै । ताके लियै सेवक धन तन प्रान दे सहायता करै ॥ ॥ ॥ राजा औ मंत्री ऐसें बतराय रहे हैं कि ताही समैं मेघवरन काग आय जुहार करि बोल्यौ महाराज शत्रु युद्ध करिबे कौं गढ के बार आयौ है । मोहि आज्ञा होय तौ बाहर निकरि संग्राम करौं अरु आप के लौन तें उतरिन होउ । मंत्री क

ही वनतें निकस्यौ सिंह अरु स्यार समान है यातें गढ़तें न निकसिये
कह्यौ है जो राजा आप गाढौ रहि युद्ध देखै तौ कायर सिंह समान हो म
लरै तातें अबही कोटके बाहर जाय युद्ध करनौं जोगनाहिं इधर तौ
राजा औ मंत्री ऐसें बतराय रहे हैं अरु उत्त चित्रवरन राजानें दूजै दि
न गीध सों कह्यौ कि ॥ बाबा जू जो प्रतिज्ञा करी ही ताकौ निर्वाह करौ
गीध बोल्यौ सुनौं महाराज आगरेके थोरे जोधा हौंय के राजा मूरख
औ मंत्री कायर होय तौं गढ उतावलौ टूटै ॥ सो तो वहां एकौ गनि ना
हिं ॥ तातें वहां के लोगनि तें भेद उपाय करियै ॥ कै घेरौ नाखि अन्न
रस रोकि सब मिल साहस करैं तो गढ पावैं कह्यौ है ॥ जैसो बल होय
तैसी जतन करियै इतनौं कहि ॥ पुनि मंत्री नें राजा के कानमें कह्यौ
कि महाराज ॥ कछु चिंता जिन करौ हमारो काग वाके घढ में है ॥ सो
काम करिहै आगे प्रात होत राजा चित्रवरन सब सेना लै गढकी पौ
रि जाय लाग्यौ ॥ उत्त समय पाय काग लाय लगाय ॥ गढ लियौ लियौ
करि पुकास्यौ तव तहां के जीवन के पग छूटे वे सब दौरि पानी में पैठे
औ राजा हंस सुकुमार तातें पराय न सक्यौ तद एक सर्वमित्र नाम
कूकुडौ राजा चित्रवरन कौ सेनापति ॥ तिन आय हंस कौं छेक्यो ॥ त
ब सारस वाके सनमुख हौनि लाग्यौ ॥ तहां हंस बोल्यौ तुम मेरे नि
मित्त जिन ॥ जूझौ हौं ह्यां रहौं तुम मेरे पुत्र चरामन कौ लै जाव राजा
करौ सारस कही महाराज आप ऐसी बात जिन कहौ जौलौं चंद्र सूर
ज तौलौं तुम अखंड राज करौ हौं आपके प्रताप सों गढमें सब शत्रुन
मारि विछावतु हौं कह्यौ है ॥ छिमावंत दाता गुनगाहक सुखदायक
धर्मी ला ठाकुर कहां पाइये ॥ राजा कही भक्तिवंत निष्कपट चतुर सेव
क ह कहां पाइये ॥ पुनि सारस बोल्यौ महाराज संग्राम तज तौ भागियै
तौ मृत्यु न होय अरु जो निदान मृत्यु ही है तौ आपनो जस मलीन करि
काहे मरियै ॥ बहुरि जो या अनित्य सरीरसों जगत में नित्य जस पाइयै तौ

यातें कहा उत्तम है॥ यामें तुमतो हमारे स्वामी ही हौ राजा कही यह तुम भली विचारी हमहू ऐसी ही करिहैं सारस बोल्यौ महाराज आप ऐसो विचार जिन करौ॥ क्यौं कि स्वामी के देह छांडे प्रजा अनाथ होय॥ अरु सेवक कौ तो यह धर्म ही है कि॥ जौलौं बनें तौलौं स्वामी के राखिबे कौ यत्न करे॥ स्वामी के उदय तें याकौ उदै अरु अस्त तें अस्त॥ इतनी बात कहत कहत॥ जब कुक्कुट नें राजा हंस कौं आय गह्यो॥ तब सारस नें वासों छुडाय पीठ पर चढाय नीरमें जाय छोड्यौ॥ अरु आप आय अनेकन कौं मारि॥ गढ मांहिं जूझ मर्यौ पुनि आय राजा चित्रवरन नें सब गढ की माया लई अरु बैरी जन के पायन की बेडी हमक डी काढ दई इतनी कथा सुनि राजपुत्रनि विस्नु शर्मा तें कह्यौ॥ अहो गुरु देव राजा हंस के सेवकनि में वह बडौ कोऊ हो॥ जिन राजा कौं बचाय आप प्रान दियौ॥ विस्नु शर्मा बोल्यौ महाराज कुमार॥ सुनौ उन बडो काज कियौ॥ देखौ एक तौ संसारमें जस पायौ॥ दूजे स्वर्ग कह्यौ है॥ जो सेवक स्वामी के लिये रन में प्रान देइ सो परम गति पावै औ जो साथ छोडि भागै वह नरक में परै औ जगत मांहिं कलंकी होय॥ इति विग्रह नाम तृतीय कथा संग्रहः संपूर्णः॥ ॥ ॥

॥ अथ संधिः ॥

विस्नु शर्मा बोल्यौ महाराज कुमार॥ तुमनि विग्रह तौ सुन्यौं॥ अब हौं संधि कथा कहतु हौं कि॥ जब दोऊ राजा संग्राम करि सेना खपाय रहे तब गीध अरु चकवा नें जा भांति उनकौं मिलाया ताई रीति सब कथा कहतु हौं॥ राजपुत्रनि कही अहो गुरुदेव॥ हम नीकें चित्त दे सुनतु हैं आप आज्ञा कीजै॥ पुनि॥ विस्नु शर्मा कहनि लाग्यो

कि जद राजा हंसनें चकवा सो पूछ्यौ कि॥ तुम यह जानतु हौ गढ मैं आग हमारे लोगनि लगाई कै शत्रु के तद चकवा बोल्यौ महाराज॥ निहारी मेघवरन काग दीसतु नाहीं॥ तातें जान्यौं जातु है कि होय नहो भ यह वाही कौ कामहै इतनी वात सुनि राजा चिन्ता करि कहनि लाग्यौ कि मैं जान्यौं यह मेरे ही अभाग तें काम विगर्‌यौ॥ यामांहिं कछु तिहारौ दोष नाहिं॥ मेरे कपाल ही कौ दोष है॥ मंत्री कही महाराज॥ औरहू ठौर ऐसें कह्यौ है कि॥ जब दैव कोपतु है॥ तब मनुष पर आपदा आवतु है॥ अरु कर्म के वस होय अनीति करै॥ हितन कौ कह्यौ न मानें॥ जैसें एक कछुवानें आपनें हित कौ कह्यौ नमानि॥ काठनें गिर॥ दुख उठायौ तैसें कष्ट पावै राजा बोल्यौ यह कैसी कथाहै तहां चकवा कहनि लाग्यौ॥ ॥ॐ॥ ॥ मगध देसमें फुल्लोसल नाम सरोवर तहां विकट संकट नाम द्वै राजहंस रहैं तिन कौ मित्र एक कंवुग्रीव कछुवा हू वहां रहै एक दिन तहां धीवर आये अरु आपुसमें वैठि वतलाये कि आज रात्रिकों यहां वसि मछरी कछुवा पकरिहैं यह सुनि॥ कमठनें हंसनिसों कही मित्र॥ तुम धीवरकी वात सुनी अवहीं यहां नरहिहौं॥ और सरोवर मैं जैहौं हंसनि कही अवही रहो आगे उपाय करिहैं सो आगे की वात नाहिं कह्यौ है॥ आपदा विन आये उपाय करै तौ सुख पावै औ नकरै तौ दुख उठावै॥ जैसे यद्भविष्य मछरीनें दुखपायौ॥ हंसनि कही यह कैसी कथा है॥ बहुरि कमठ कहतु है॥ ॥ॐ॥ ॥ पहिले या सरोवर पर एक वार धीवर आयौ हौ॥ तव यहां तीन मछरी रहति हीं॥ एक अनागत विधाता दूजी उत्पन्नमति तीजी यद्भविष्य जब धीवर आयौ तव आगतिविधातानें कह्यौ॥ अव ह्यां रहनौ उचित नाहीं इतनौं कहि दहू और सरोवर में गई॥ दूसरी बोली जद काज आय परिहै तद उपाय करिहौं कह्यौ है॥ जो उपजी वातका उपाय करै सो चतुर॥ जैसें एक वनियाकी वे

टी नें पतिके देखत॥ जारकों चूंबा दै मिस कियो॥ तीसरी नें एक कैयाय
ह कैसी कथा है॥ पुनि उत्पन्नमति कहति है॥ ॥ ॥ ॥ ॥

विक्रम पुरमें समुद्र दत्त नाम बनियां॥ ताकी स्त्रीकों नाम रतन मंजरी॥ सो आपनें सेवक सों रहि कह्यो है॥ स्त्रीके कौंन बडो॥ कौन छोटो॥ आपनें कामसों काम॥ आगे एक दिन वह आपनें सेवक कौ मुख चूमति ही॥ वाही समैं वाके स्वामीनें आय देख्यो॥ तब उनि दौरि॥ पति सों कही॥ साहजू॥ यासेवक बजु मारे कौ घर मांहिं जिन राखौ यह दै मारी चोर है॥ अबही याने घीव चुराय खायो॥ मैं या को मुह सूंघ्यो॥ सुघ्रतकी गंध आवति है॥ यह बात सुनि सेवक रूठ्यो अरु कहनि लाग्यो कि जा घरकी धनियानी मुख सूंघै॥ तहां रहनौ भलौ नाहीं पुनि॥ समुद्र दत्तनें उन दोऊन कौं मनायो॥ तातें हौं कहति हौं कि॥ आपत्य समय जाकी बुद्धि फुरै सोई चतुर॥ बहुरि यद्भविष्य बोली जो भावै सो होय चिंता को करै॥ आगे धीवर नें आय जार वा सरोवरमें नाख्यो॥ अरु वे दोऊ बझीं तब उत्पन्न मति मृतक होयरही वाकों मर्यो जानि॥ धीवरनें जारतें बाहर काढि राख्यो पुनि औसर पाय वह पानीं मांहिं जाय गिरी॥ यद्भविष्य कों भावी कौ भरोसो हो सो धीमर के बस परी॥ तातें हौं कहतु हौं जो आगत विधाता की भांति उत्पात तें पहिले भागै सो भलौ॥ बहुरि हंसनि कही॥ तुम कैसें चलि हौ॥ उनि कही मित्र॥ तुम दोऊ एक लकरी दोऊ घांतें पकरो॥ औ हौं बीचतें गहौं तब लै उडौं॥ पुनि हंस बोले बंधु॥ तुम नीकी कही पर हमारे जानि जैसें बगुला के उपायतें बालकपन लखायो॥ तैसें तुमहू करतु हौ॥ कमठ कही यह कैसी कथा है॥ तहां हंस कहनि लाग्यो॥ ॥ ॥ ॥ उत्तर दिसा कीगिलमें॥ कावेरी नदी के तीर गंधमादन पर्वत पै एक रूख तापर एक बगुला रहै वाके नीचे बांबी तामें कारी नागजब वह बक अंडा देयि तब सो सांप रूख पर चढि खा

यले इएकदिन वह चिंता करि रह्यौ हो कि काहू बूढे बगुलाने वासो
पूछ्यौ कि ॥ रे तू ऐसौ दुचित्तौ क्यों है ॥ इन वासो सब भेद कह्यौ ॥ तब
उनि कह्यौ कि अरे तू एक उपाय कर कि बहुतसी माछरी ल्याव
औ न्यौर के बिलतें लै सांपकी बावी लौं पांतिसी लगाव जब वह
माछरी खात खात आय है ॥ तब वा सर्प कौं हू खाय है ॥ यह बात
सुनि उनि वैसें ही करी ॥ औ न्यौरनें आय नाग कौं खायौ पर
साथ ही पेड़पे चढि बाके अंडा हू खाये ॥ तातें हौं कहतु हौं कि
ऐसौ यत्न जिन करौ ॥ जामें आपनौं बिनास होय ॥ जौ तुम लकरी
पकरि लटकि चलौ औ काऊ कछु कहै ॥ बाधेर तुम रिसाय कै उ
त्तर देउ औ मुहतें लकरी छूटै औ नीचै गिरौ तौ हम कहा करैं सो क
हौ ॥ उनि कही हौं कहा बावरौं हौं जु बोलिहौं ॥ इननि कही भाई
तुम जानौं ॥ इतनौं कहि वे दोऊ हंस वा कौं वाही भांति लै उडे कछु
वा कौं लौगनि नें लटकत देखि अहेरी बोले हरखौ रे ॥ या कछुवा कौं
द्वै पक्षी लिये जातु हैं ॥ एक बोल्यौ जौ यह गिरपरै तौ भूंजि खाउं दू
जे नें कही मैं घर लै जाउं यह सुनि ॥ कछुवा सों रह्यौ न गयौ ॥ तब
क्रोध करि बोल्यौ ॥ तुम पथरा खाउ इतनी कहत लकरी तें छूटि त
रै गिरयौ ॥ अहेरियन मारि भक्षन कियौ ॥ तातें हौं कहतु हौं ॥ जो मंत्री
कौ कह्यौ न मानै सो दुख पावै आगे एक बगुला आयौ तब चकवा
बोल्यौ ॥ महाराज यह वही बगुला है जाहि पहिले पठायो हो यह क
हतु है गढ में आग मेघवरन कागने लगाई अरु वह गीध कौ पठयौ
आयो हो बहुरि राजा हंस कही शत्रु के उपकार ॥ औ प्रीति की प्रतीति
कबहू न करियै जौ करियै तौ जैसें रूख कौ सोवनहारौ गिर कैं पछता
य तैसें पछताइयै ॥ बहुरि बगुला बोल्यौ महाराज ह्यां तें जब मेघवर
न गयौ तब चित्रवरन नें कह्यौ अब मेघवरन कौं कर्पूर द्वीप कौ रा
ज दीजै अरु याकौ दुख दूर कीजै कह्यौ है ॥ जो सेवक कष्ट पाय स्वा

मीकौ काज करि आवे ताकौ तवही भलो कीजे ॥ मंत्री कही महाराज यह उचित नाहिं ॥ याहि और कछु देउ ॥ अरु मेरी बात सुन लेउ कह्यो है ॥ जाकौ जितनौं मान ॥ ताकौं तितनौं दान ॥ नीच कौ उपकार करनौं औ वालू मांहिं पीछारनौं ॥ समान है पुनि जौ नीच कौं वढाइये तौ मुनेश्वर की भांति होय राजा कही यह कैसी कथा है ॥ तव गीध कहनि लाग्यौ ॥ ✤ ॥ ✤ ॥ ॥ गौतम ऋषि के तपोवन मांहिं महातपी नाम एक मुनि रहै ताके आश्रम मे काग के मुख तें छूटि मूसाकौ सिसु गिर्यो वाहि देखि दया करि मुनि नें आपनें निकट राखि कनखवाइ वडौ कियौ ॥ तब एक विलार वाके खैवे की घात में आयौ करै यह देखि मुनि नें मंत्र करि वाकौं विलाव कियौ फेरि एक स्वान आवन लाग्यौ ॥ वहुरि वानें वाहि स्वान कियौ पुनि एक सिंह आयौ करै तव तिन ताहि सिंह वनायौ ॥ पर निज मन मांहिं मूसा ही करि जानें यह चरित्र देखि गांव के लोग कहनि लागे ॥ देखो रे ॥ यह मूसा तें सिंह भयौ ॥ सो या मुनि कौ प्रसाद है या वात कौं सुनि वा सिंह नें निज मन में विचार्यो कि जौ लौं यह मुनि रहैगौ तौ लौं सव लोग मोहि ऐसें ही कहत रहैंगे तातें या मुनि कौ मार खाऊं तौ यह कलंक छुटै ऐसें वह जी में ठानि मुनि के खानि कौं चल्यौ ॥ तव मुनि नें वाकी अन्तरगति जान पुनि वाहि मूसा कौ मूसा वनायौ तातें हौं कहतु हौं कि महाराज ॥ नीच कौ ऊंच पद कबहू न दीजे ॥ यह वात सहज़ नाहिं सुनौं जैसें एक बगुलानें माछरी खात खात ॥ नये मास खान की इच्छा करि आपनौं गरौ कटायौ कहूं तैसें न होय ॥ राजा कही यह कैसी कथा है पुनि गीध कहतु है ॥ ॥ ✤ ॥ ॥ मालव देस में पद्मगर्भ नाम सरवर तहां एक बूढौ बगुला असमर्थ आपकौ उद्वेगी सौ जनाय रह्यौ करै वाहि दूरतें देखि ॥ एक केंकरा नें पूछ्यौ कि भाई तू दुखी क्यौं है अरु अहार छोडि ॥ उदास व्है काहे वैठि रह्यौ है

उन कही बंधु॥ मेरी जीवन तौ माछरीतें सो धीमर कहतु है कि काल सकारे आय॥ या सरोवर की सब माछरी मारिहौं॥ या दुख तें मैं आज हीतें अहार तज्यौ॥ यह सुनि वा तडाग की मछरियन आपुस में कह्यौ कि या समैं बगुला हमारौ हित सौ जनातु है॥ अरु अब या ही सों आपनो बचाव हू दिसतु है॥ कह्यौ है जौ उपकार करै तौ शत्रु हू तें संधि करियै॥ क्यौं कि उपकार है सो मित्राई कौ कारन है॥ आगे मछरियन बगुला सों कह्यौ कि तुम काहू भांति हमैं राखि लेउ॥ उन कही तिहारे राखिबे कौ एक उपाय है कि॥ जो मैं तुम्हे और सरोवर में लै जाउं तौ वचौ॥ तिननि कही सोई करौ पुनि वह बगुला एक माछरी मुख में लै जाय औ वाहि खाय आवै॥ बहुरि लै जाय ऐसें ही सब माछरी खाई तब एक केंकडानें हू बगुला सों कह्यौ॥ मोहू कौं लै चल यह नयौ मास खान कौ मनोरथ करि वा हू कौं लै चल्यौ॥ अरु जहां वै हि माछरी खाई ही॥ तहां लै जाय धर्यौ मोछरीन के कांटे न्हां डरे देखि केंकडानें विचार्यौ कि मृत्यु तौ दिसति है॥ पर ऐसौ कह्यौ है॥ जौ लौं डरियै तौ लौं भय अरु जब भय आयौ तब मरियें॥ कै मारियै॥ क्यौं कि जूझ मरियै तौ मन में पछतावौ न रहैं ऐसें विचारि विन बल करि बगुला की गरौ काटि डार्यौ बक मर्यौ॥ तातें हौं कहतु हौं कि अपूरब वात करनौ कबहू न विचारियै॥ खोटौ॥ खुटाई न हीं तजतु॥ पुनि चित्रवरन कही अहो मेरे मन में ऐसौ आयौ है कि मेघवरन कौं ह्यां कौ राज दीजे तौ घर बैठे अच्छे पदारथ लीजे गीध कही महाराज अनमई वात कौं विचारि॥ जो सुख मानें सो दुख पावै॥ जैसें कुम्हार के भांडे फोरि ब्राह्मन नें दुख पायौ॥ राजा कही यह कैसी कथा है तहां गीध कहतु हैं॥ ॐ॥ ॐ॥ ॥

कोटर नगर में एक देव शर्मा नाम ब्राह्मन रहै तिन मेष की संक्रांति में काहू यजमानतें एक करुआ सातू कौ भर्यौ पायौ सो लै

करि रात्रि कों ॥ काहू कुम्हार के घर रह्यौ ॥ अरु करुवा वाके वासन
मिपरथस्यो तब निज मन मांहिं विचारन लाग्यौ कि ॥ या सातू कों वे
चि सात दमरी पाऊंगौ ॥ ताकौ फलु और ल्याऊंगौ ॥ वाहि वेचि औ
र और वेचि और याभांति जब धन वढैगौ ॥ तब नारियर सुपारी लै
वडौ व्यौपार करि धन वढाय चार विवाह करिहौं कह्यौ है ॥ ब्राह्मन
चार विवाह करै औ चारौ वरन व्याहै छत्री तीन वैश्य द्वै शूद्र एक व्या
है पुनि जब वे स्त्री आपुस में लरिहैं तबहीं जाकौ औगुन देखिहौं ॥
ताके मारिवे कौं ऐसें लौठिया घालूंगौ ॥ यह कहि ज्यौं लौठिया घाली
त्यौं सतुआ के करुआ समेत उनि कुम्हार के भांडे फोरे ॥ वहुरि कह
नि लाग्यौ कि हाय ॥ मेरौ कियौ करायौ सब परगयौ ॥ आगे भांडे फूटे दे
खि कुम्हार हूने वाके सब कपरा खोंस ॥ वाहि तिरस्कार करि घर तें
निकार दियौ ॥ ॥ तातें हौं कहतु हौं कि आगे कौ मनोरथ करै सो
खवावै पुनि हंस करि राजानें गीधसों पूछौ कि अब कहा करनौ
उचित है सो कहौ गीध वोल्यौ महाराज जो मंत्र राजा चूकै तौ मंत्री
मूरख कहावै ॥ जैसें सांकरी गली में हाथी न चलै तब महावत कू
ढ कहावै ॥ तातें हौं कहत हौं कि गढ तौ तिहारे पुन्य प्रताप तें औ
हमारे उपाय सौं हाथ आयौ ॥ अरु तिहारी जीत हू जगत नें जानी
पर अब आपनें देस कौ चलौ तौ भलौ नातौ वरषा काल मूंड पर
आयौ ॥ औ वैरी वरावर कौ है यातें जो अब अटकिहौ ॥ तौ परा ई भू
मि में तें निकसनौ कठिन ह्वै है ॥ तातें मेरे जानि राजा हिरन्यगर्भ तें सु
ख सौं मिलि हलभल करि निज देस कौं पधारिये ॥ कह्यौ है ॥ जो मंत्री
धर्म राखै सो राजा कौं सुहाती अनसुहाती कहै ॥ औ राजा हू विचारे
अन विचारे प्रमान करै ॥ ऐसौ मंत्री राजा कौ हितकारी जानिये पुनि
कह्यौ है ॥ जो आपनें समान होय तासौं प्रीति करिये ॥ क्यौं कि लरनौ ॥
खांडे की धार है यह दोऊ वीर न कतु है पुनि युद्ध में जूझिवे के समैं मि

त्र धन जन कीरत औ अपनपौ शत्रुके सन्मुख मसुके हाथ दोनौं होतुहै॥ पुनि राजा कही जोयह वात ऐसें ही ही तो तुम प्रथम ही कौं न कही॥ जो घरही बैठरहते मंत्री बोल्यौ महाराज हमारौ वचन तुम आदि अन्त लौं नमान्यौं॥ मेरौ विचार विग्रह करनि को नहो क्यौं कि राजा हिरन्यगर्भ के गुन प्रीति करिबे जोग हैं॥ वासों वैर न बूझियै कह्यौ है जो सत्यवंत बलवंत धर्मात्मा प्रतिष्ठित॥ औ अनेक संग्राम जीत्यौ होय कै जाके भाई बंधु अधिक होंय तातें युद्ध न करियै॥ क्यौं कि सत्यवंत आपनौं बोल छिवाहै॥ बलवंतपै कछु बल न चलै॥ धर्मात्मा जीत्यौ नजाय आपसमें वाकौ धर्म होयसहाय॥ प्रतिष्ठित के नामहीतें लोग परांय॥ जिन अनेक युद्ध जीते होंय ताकी धाकहीसों सब डरजांय॥ औ जाके भाई बंधु अधिक होंय वह कबहू न हारै॥ यातें हौं कहतु हौं कि महाराज अब संधि करियै॥ क्यौं कि ये सब गुन राजा हिरन्यगर्भमें हैं॥ इतनी वात सुनि राजा हंस के दूतने आपनें राजातें जी की त्यों जाय कही तब चकवानें दूत सों कह्यौ कि भाई यह तौ तुम अति मंगल की वात सुनाई पुनिजाय समाचार ल्यावो॥ दूत गयौ तब राजा हंसने चकवासौं पूछी कि तुम काहे को मंगल मान्यौ सो कहो॥ मंत्री कही कि महाराज कह्यो है॥ इतनेनतें संधि न करियै॥ बालक वृद्ध रोगी लोभी कायर वैरागी देव गुरु निंदक॥ क्यौं कि बालक कौ तेज अति अल्प तातें दंड औ प्रसाद न कर सकै॥ यातें वाकौ साथ कोऊ न देइ॥ वृद्धौ औ रोगी उत्साह करिहीन रहै ताहि सहज ही मारियै॥ लोभी अंत संधि करै यह जानि वाके संग कोऊ न लडै कायर आपही रनतें भागै॥ वैरागी सबतें उदासरहै॥ काहू वात में मन न देइ सो आपही हारै॥ देव गुरु निंदक अधर्म तें आपही आप नष्ट होंय तातें ऐसें रिपु कौं युद्ध करि मारियै॥ पुनि कह्यौ है॥ जो राजा विद्यावान होय शस्त्र विद्या जानें देस कालपहि·

चानें॥आपनी परायी मानैं॥गुन औगुन मन आनें॥प्रभुता सहित नरहै जहां जैसी उचित तहां तैसी कहै॥नीति करि सांच भाषै॥ व्याव में काहू की कान न करै मंत्र सदा गुप्त राखै सो राजा समुद्रांत पृथ्वी को राज भोगे॥इतनी कहि बहुरि चकवा बोल्यौ॥महाराज औ हू गीधमंत्रीनें संधि करिवे की कही पर राजा चित्रवरन अति अभिमानी है वह वा की कही न मानि है॥कह्यो है कि भय विन प्रीति नहोय अरु संधि कियै दोऊ वोर कुशल है॥यासों मेरे मनमें एक बात आई है सो होय तौ भलौ कि॥संगल द्वीप कौ राजा सारस मेरौ परम मित्र है॥महाबल वा कौ नाम॥ताकौं हौं लिखौं कि वह चित्रवरन के जंबूद्वीप पै जाय मंडराय॥अरु ह्यां तुम आपनी सैना कौं जोरि या की सैना कौं पीर उपजावो दिनरात उठत वैठत निकरत पैठत दबाऔ तौ जैपावौ कह्यो है दोऊ तातें होंय तौ॥मिलें लोह की भांति॥राजा कही नी कौ जानों सो करौ तद्व चकवा नें विचित्रनाम बगुला कौं पत्र दै॥संगल द्वीप पठायो अरु वहां पाती पावत प्रमान सारस चढि धायौ आगे गीधमंत्रीनें राजा चित्रवरनसों कह्यो कि॥महाराज यह मेघवरन काग गढ में अनेक दिन रह्यो याहि पूछौ जु राजा हंस प्रीति करवे जोग है कै नाहिं॥तब राजानें कागसें कह्यौ कि अहो राजा हंस औ वा कौ मंत्री कैसो है॥काग बोल्यौ महाराज॥राजा हंस साक्षात् युधिष्ठिर है अरु मंत्री चक्रवाक की समान चतुर दूजौ पृथ्वी मैं नाहि राजा कही तवाहि कैसे डहकायो॥अरु ह्वां कौन प्रकार रहन पायौ॥काग बोल्यौ कि महाराज राजा जा की प्रतीत करै ताहि डहकावनी कितेक बात है॥जैसें जा की गोद में सोवै औ सोई मारै तौ सोवन वारे कौ कहा वसाय॥चकवानें मोहि देखत ही पहिचान्यौ हो पर राजा हंसनें मंत्री कौ कह्यो न मान्यौ ताही तें मैं वाहि ठग्यौ अरु ह्वां रहनि पायौ महाराज॥राजा हंस बडौ साहसी औ सत्यवादी है कह्यो है जो आप सत्यवक्ता होय सो औरकौं

हू आपसौं जानें॥ जैसें एक सत्यवक्ता ब्राह्मणनें और की बात सत्य
मानि॥ बोकरा खोयौ राजा कही यह कैसी कथा है तब काग कहनि ला
ग्यौ॥ ॥कथा॥ ॥गौतमारन्य में एक ब्राह्मन यज्ञके निमित्त बोक
रा माथे लिये आवतु हो॥ वाहि तीन ठगनि देखि बोकरा लैन कौ आ
पुसमैं मतौ कियौ॥ अरु वे तीनौ साधकौ भेष बनाय तीन ठौर जा बै
ठे जब वह ब्राह्मन पहिले साध के निकट गयौ॥ तब उन कह्यौ अ
रे ब्राह्मण॥ यह कूकर माथे धरि काहे लियै जातु है॥ इन कही कू
कर नाहिं॥ यज्ञकौ बोकरा है यह सुनि वह साध चुप रह्यौ॥ आगे दूस
रे के पास गयौ॥ पुनि उनहू कह्यौ॥ रे देवता मूंड़पै स्वान कौं चढ़ायौ
इतनौ सुनि इन बुरौ मानि वाहि सीसतें उतारि देख्यौ अरु संदेह कर
तु चल्यौ कि जो देखतु है सो याहि कूकर कहतु है॥ पर मेरी दृष्टि मैं तौ
बोकरा जनातु है॥ ऐसें सोचतु सोचतु वह तीजे के निकट जाय पहुं
च्यौ॥ तब उनहू कह्यौ अहो विप्र॥ कूकरा सिरतें डारि दै॥ तैं यह कहा
अनर्थ कियौ जु स्वान मूंड़पै धरि लियौ यह बात वाके मुखतें सुनत
प्रमान वाहि कूकर जानि विप्रनें माथेतें पटक॥ आपनौ पंथ लियौ
अरु विननि बोकरा लै आपनौं मनोरथ पूरौ कियौ॥ तातें हौं कहतु हौं
कि दुष्ट के वचनतें साधकी हू बुद्धि चलै बहुरि जैसें चित्रवरन ऊंटकौं
सिंहनें मारि खायौ राजा पूछी यह कैसी कथा है॥ पुनि वायस कह
तु है॥ ॥कथा॥ ॥ एक वनमें मदोत्कट नाम सिंह ताके तीन सेवक
एक तेंदुवा दूजौ काग तीसरौ स्यार॥ विन तीननि एक दिन वा वन
में ऊंट देख्यौ॥ तब उननि वाहि पूछ्यौ॥ तू कहां तें आयौ॥ उन कही
मैं साथ भूलि आयौ हौं॥ यह सुनि विन तीननि वाहि लै जाय॥ सिंहसों
मिलायौ॥ सिंहनेहूं वाहि अभय दान दै राख्यौ॥ अरु चित्रवरन नाम
दियौ पुनि वह सबनके साथ हिलमिल रहनि लाग्यौ॥ कितेक दिन
पाछे बरषाकालमें कई एक दिनकी झरी लागी औ वा समय अहार न

गुलो॥ तब विन तीननि आपुस मांहि कह्यौ कि भाई अब कोउ ऐसो उपाय करिये जु॥ सिंह कुठहि मारे तौ॥ अहार खैबे कौं मिलै॥ तैं दुबा बोल्यौ मित्र याहि तौ सिंह नें अभयदान दियौ है॥ सो कैसें मारिहै का म कही अहो॥ समय पाय राजा हू पाप करतु हैं॥ जैसें भूखी नागिनि आपनें अंडा खाय॥ भूखौ कहा न करै॥ कह्यौ है मतवारो असावधा न रोगी वृद्ध अधीर कामी क्रोधी लोभी भूख्यौ डरयौ आदि ये सब अधर्म कौं न जानें न मानें॥ ऐसें बतराय॥ वे सिंह के निकट गये॥ अरु हाथ जोरि सन्मुख ठाढे रहे तब उनि पूछी॥ कछु खैबे कौं पायौ इनिनि कही महाराज॥ बहुत जतन कियौ पर कछु हाथ न आयौ॥ सिंह कही अब कैसें बचिहैं॥ बहुरि काग कही महाराज॥ आप हाथ आयौ अहार छोरतु हौ तातें और हू ठौर नाहीं मिलत सिंह बोल्यौ॥ सो कहा इनकु क कान में कही॥ या चित्रबरन कौं मारि खावौ॥ उनि कही जाहि मैं अ भयदान दियौ ताहि कैसें मारौं॥ कह्यौ है भूमि सुवर्न अन्न आदि दान बडे दान हैं पर शरनागत कौ राखिबौ इनहू तें अधिक फल देतु है॥ ब हुरि काग कही महाराज॥ तुम जिन मारौ॥ हम ऐसौ उपाय करिहैं जुव ह आपही जीवदान करि॥ निज सिर तुम कौं देहैं॥ यह सुनि सिंह चुप ह्वै रह्यौ तब कागनें वाकौ मनोरथ जानि कपट करि॥ चित्रबरन सौं कह्यौ कि तोहि तौ राजानें अभयदान दियो है॥ परंतु या समय तुम विन तें अहार की मनुहार करौ॥ तौ राजा तुमतें अति प्रसन्न होयगौ ऐसें वाहि फुसलाय सिंह पास लै जाय॥ उन तीननि हाथ जोरि कह्यौ॥ म हाराज यह चित्रबरन कहतु है अहार तौ कहूं नाहीं मिलतु॥ औ तुम अनेक दिन के भूखे हौ तिहारो दुख मोपै नाहीं देख्यौ जातु॥ तातें तु म मोहि मार खावौ॥ कह्यौ हैं॥ राजा तें प्रजा की रछा है॥ प्रजा कौ मूल प्रजापति है॥ अरु मूल रहै तौ डारि पात फूल फल आपही तें होंय पुनि सिंह कही और जल मरिये सो भलौ पर ऐसौ कर्म न करिये जव स्यार

बोल्यौ महाराज ऐसें ही कह्यौ है॥तब तो चित्र वरन हूनें सिंह की दृढता जानि मनुहार करि कह्यौ महाराज आप मेरौ सरीर खावौ इतनी बात वाके मुखतें सुनत ही सिंहनें वाहि दौरि मार्‌यौ ॥ अरु सबनि मिलि भक्षन कियौ महाराज तातें हौं कहतु हौं कि दुष्ट के उपाय औ उपदेश सौं साधहू की मन छाडिगै बहुरि राजा चित्रवरन बोल्यौ अहो मेघवरन तुम इते कदिन शत्रुनि मांहिं कैसें रहे ॥ अरु कौंन भांति उननें तुमतें प्रीति निभी वायस बोल्यौ महाराज कह्यौ है कि ॥ स्वामी के काज शत्रुहू कौं माथे चढाइये औ गिराइये रोसैं जैसें नदी थाय थोय धोय रूखकौं गिरावै पुनि जो सुबुद्धि होय सोऊ आपनें प्रयोजन के निमित्त वैरी हूकौं माथे चढाय निज काज साधै ॥ जैसें बूढे सर्पनें सिर चढाय मेंडुक खाये ॥ राजा कही यह कैसी कथा है॥ ॥

काहू बनमें एक अति वृद्ध मंदविषनाम नागर रहै सो अहार कौं फिर न सकै ॥ तातें सरोवर के तीर पर्‌यौ रहै॥ काहू दिन एक दादुरनें वाहि देखि दूरतें कह्यौ ॥ अहो तुम जो अहार नाहीं खोजतु ॥ परे ई रहतु हौ सो कहा है उन कही॥ हौं कहां जाऊं औ मोअभागे कौं कौ बूझतु है॥ इतनी सुनि विन थाहि आचार्य जानि कह्यौ कि तुम आपनी अवस्था कहौ तब सर्प कहनि लाग्यौ॥ ॥

या ब्रह्मपुरामें कौंडिन्य नाम ब्राह्मण ताकौ वीस वरषकौ पुत्र पढ्यौ गुन्यौ मैं आपनें अभाग्यतें डस्यौ॥ तब कौंडिन्य सुसील नाम पुत्र कौं मर्‌यौ देखि सोगसों धरनि भूमि पै गिर्‌यौ॥ पुनि वाके भाई बंधु औ गांव के लोग सब आय जुरे कह्यौ है सुख दुख समैं असमैं शुभ औ अशुभ में जे इष्ट मित्र बंधु होंय ते सुधि लेइ॥ आगे एक कपिलदेव नाम ब्राह्मणनें आय याहि समझाय बुझाय कै कह्यौ अरे कौंडिन्य तू अति मूर्ख है जु अब खेद करतु है क्यों कि संसारकी तौ यही रीति है कि ॥ इत उपज्यौ उत मर्‌यौ॥ तातें याकौ शोक कहा

देखौ सेना सहित युधिष्ठिर से पुरुष नर है तो और की कहा चली
च तुरि देहधारी कौं मृत्यु ऐसें लगी रहति है कि ॥ जैसें संपत्त में वि
पत प्राप्ति में हानि ॥ संयोग में वियोग ॥ ज्ञान में ग्लानि ॥ पुनि यह दे
ह छिन छिन यौं घटति है ॥ जौं जल में काचौ घट घटै ॥ कह्यौ है सरीर
जोवन रूप द्रव्य ठकुराई मित्राई औ एक ठौर कौ वास ये सब अनि
त्य हैं ॥ यातें जो ज्ञानी चतुर पंडित होय सो इन के गये कौ सोच न क
रै अरु सुनौ जैसें नदी के प्रवाह मे जहां तहां के काठ आय मिलतु
हैं ॥ तैसें या संसार के जीव हैं इनतें जेतौ सनेह कीजै तेतौ दुख हो
य क्यौं कि जग में सदा काहू कौं साथ नाहीं निवहतु ॥ अरु जो आ
पनी ही देह साथ न देय तो और की कहा चली ॥ कह्यौ है माया कि ये
यौ दुख बढै ॥ जौं कुपथ्य किये रोग पुनि काल ऐसें चल्यौ जातु है ॥
जैसें नदी कौ जल ॥ यासों या संसार की माया छांडि दीजै ॥ अरु
साध की संगति कीजै ॥ संगति साध की सब सुख सौं अधिक सुख
हेतु है ॥ दोहा ॥ तीरथ व्रत जग देवता ॥ काल मंत्र द्रुम खेत ॥ का
ल पाय फल देतु हैं साध सदा फल देत ॥ अरु मित्र सुनौ जैसें बर
षा काल में चाम के बंधन ढीले ह्वै जातु हैं ॥ तैसें वृद्ध अवस्था
में या सरीर के इतनी बात कहि पुनि कौंडिन्य सौं कपिल देव नें क
ह्यौ भाई ॥ अब दुख जिन करौ आपनें प्रान राखवे कौ उपाय क
रौ यह सुनि कौंडिन्य उठि बोल्यौ बंधु ॥ अदया गृह रूप कूप में
न रहि हौं ॥ बन में जैहौं पुनि कपिल देव कही भाई ॥ अनुरागी
कौ बन हू में दोष औ उदासी कौं घर ही में मोक्ष ॥ कह्यौ है जो जन
फल की वासना छांडि विस्नु भजन करै ताहि बन औ घर समान है
अरु कौनहू आश्रम में रहि ॥ दुख सहि धर्म कर्म दान तप व्रत यज्ञ
करै औ सब जीवनि पै दया राखै ताही कौं तपसी जानियै ॥ पुनि जो प्रा
न राखिवे कौं अहार संतान कौं मैथुन करै औ सत्य वचन भाषै सो

दुखरूपी समुद्र कौं तरै कह्यौ है ॥ आत्मा रूपी नदी के संगम पै पुन्य तीर्थ सत्य जल शील करार दयातरंग तामे जो स्नान करि अंतःकरन शुद्ध करै सो जनम मरन व्याधितें छूटै यह संसार सार नाहीं ॥ मनुष दुखकौं सुख करि मानत हैं जैसें बोझकौ वाहनि हारौ मोटपाय सुख मानें ॥ तैसें मनुष की गति है ॥ बहुरि कौंडिन्य बोल्यौ भाई तुम सांच कहतु हौ ॥ यह बात ऐसें ही है इतनौ कहि विन लांबी सांसलै मोहि तौ यह श्राप दियौ कि तू मेंडुकन कौ वाहन होउ अरु वानें आप गृहस्थाश्रम छांडि ॥ सन्यास धर्म लियौ तातें अब मैं वाकौ दिया श्राप भुगतवेकौं आयौ हौं यह बात सुनि दादुरनें आपने राजा सों जाय कही तब जलकुंद नाम मेंडुक मेंडुकन कौ राजा बाहर आयौ पुनि नागनें वाहि प्रनाम करि मूंड़ पै चढ़ायौ अरु ताल के चहुं घां लै फिर्यौ ॥ दूसरे दिन जब वह आय चढ्यौ तब वह चलन न सकौ पुनि दादुर बोल्यौ उतावलौ चल सांप कही स्वामी ॥ मोपै मारे भूख के चल्यौ नाहीं जातु ॥ उन कह्यौ तू मेरी आज्ञातें सैना के मेंडुक खायौ कर ॥ बहुरि सांपनें हाथ जोरि कह्यौ महाराज तुम मेरी बड़ी सहायता करी यौं कहि पुनि खानि लाग्यौ कितेक दिन में सब मेंडुकन कौं खाय ॥ उनि जलकुंद कौंहू खायौ ॥ तातें हौं कहतु हौं कि जो चतुर होय सो आपनौ कार्य साधवे के लयै शत्रुहू कौं माथे चढ़ावतु है महाराज ऐसें ही मैंहू राजा हिरन्यगर्भ सों प्रतीत बढ़ाय गढ़ में रह्यौ आगे राजा चित्रवरन नें गीध सों कही कि वा वाजू अत्र व राजा हंस हमारौ होय रहै ॥ तौ वाकौं बसाइये ना तौ आपने लोग

यह बात राजा चित्रवरन मंत्रीतें कहनि न पायौ हो कि एक दूतनें आय कह्यौ ॥ महाराज संगलदीप कौ राजा सारस तिहारे देस पै चढ़ि आयौ है जो नगर बचायौ चाहौ तौ वेग सुध लेउ ना तौ रहनौ कठिन है ॥ यह सुनि राजा मौन गहि रह्यौ अरु गीध मंत्रीनें मन

में कह्यौ कि होय न होय यह चकवाकी कामहै पुनि राजा मयूर क्रो
ध करि बोल्यौ कि यह काम रहै॥ चलौ प्रथमवाही कौं देख काढें॥
गीध कही महाराज॥ शरद काल के मेघकी भांति वृथा न गाजिये
बल करि दिखाइये नीति तौ यौं है कि॥ एक ही बेर दिस दिस के
लोगनि सों बैर न करिये॥ कह्यौ है अनेक चैंटी हू मिलें तौ गज कौं मा
रैं॥ तातें महाराज मेरे जान तौ राजा हंस तें विन प्रीति किये ह्यां तें
निभनौं हू कठिन होयगो॥ क्यों कि चलत ही शत्रु पीछा करिहै यातें
विचार करि कार्य करौ विन विचार्यौ काम किये पाछे पछिताबो हो
तु है॥ जैसें विना विचारे न्यौर मारि ब्राह्मनी पछताई राजा कही यह
कैसी कथा है॥ तब गीध कहतु है॥ ॥ ॥ उज्जैन नगरी में एक मा
धो नाम ब्राह्मन ताकी स्त्री नें पुत्र जायो सु एक दिन वह ब्राह्मनी पु
त्र की रखवारी मांहिं ब्राह्मन कौं राखि आप नदी न्हैबे कौं गई अ
रु ताही समय पंडि कौं राजा को बुलावौ आयौ॥ तब वानें विचार्यौ
कि जो हौं न जाउंगो तौ राजा जो दान देइगौ सो और कोऊ ले जाय
गौ कह्यौ है॥ लैन देन के काज में उतावल न करिये॥ तौ वह औस
र बीते हाथ न आवै औ जो जाऊं तौ बालक कौन कौं दै जाऊं॥ यह
विचारि वह ब्राह्मन एक बहुत दिन को पोष्यौ न्यौर हो ताहि वा
छोहरा के निकट रखवारी मांहिं राखि आप राजा के ह्यां गयौ॥ आ
गे भोडा के निकट एक सर्प आयौ ताहि न्यौर नें मारि खायौ जब ब्रा
ह्मनी आई तब न्यौर दौरि वाके पायन पै गिर्यौ उनि याकौ मुंह
लोहू भर्यौ देखि निज मन में जान्यौ कि इन चांडाल नें मेरौ पूत
मारि खायौ यह समझ ब्राह्मनी नें न्यौर कौं मारि डार्यौ पुनि आ
गू जाय देखे तौ छोहरा खेलतु है॥ अरु वाके निकट सांप मर्यौ
पर्यौ है॥ तब वह पछताय कें बोली कि हाय॥ मैं पापिन यह
कहा कर्म कियौ जु विन देखे भाले बापरे न्यौर कौ जीव लियौ॥ ता

तें हौं कहतु हौं कि महाराज विन विचारे कवहू कछु काज न कीजे ॥ अरु
काम क्रोध लोभ मोह तजि दीजे ॥ क्यौं कि इनही दोषनतें राजा एथु जन्मे
जय रावन औ कुंभकरन मारे गये अरु देखौ ॥ शत्रुभाव छांडि परशु
राम औ अंबरीचनें जितेंद्री होय अनेक दिन राज कियौ तातें हौं कह
तु हौं कि महाराज जो मेरौ कह्यौ मानौं तौ वा राजा तें प्रीति करि चलौ
कह्यो है ॥ प्रथम तौ पराई भूमि माहि जाय डेरा करनौं कठिन अरु फिरि
पाछे उठावनौं अति कठिन है ॥ यासों कार्य साधिवे कौं चार उपाय कहे
हैं साम दाम दंड भेद पर इन में साम उपाय सों वेग काम सिद्ध होतु है
राजा कही प्रीति उतावली कैसें होय गीध वोल्यौ वेगही होय कह्यो है ॥
साध देखत ही मिलै ॥ औ मूरख कछू न समझै ॥ जौ ब्रह्मा हू वाहि सि
खावै तौ हू न जानें न मानें ॥ अरु महाराज राजा हंस तौ वड़ौ साध है ॥
औ वाकौ मंत्री सर्वज्ञ नाम चकवा अति चतुर है ॥ मैं काग के कहे तें उ
नकी करनी औ करतूत जानी ॥ कह्यौ है ॥ जाहि नरेश्वरौ होय ताके
गुन औ कर्म सुनि सुनिकै वाहि पिछानिये ॥ राजा कही अनेक वात
करिवे तें कहा प्रयोजन ॥ अव जो उचित होय सो करौ ॥ या वात के
कहतही गीध राजा तें आज्ञा लै गढ में गयौ ॥ अरु आपनें आवन
कौ समाचार चकवा सों कहि पठायौ वानें सुनत ही आपने राजा कौं
जा सुनायौ ॥ तव राजा हंस नें चकवा सौं कह्यौ कि अव जो गीध के
पाछे और कटक आवै तौ कहा करियै ॥ चकवा वोल्यौ महाराज य
ह संका करवे कौ ठाम नाहिं ॥ क्यौं कि यह गीध वड़ौ पुन्यात्मा है यातें
कछु चिंता नाहिं कह्यौ है विन भय की ठौर संदेह करनौं कुबुद्धी कौ
काम है ॥ इतनी कहि चकवा नें जाय गीध कौं ल्याय राजा हंस सों गढ़
के द्वार आगे मिलायौ ॥ तव राजा हंस नें गीध कौं आदर दै वैठायौ ॥
पुनि गीध वोल्यौ महाराज ॥ यह गढ़ आप कौ है जाहि दियौ चाहौ
ताहि देउ हंस कही ॥ यह वात ऐसें ही है वहुरि चकवा वोल्यौ ॥ सुनौं

हमारौ तिहारौ एकही है॥ परअब कछु अधिक कहिवे कौ प्रयो
जन नाहिं गीध वोल्यौ महाराज नीति शास्त्र में कह्यौ है कि ॥ लोभी कौ
धन दै भलौ मना इये उग्र होय ताकी कर जोर स्तुति गाइये॥ मूरख
कौ कह्यौ राखियें पंडित ते सत्य भाषिये॥ देवता की निष्कपट पूजा
कीजे॥ मित्र बंधु कौं अति आदर दीजै॥ सेवक औ स्त्री कौं दान
मान तें वस करियें॥ तौ या कठिन संसार में सुख सों दिन भरियें॥ ता
तें हौं कहतु हौं कि जो उचित होय सो अब करियें॥ चकवा वोल्यौ
जो संधि की रीति है सो कहौ॥ अधिक बात कहिवे तें कहा काम पुनि
राजा हंस ने कह्यौ कि॥ संधि के कितेक प्रकार हैं सो कहौ॥ ✤ ॥
गीध वोल्यौ धर्मावतार॥ हौं कहतु हौं आप चित दै सुनिये क
ह्यौ है कि॥ जब बलवान पै अति बलवंत चढ़ि आवै॥ अरु वापर या
कौ कछु बल न चलै तब संधि उपाय करै॥ संधि के नाम भूपाल उपहार
संतान संगति उपन्यास प्रतिकार संयोग पुरुषार्थ अदृष्ट जीवन आ
त्मा॥ उपग्रह परिक्रिय उच्छिन्न परिभूषन अरु ये संधि गति हैं समान
तातें द्वै राजा मिलैं सो भूपाल संधि कहावे॥ दान दै प्रीति करै ताहि उप
हार संधि कहतु हैं॥ दासी दै मिलै वाहि संतान संधि कहियै॥ पांच सात
मिल बीच में परि प्रीति करावें॥ ताहि संगति संधि कही गावें॥ द्वै राजा
एकही काज करि॥ आपुस मांहिं हित राखैं॥ सो उपन्यास संधि॥ अब
हम इनकौ काज सारें॥ पाछे ये हमारे काज आय हैं॥ ऐसें विचारि जो
मिलै॥ सो प्रतिकार संधि एकही शत्रु पर द्वै नरपति चढ़ैं अरु पैंड़े में
मिलैं वह संयोग संधि॥ आपने जोधान कौं साथ लै मिलै॥ वाहि पुरुषा
र्थ संधि कहैं॥ तुम वाहि मारौ॥ हम तिहारे ह्वै रहैं॥ यौं कहि मिलै सो
अदृष्ट संधि॥ भूमि दै प्रीति करै वह जीवन संधि प्रान राखिवे कौं सर्वस
देय ताहि आत्मा संधि कहैं॥ आपनौं कटक सेवा कौं पठावै सो उपग्र
संधि॥ द्वै राजा आपुस में वैर भाव राखैं॥ पुनि काहू शत्रु के घेरे में आय

दोऊ मिल जांय॥ सो परिक्रिय संधि॥ सार भूमि दै मिलै॥ वह उच्छिन्न संधि॥ जो द्रव्य उपजैगो सो तुम कौं दै हैं॥ पर निकट जिन आवो॥ ऐसें कहि मिलै॥ वाहि परिभूषन संधि कहियै॥ ❦॥ ॥ इतेक बातें कहि गीध बोल्यौ महाराज मैं सब संधि कहीं॥ पर या समय उपहार संधि ही भली है क्यौं कि जो बलवंत आपनौं देस छांड़ि गांठि कौ धन खाय आवै सो बिन भेट लियें न जाय॥ तातें बिन दियें संधि न होय॥ अब धन दीजै औ उपहार संधि कीजै चकवा बोल्यौ सुनौं॥ यह आपनौं वह परायौ ऐसो जे विचारतु हैं॥ ते अधम जन हैं अरु उत्तम जननि कौ तौ ऐसौ विचार नाहिं॥ वे तौ सब सृष्टि ही कौ कुटुंब जानतु हैं॥ कह्यौ है॥ जे पुरुष परस्त्री कौं माता करि मानें औ दूजे के धन कौं माटी समान जानें पुनि सब जीवन की जीव आपनौं सौ गनें॥ तेई या जगत में पंडित औ धर्मात्मा हैं॥ बहुरि गीध कही तुम यह कहा कहतु हौ सुनौं॥ मेरें जान जिन संसार में आय या छिनभङ्गु देह का धर्म्म छांड्यौ तिन सर्वस गंवायौ॥ कहतु हैं कि जैसें जल मांहि पवन चलें॥ चंद्र को प्रतिबिंब चंचल रहतु है॥ तैसें ही प्रानी कौ मन सदा अस्थिर रहतु है॥ तातें या मनुष कौं उचित है कि देह की माया छांड़ि आपने कल्यान कौ काज विचारै अरु सदा सर्वदा सज्जननि की संगति करै क्यौं कि वासों धर्म औ सुख दोऊ मिलें॥ यासों हौं कहतु हौं जो मेरौ कह्यौ मानौं तौ ऐसें ही करौ कह्यौ है॥ सहस्र अश्वमेध की समान सत्य है॥ पर जो रिवयै तौ सत्य ही अधिक होय॥ याते हौं कहतु हौं कि॥ अब दोऊ नरपति सत्य बीच दै मिलौ॥ अरु उपहार संधि करौ तौ अति उत्तम है क्यौं कि या में सांप मरै न लाठी टूटै॥ चकवा बोल्यौ॥ तुम नीकी बात कही यह सुनत ही राजा हंसेंने रत्न वस्त्र अलंकार द्रव्य दूरदर्शी गीध कौं दियौ॥ अरु बिनहूं लै प्रसन्न व्है सर्वज्ञ चकवा कौं साथ करि राजा हंस सों बिदा होय आपने कटक कौं प्रस्थान कियौ॥ व्हां जाय ह्यां कौ

सब वृत्तांत सुनायौ ॥ औ चकवा कौं राजा चित्रबरन तें अति आद रमानसों मिलायौ ॥ तब राजानें हू बड़े मान सौं पान औ प्रसाद दे चकवा कौं बिदा कियौ ॥ इत चकवा राजा हंस के निकट आयौ ॥ अरु उत गीध नें चित्रबरन कौं टेर सुनायौ कि महाराज॥ तिहारी सब मनकी वांछा पूजी ॥ अब कुशल क्षेम आपनें देस चलौ यह सुनि राजा मयूर वहांतें चल्यौ अरु आनन्द तें आपनी राजधानी में पहुच्यौ॥ दोऊ राजा आप आपनें देस में सुखसों राज करनि लागे ॥ इतनी कथा कथ विस्नुशर्मा बोल्यौ महाराजकुमार अब जो कछु तुम्हें सुनवेकी इच्छा होयसो कहौ ॥ राजपुत्रनि कही अहो गुरुदेव ॥ हमनें तिहारे प्रसादतें राजनीति के सब अंग जानें ॥ सुखपायौ अज्ञान नसायौ ॥ मन कौं खेद गंवायौ मानौं नयौ जन्म भयौ ॥ इति संधिनाम चतुर्थकथा संग्रहः संपूर्णः ॥ ५ ॥ ॥ ॥

॥ लब्धप्रनाशः ॥

विस्नुशर्मा बोल्यौ सुनिये महाराजकुमार ॥ या कथा के पढ़े सुनेतें ॥ मनुष कठिनता के समुद्र कौं ऐसें तरै जैसें वानर आपनी बुद्धि सों तर्यौ ॥ अरु जो कपसों काज लियौ चाहै ॥ औ अधूरे काम मांहि मनोरथ कहि देय ॥ सो ऐसें ठगायौ जाय ॥ जैसें मगर मच्छ ठगायौ गयौ ॥ राजपुत्रनि कही यह कैसी कथा है ॥ तब विस्नुशर्मा कहनि लाग्यौ ॥ ॥ समुद्र के तीर काहू ठौर एक जामन कौ पेड़ सफल तापै रक्तमुख नाम एक वानर रहैं काहू समें सागर की लहर कौं मार्यौ ॥ एक विकराल नाम मगरमच्छ वहां आयौ अरु दह

तेरे कोमल वालूनें आय बैठौ। तब मगर कठ नें वासौं कही अहो। तू आज मेरौ पाहुनौ है ॥ यातें मैं जंबू फल देतुहौं ॥ तू मन भरि भोजन कर कह्यौ है ॥ हित होयकै अनहित पंडित होयकै मूर्ख भोजन समय आवै तासों अतिथि धर्म कीजै ॥ दोहा ॥ आवै भोजन के समय शत्रु चोर चंडार अतिथि जानि पूजा करैं जग में परम उदार ॥ आगे वह मगर फल खाय फल खाय संतुष्ट भयौ पुनि नित आवै नित जाय भली भली बातें कहै सुनैं फल खाय अरु पाके पाके फल आपनी स्त्री हू के लिये लै जाय ॥ एक दिन वानें पूछी अहो कंत ॥ ये अमृत फल तुम कहांतें ल्यावतु हौ ॥ इन कही मेरौ एक परम मित्र रक्त मुख नाम वानर है॥ सो मोहि प्रीति सहित ये फल देतु है पुनि वह बोली जो ये अमृत फल नित खातु है॥ ताकौ करेजा अमृत सम होयगौ तातें तू वाकौ करेजा मो हि ल्याय दै ॥ मैं वाहि खाय तृप्त होय तो सो क्रीडा करैंगे ॥ मगर कहीऐक तौ वह मेरौ परम मित्र ॥ दूजे फलकौ दाता ॥ ताहि मैं कैसे मारि हौं ॥ कह्यौ है ॥ संसार में द्वै प्रकारके भाई होतु हैं ॥ एक तौ माजायौ ॥ दूजौ मुखगायौ ॥ पर आपनें सहोदर भाई तें वाहि अधिक जानियै ॥ बहुरि वह बोली सुनि ॥ अवलौं तौ मेरौ कह्यौ तें कबहू न उलंघ्यौ हो ॥ पर आज तें न मान्यौ ॥ तातें मैं जान्यौ कि ॥ जाहि तू वानर कहतु हैं सो नाहिं वह वानरी है तातें तू आशक्त भयौ है ॥ वाही के अनुरागतें दिन भर व्हां रहतु है सो मैं जान्यौ ॥ याही तें तू मेरे पास आय वाही की बातें नित हँसि हँसि कह्यौ करतु है औ रात्रिकौं सोवत समैं तेरौ अङ्ग सिथिल रहतु हैं मैं अब बूझी कि तेरौ मन और नारिसों लाग्यौ है अधिक कहा कहौं जबलौं आपनी सौतकौ करेजा न खाउंगी तबलौं अन्न पानी न करौंगी ॥ अरु प्रान दै मरुंगी यह सुनि डरि मगर दीन ह्वै बोल्यौ ॥ प्यारी हौं तेरे पाय परतु हौं तू जिन रिसाय यौं सुनि वाहि

अधीन भयौ जानि आंखनिमें आंसू भरि बोली अरे धूर्त कंत॥ आजलौं तौ तें मेरे॥ अनेक मनोरथ साधे॥ पर अब तू औरसोंस्ने ह करि मेरौ निरादर करतु है॥ यातें तेरौ पायनकौ परबौ दूनौ उर दाहतु है॥ अरु जो तेरौ प्रेम वासों नाहीं॥ तौ क्यों न मेरौ नेम पूरौ करे॥ पुनि वह निज मनमें कहनि लाग्यौ कि साधु जन सांच कहतु हैं॥ दोहा॥ पाहन रेख रु तरुनि हठ कुकुट क्रोध सुभाव॥ नील रंग सम ना मिटै कीनेहु कोटि उपाव॥ ॥ तातें मोहि याके मनोरथ कौ यत्न करनौं बन्यौं॥ यह विचारि ह्यांतें उठि॥ वानर के पास जाय मगर अनमनौं ह्वै बैठि रह्यौ॥ पुनि मरकटनें वाहि उद्वेगी देखि कह्यौ अहो आज कहा है जो तुम कछु भाषत नांहि॥ अरु चिंतित होय बैठि रहे हौ॥ मगर बोल्यौ मित्र आज तेरी भाभीनें मोसों निठुर वचन कहि कह्यौ कि तू कृतघ्नी है अरु काहू के उपकार कौं न मानतु है न जानतु है क्यौं कि ऐसे उपकारी कौं तू एक बेरहू आपनें घर नांहीं ल्यावतु पुनि निर्लज्ज होय वाके घर काहे खाय खाय आवतु है॥ अब अधिक कहा कहौं जो तू मेरे उपकारी देवर कौं न ल्यावैगौ॥ तो मो कौं हू जीवतु न पावैगौ मित्र यातें मैं तौ ह्यांतें उदास होय॥ इत तेरे लेन कौं आयौ॥ औ उत उन तेरे कारन कंचन रत्नतें घर संवार॥ पाठंबर छाय बिछाय नाना भांति के पकवान विंजन बनाय राखे होंयगे॥ अरु पौरिपर वैठी॥ वापरी उत्कंठित बाट जोवति होयगी॥ वानर कही अहो मित्र॥ भाभीने यह बात तो तुम तें सांच ही कही क्यौंकि॥ ऐसें औरहू नैं और कह्यौ है॥ मित्रता के छः लच्छन हैं॥ दैनौं लेनौं निज दुख सुख कहिबौ वाकौ सुनिबौ वाके घर जीमनौ आपनें गेह जिमावनौं॥ ये बातें तौ प्रीति में अवश्यक चाहियैं॥ पर हम बनवासी तुम जलनिवासी तातें मेरौ जैबौं तौ ह्वां नांहीं बनतु॥ पै तुम कृपा करि भाभी कौं ह्यां लै आवौ॥ तौ मैं वाके पाय परि असीस लेउं मगर कही बंधु॥ हमा

रौ गेह जलमांहिँ नांहिँ जैसें समुद्र के तीर दूत तुम रहतु हौ। तैसें उत हम अरु जौ तुम न जावोगे तौ हमारौ गेह कैसें पवित्र हो यगो॥ याते तुम मेरी पीठ पर चढ लेउ। मैं तुम्है सुख सों लै चलौं बहुरि वानर कही भाई जौ ऐसौ है तौ अब बिलंब जिन करौ॥ वेगी ही चलौ यह कहि वा की पीठ पर चढि वैठ्यौ॥ अरु वह लै नीर में पैठ्यौ॥ पुनि औंडे में जाय वेग चलनि लाग्यौ तब वानर बोल्यौ भाई धीरै चलौ पानी की तरंग मोहि ठेलै देति है यह सुनि मगरनें निज मन में विचार्यौ कि अब तौ यह बंदरा मेरी पीठ तें तिल भर हू नाहीं खिसक सकतु॥ तातें हौं आपनौं मनोरथ क्यौं न कहौं॥ जो यह अंत समय जानि आपनौं इष्टदेव भजै॥ ऐसें जी में ठानि उनि वनचर सों कही मित्र हौं स्त्री के कहे विस्वास घात करि॥ तोहि मारिवे कौं लियै जातु हौं॥ तुम आपनौ इष्टदेव भजौ अरु जग की माया तजौ॥ वानर कही भाई मैं भाभी कौ ऐसौ कहा अपराध कियौ जु तुम मोहि मारनि कौं साथ लियौ॥ मगर बोल्यौ अहो तुम नित अमृत फल खातु हौ॥ यातें तिहारौ करेजा अमृत समान होयगौ॥ यह जानि उनि खैबे कौ मनोरथ कियौ है॥ अरु वा के मनोरथ पूरबे कौं मैं हू सिर पाप लियौ है कह्यौ है॥ अग्नि साख दै जा कौ कर गहियै ता की मन भायौ काज करियै॥ यह पुरुष को धर्म है॥ या बात कौं सुनि रक्तमुख वानरनें वा की मूरखता देखि उक्ति युक्ति सों वा के मनोरथ पर मनोहर वचन सुनाये कि मित्र जो तेरौ ऐसौ ही विचार हो॥ तौ तें मों तें व्हां ही क्यौं न कह्यौ जो मैं आपनौ करेजा जंबू तरु में न राखि आवतौ॥ यह तौ मोपै भाभी के पाय लागवे की बडी भेट ही कह्यौ है राज द्वार देव द्वार गुरु द्वार सूनै हाथ जैबौ उचित नाहीं॥ पर हौं तौ हृदय सून्य होय या अगाध जल में तेरी गैल चल्यौ आयो॥ अरु सुनि॥ सब प्रानी कौं भय होतु है॥ क्यौंकि भय कौ निवास देह में करेजा है याही तें जीव सोच करि चलतु हैं॥ आ

गके पायकौ खारकरि पाचलौ पग उठावतु हैं॥ औ हम वनचर ध
र धरती पगहू न धरैं ताही तें हमारौ नाम ब्रह्मा नें शाखामृग धर्यौ
है सो आपनें कुलधर्म सों भय कौ निवास जो करेजा ताहि निकारि
रूख के खोतर में धरि॥ निरभय ह्वै डारि डारि डोरि डोरि कूदि कूदि
फिरतु हौं अरु अवहीं तेरे संग आवत जा मन के खोडर सो यत्न सों धरि
आयौ॥ विन हृदय तेरे साथ निरभय ह्वै उठि धायौ॥ यद्यपि हमारौ हृद
य विधाता ने संसार की रीति तें वनायौ है॥ परव हू हमारे काहू काज कौ
नांहिं अरु तुम सोई चाहतु हौ॥ यातें उत्तम कह्यो जो तिहारे काज आवै
कह्यौ है ॥ दोहा ॥ धन दैकै जिय राखिये जिय दै राखियै लाज॥ धन दै
जी दै लाज दै एक प्रीति के काज॥ इतनी वात के सुनते ही॥ मगर आनं
त ह्वैं कै रह्यौ॥ अहो प्रीतम जौ ऐसी वात है तौ आपनौ करेजा मोहि
दै॥ जुवा दुष्ट पत्नी कौ हठ रहै अरु तेरी जीव वचै मोहि मित्र द्रोह
का पाप न लागै इतनौं कहि पाछौ फिर्यौ॥ पुनि वे दोऊ आप आप
नैं इष्ट सुमिरन लागे कह्यौ है अधर्मी कौ मनोरथ इष्ट देव भजे हू
निष्फल होय॥ आगे वानर आपने पुन्य प्रताप सों तीर पै जाय॥ मग
र की पीठ तें उतरि लांवी लांवी डगैं भरि॥ जंवूवृक्ष पर जाय वैठ्यौ॥
औ मन में कहनि लाग्यौ कि॥ मैं आज नयौ जन्म पायौ जु॥ या दुष्ट के
हाथ तें वचि आयौ कह्यौ है कि जाकौ विस्वास जीमें न आवै ताकौ वि
स्वास कबहू न कीजै पात्र कुपात्र विचारियै जाकौ जैसौ सुभाव होय
ता सों तैसें ही निवाहियै॥ अरु दुष्ट के मीठे वचननि पर न जाइयै
कौ कि वह आपनी घात ही सों कहै ॥ ❀ ॥ ॥ यह तौ ऐसें विचार र
ह्यौ हो॥ तामें मगर वोल्यौ भाई॥ वैठि काहे रह्यौ वह करेजा मोहि दै॥
मैं तेरी भाभी कौं जाय देउं॥ वानर कही मित्र॥ अथाह जल में गये
तें श्रम भयौ है॥ तातें मोपै वोल्यौ नाहीं जातु मगर कही बंधु॥ पुरुष
कौं कह्यौ है कि श्रम जीत परमार्थ पुरुषार्थ करै यह सुनि॥ वानर रि

सायके वोल्यौ अरे मूरख विस्वास घाती तोहि औ तेरी मति कौं धिक्कार है॥ क्यौं कि काहू के हू करेजा हू होतु हैं अवतृक्षांनें जा फेर जिन आवनौं॥ कह्यो है जासों एक बेर जीव बचा ह्वै॥ पुनि वाहि कबहू न पतियाइये॥ अरु जो वाकौं बहुरि विस्वास करै तौ निदान अनेक दुख भरि निस्संदेह मरै॥ ये वातें वानरतें सुनि मगर चिन्ता करि कहनि लाग्यौ कि मैं अभागे यह कहा कियौ जु॥ काज बिन भये आपनैं कपट याके आगे कह दियौ॥ अब काहू भांति यातें विस्वास उपजाय॥ पुनि याहि दांव में ल्याऊं तौ भलौ॥ ऐसें मन में ठानि हंसकै वोल्यौ कि हे मित्र तेरी भाभी कौं तौ या बात तें कछू प्रयोजन न हो॥ पर हौं हंसी की रीति तेरी प्रीति की परीक्षा लेतु हो॥ तुम मन में कछु जिन ल्यावौ औ मेरी गैल आवौ॥ कपि कही अरे दुष्ट जलचर॥ तू ह्यां तें जा हौं आवन कौ नांहिं ऐसें गंगदत्त हूनें कह्यौ हो कि प्रियदरसन तें कहौ कि फेर गंगदत्त कुवा में आवन कौं नांहि मगर कही यह कैसी कथा है॥ पुनि मरकट कहनि लाग्यौ॥ ॥

काहू एक कुवा में गंगदत्त नाम मेंडुक मेंडुकन कौ राजा रहै॥ वाकौ कुटुंब तें बैर भयौ॥ तब वह अरहट की माल पै बैठि॥ कूप तें बाहर आय विचारन लाग्यौ कि अब कौन उपाय तें वैरियन मारि निष्कंटक राज करौं॥ यह विचार करतु हो कि॥ वानें एक कारौ नाग बिल में पैठतु देख्यौ॥ अरु याहि वह प्यारौ लाग्यौ तब वोल्यौ कि या सों प्रीत करि शत्रुन कौं नाश करौं कह्यौ है कि रिपु मारिवे कौं अति बलवंत शत्रु सों स्नेह करिये औ ससा के मारिवे कौं बाघ कौ बल धरिये॥ थोरौ पराक्रम कबहू न करिये॥ ना तौ अवश्य हारियै ऐसें जी में ठानि सर्प के बिल द्वार पै जाय पुकार्यौ अहो प्रियदरसन मेरौ तुम कौं प्रनाम है बाहर आवौ यह सुनि वा सांपनें निज मन में विचार्यौ कि जो मोहि बुलावतु हैं सो मेरौ सजा

नीतौ नांहिं॥ क्यौंकि सर्प कौं शत्रुता ही॥ औ न काहू सों मित्राई याते प्रथम याहि भीतर बैठे ही जान लीजै॥ तब वा हू स्यौ यही जै कह्यौ है जाकौ शील स्वभाव न जानियै तासों वेग ही न मिल वैठियै यह बृहस्पति कौ वचन है॥ अरु जौ मैं तुरंत ही बिन समझे बिल तें बाहर निकरौं तौ न जानियै कि कोउ वैरी मंत्रवादी पकरै तातें याहि जान्यौं चाहियै यौं विचार कहीं तें बोल्यौ अरे॥ तू को है जु मोहि टेरतु है॥ इन कही हौं गंगदत्त नाम मेंडुक मेंडुकन कौ राजा हौं तो सौं मेरी सहायता होगी यातें मित्राई करन आयौ हौं॥ सर्प कही अहो यह अनमिलसङ्ग है तृन अग्नि कैसी मित्राई पर अबतू मेरे घर आयौ या तैं मैं कहा कहौं कह्यौ है जासों अपनी मृत्यु जानियै ताकैं नेरे सपनें हू न जाइयै॥ पैतैं ऐसी कहा विचारी गंगदत्त कही अहो॥ यह तौ सांच है अरु हम तुम जन्म ही के वैरी हैं॥ पर हौं शत्रु की निरादर ह्वै तुम पास आयौ कह्यौ है॥ पग में कांटो चुभै तौ सुवा सों काढियै॥ तब सबल शत्रु कौ आसरौ गहि प्रान धन राखियै॥ पुनि नाग बोल्यौ तोसों शत्रु कौं न सों है॥ इन कही कुटुंब सों उन पूछ्यौ तेरौ निवास कूप तडाग वापी कहां है इन कह्यौ पाथरन तें बंधे कुवां में रहतु हौं सांप बोल्यौ तौ तौ न बनी क्यौं कि तहां मोसौं नगयौ जायगौ कह्यौ है॥ अतिमीठौ भोजन होय तौ हू पेट भर खाइयै अधिक लोभ न करियै लोभ करे विगार होय दुख पावै॥ पुनि गंगदत्त कही अहो॥ ऐसौ कह्यौ है कि भेदी मिलें कठिन ठौर हू सुगम ह्वै जातु है॥ जैसें घर के भेदी लंका खोई॥ अब मैं तुम तें ह्वां को सारौ भेद कहतु हौं॥ तुम चित दै सुनौं वा कुवां के ऊपर रहट चलतु है ताकी मालतें लागि नीचै जाय एक खवाल में बैठि तुम हमारे शत्रुनि निश्चिंताई सों खावो॥ अरु चैन सो बैठि मंगल गावौं॥ हौं तुम से आचार्य कौं आपनी गाढ में कछु समझ ही लियो जातु हौं॥ तासों तुम काहू भांति की चिंता जिन करौ॥ बेग

चल के मेरी राज धानी की रक्षा करौ॥ इतनी सुनि सर्पनें विचास्यौ कि यह कोऊ मेरे भाग तें मोहि आपने कुल कौ अंगार आय मिल्यौ है अरु मोहितौ या ठौर अहार हू नाहीं जुरतु या तें वा ठौर याके संग जाउं तौ विन श्रम वैठ्यौ अहार पाऊं कह्यौ है कि॥ जब देह कौ वल घटै अरु कोऊ सहायक न होय तव पंडित होय सो आपनी जीविका की वृत्ति विचारै॥ ऐसें सर्पनें निज मन में ठानि गंगदत्त सौं कही॥ आजतैं तू मेरौ मित्र भयौ अब व्हां लै चल जाहि कहै गौ ताहि खाऊंगौ॥ याही रितिसौं वातें वचन कहि॥ नाग बिलतें वाहर आयौ॥ पुनि दोऊ वतराय कूप पै आय रहट की माल में लागि वामाहि धसे औ खवाल बीच वसे आगे गंगदत्तनें आपनें शत्रु चीन्ह चीन्ह वताये॥ उन वीन वीन खाये जब विनमें तें कोऊ न रह्यौ तव सर्पनें गंगदत्त सौं कह्यौ कि मित्र॥ मैंनें तेरौ कैसौ काम कर दियौ जु शत्रु नि मारि निर्कंटक राज कियौ॥ गंगदत्त वोल्यौ कि भाई जैसें भले मित्र काज करतु हैं॥ तैसें तुम कीनौ अरु मोहि सुख दीन्हौं॥ पर अब याही अरहट की माल लागि आपनें धाम पधारौ॥ नाग कह्यौ हितू यह कहा कहतु है तें मेरौ घर खुडायो मो कौं ह्यां लै आयौ॥ व्हो और ही मेरौ सजाती आनि रह्यौ होयगो सो मोहि विलमें काहे वडुन देयगौ॥ ह्यां सौं तें मोहि आन्यौ अपनौं क रि ठान्यौ॥ अव मेरे अहार की चिन्ता कर॥ नातौ हमसौं तुमसौं नवनि है कह्यौ है॥ अहारे व्याहारे लज्जा न करे॥ यह वात सुनि गंगदत्तकौं उत्तर न आयो तव मिज मंन में पछितायो॥ कि मैं मरखय ह कहा कियौ॥ जु आपनौ घर दिया लै दिखाय दियौ॥ अव यह सौ विरोध के वचन कहतु हैं कह्यौ है कि॥ सर्वस जातो जानिये तौ आधौ दीजै वांट॥ तातें याके खैवेकौं आपनी नगर में डुकन तें एक एक नित दीजै॥ ऐसें मन में ठहराय वोल्यौ भाई॥ तुम अपनें

अहारकौं मेरी वाखलतें एक दादुर नितले हु अरुजैसें आपनें घरर हियतुहै तैसें रहौ॥ वह वाही भांति रहनि लाग्यौ॥ ॥ ॥

एक दिन गंगदत्त कौ पुत्र सुभदत्त नाम वा के अहार में आयौ तव गंग दत्त रोवत रोवत आपनी स्त्री के सन्मुख धायौ॥ उनक ह्यौरे कुटुम्ब के मारनहारे॥ अव कौं रोवतु है तोहि तौ कुटुम्ब कौ पाप लाग्यौ॥ पर अव निज प्रान राखिवे कौ यत्न कर॥ यह वात सुन गंगदत्तनें आपने कियेकौ वहुत परेखौ कियौ॥ आगे जव के वल गंगदत्त ही रह्यौ तव प्रियदरसन नें विचार्‌यौ कि यासों मोसौं वोल वचन है॥ तातें यातें भोजन मांगौ॥ अव तौ हौं ही रह्यौ तव याहि छल करि खाउंगो॥ सर्पनें ऐसें मन में ठानि गंगदत्तसों कह्यौ रे प्रीतम॥ अव तौ यहां मेंडुक नांहिं॥ अरु मोंहि भूख लागी है॥ गंगदत्त वोल्यौ हे प्रीतम अव तौ हम तुम द्वै भाई ही रहे पर आज्ञा करौ तौ दूजौ व्याह करौं औ प्रजा वसाय कुटुंवतें घर भरौं॥ तुम मेरी राजधानी की चिंता करौ औ मैं तिहारे अहार की कहौ तौ अवही जाय ताल के मेंडुकनि भुलाय ल्याऊं॥ अरु फेर जौं कौ सौं नगर वसाऊं॥ सर्प कह्यौ वंधु यह तौ तुमनी की विचारी॥ यातें तौ तिहारी राजधानी रहै अरु मेरी जीविका हू चलै सुनि॥ अवलौं तू मेरौ भाई हो पर आज सौं तू मेरे पिता की समान है॥ इतनौ सुनि गंगदत्त रहट की माल लागि कुवां के वाहर आय निज मन में कहनि लाग्यौ कि मैं आज काल के गाल तें निकरि आयौ सु मानौं नयौ जन्म पायौ ऐसें कहि एक सरवर में जाय रह्यौ॥ अरु ह्वां नागनें कितेक वेर लौं वा की वाट जोई निदान घवरायकै वोल्यौ कि मैं अभागे यह कहा कियौ जु वाहि जीवत जानि दियौ सव दादुर कुवा के खायेपर जवलग गंगदत्त मेरी डाढ तरें न आयौ तवलौं हौं नेक हू न अघायौ ऐसें कहि कूप माहि एक गोह रहत ही इनतासों कह्यौ हे प्यारी तू मेरी संतुष्टता कौ काज करै तौ

हौं तोसों एक बात कहौं॥ वह बोली कह यानें कह्यो कि गंगदत्त ताल में मेंडुक लेनगयो है॥ ताहि जाय कहकि दादुर ले बेग चल॥ अरु वे न चलैं तौ तूही चल तेरे देखे ही वाकी भूख जैहै कह्यो है भूखप्यास सही जाय पर मित्र की वियोग न सह्यौ जाय॥ पुनि कहियौ कि उन मोसों कह्यौ है जु॥ मोहि भूख्यो जान मन में कुछ भय न करै जो मैं वासों द्रोह करौं तौ मेरे सब किये कर्म धो वी की नांद में परैं इतनी कहि सांप नें गोह कौं विदा कियो॥ वह कूपतें निकरि गंगदत्त के पास जाय नाग की संदेसौ सुनाय बोली कि उन कह्यौ है अब दोऊ मित्र बैठि धर्म चरचा करि हैं देखे वे की सोच जिन करौ प्रसन्न वारी कन कीरी औ मन कुंजर कौं देतु हैं गोह तें सब बात सुनि गंगदत्त बोल्यौ हे प्रिये कह्यौ है॥ भूख्यो कौन पाप न करै नीच जीव निर्दई होतु हैं तातें तू प्रियदरसन तें जाय कह कि अब गंगदत्त कुवा में आबन की नांहि ऐसें कहि उन गोह कौं विदा कियौ॥ इतनी कथा कहि वानर नें मगर सों कह्यौ अरे दुष्ट जलचर तू ह्यांतें जा हौं गंगदत्त की भांति फेर तेरे घर जान की नाहीं पुनि मगर कही मित्र॥ तुम्हें ऐसौ करनौं जोग नांहीं सुनौं जो तुम मेरौ कृतघ्न दोष दूर न करि हौ तौ मैं तिहारे बार उपवास करि मरि हौं॥ वानर बोल्यौ रे मूढ़ तू केतौ ऊ करि॥ पर मैं लब करन गदहा की भांति फेर न आऊंगो॥ मगर कही यह कैसी कथा है॥ तहां वानर कहतु है॥ ॐ॥ ॥ काहू वन में एक करालकेश नाम सिंह अरु ताकौ सेवक धूसर नाम स्यार है॥ सु काहू समें वह सिंह गज सों लर्‌यौ॥ वाके शरीर में चोट लागी॥ ऐसी कि बातें एक डग हू न चल्यौ जाय॥ यासों वाहि अहार न जुर्‌यौ तब जम्बुक बोल्यौ कि स्वामी॥ मेरौ तौ मारे भूख के प्रान जातु है॥ अरु तिहारी सो यह गति है जु डग भर हू नाहीं चल्यौ जातु॥ मैं सेवा कैसें करौं॥ सिंह कही अरे तू कहूं कोऊ जीव जाय देख जो मेरी यह दसा है॥ तौ हू ताहि मारि

हीं यह सुनि स्यार ह्यातें चलि गांव के निकट आय देखै तौ एक ताल के तीर लंबकरन नाम गदहा चरतु है वाहि देखि यानें कह्यो मामा तोहि मेरो प्रनाम है ॥ आज अनेक दिन पाछे मैं तिहारो दरसन पायो अरु सब दुखपाप गंवायो यों कहि ॥ वह धूर्त पुनि बोल्यो मामा॥ अबके तोहि अति दुर्बल देखतु हौं सु कहा है उन कही ॥ अहो भगिनी सुत ॥ कहा करौं यह घुबिया बडो निर्दई है मोपै बहुत भार लादतु है ॥ अरु एक मूठी हू अनाज नांहीं देतु ॥ हौं धूर मिश्रित रूखे सूखे तृन खाय रहतु हौं तुमही विचारौ ॥ तातें देह कैसें देह पुष्ट होय स्यार कही मामा जो तू ऐसी विपत में है ॥ तौ मेरे साथ चलि मैं तोहि अच्छी ठौर लै जाऊं तहां नदी के तीर मरकत मनि के वरन हरी हरी दूब चरौ औ आनंद तें विचरौ ॥ अरु हम तुम तहां बैठि अच्छी अच्छी बातें करैं औ रहैं ॥ ❖ ॥ ॥ लंबकरन बोल्यो अहो भगिनी सुत यह तो तैं भली बात कही पर तुम वन वासी मइ नगर निवासी तिहारी जीविका मास तें हमारी तृन नाज तें यातें हमारो तिहारो मेल कैसें बनें ॥ अरु वह भली ठाम हमारे कौंन काज की ॥ स्यार कही मामा ॥ ऐसें जिन कहौं वा ठौर तुम मेरी भुजानि के बल तें रहौ ॥ ह्यां काहू भांति को दुख भय नांहीं औरहू गदही अनेक आपनी आजीविका के लये रहति हैं ॥ मो पाहीं औ ते आई ही ॥ तब अति दुर्बल ह्वै रही हीं ॥ तातें महा कुरूप दीसति हीं ॥ मेरे आश्रम में आय उननि सुख पायो अहार मुकतौ खायो ॥ तासों वे पुष्ट होय चंपा वरनी ह्वै रही हैं अरु वे काम की सताई मोसों निसंक आपनें मनोरथ आय आय कहति हैं ॥ औ तामें आज प्रातही एक मामी नें मोतें आय कही कि तेरो मामा सपनें में मेरो पति भयो है ताहि ल्याय मोसों मिलाय दै यातें तुम वेग चलो ॥ ना तौ वाहि कोऊ औरु लै जायगो ॥ यह बात सुनि कामातुर होय ॥ लंब

करन बोल्यौ ॥ अहो भानेज जो ऐसी बात है तौ आग होय तौ हूं मैं चलौं गौ ॥ कह्यौ है स्त्री में द्वै गुन ॥ एक अमृत औ दूजौ विष ॥ संयोग अमृत औ वियोग विष ॥ पुनि जाकौ नाम लियें मनुष प्रसन्न होय ताकौ मिलन सुखतौ अधिक ही होयगौ ॥ आगे वह स्यार गदहा कौं फुसलाय लै गयौ औ सिंह गदहा कौं देखत ही धायौ तब यह भयमान ह्वै परायौ ॥ औ वाके हाथ तौ न आयौ पर नाहरके हाथ की चोट याके शरीरमें लागी सिंह अछताय पछताय बैठि रह्यौ तब जंबुक बोल्यौ कि तुम यह कहा कियौ जु गदहा छांडि दियौ ॥ बस देख्यौ तेरौ पराक्रम जौ याही कौं न मार सक्यौ तौ ॥ तौ हाथी कैसै मारैगौ नाहर कही अरे एक तौ मेरी देह निर्बल दूजै वाकौ आवनौं मैं न जान्यौं यातें वह निकरिगयौ ॥ नातौ हाथी खेद मारौं ॥ पुनि स्यार बोल्यौ भलौ जो भयौ सो भयौ वाहि जानि देउ अबहौं वाहि फेर ल्यावतु ही तुम सावधान होय बैठौ सिंह कही अरे ॥ जो मोहि देखि गयौ है सो फेर कैसे आवैगौ ॥ स्यार बोल्यौ तुम आपनें पराक्रम की बात कहौ वाहि ल्यावन की हौं जानौं यह बात सुनि सिंह सचेत ह्वै ऐंठि बैठ्यौ ॥ औ स्यार तहां तें चलि नगर में पैठ्यौ ॥ गदहा के ढिग जाय हंसिकै बोल्यौ ॥ अरे मामा तू वहां तें कौं बगदि आयौ उनि कही अहो भगिनी सुत तूमोहि भली ठौर लैगयै जु मैंनी ठनीठ मीच के हाथतें बचि आयौ ॥ वह कौन जंतु हो ताके हाथकी चोट मेरे शरीरमें वज्र समलागी ॥ स्यारनें मुसकुराय कै कही मामा वह तौ मामी ही तो कौं आवतु देखि अनुरागतें आतुर होय आलिंगन करिवे कौं उठी ही परतू नपुंसक जु भाग्यौ सु वह सकुच करि वहाही बैठगई ॥ कह्यौ है जब स्त्री क्रीडा समय ढीठ होय ढिठाई करै ॥ अरु वाके भर्त्तारसौं कछु काज न सरै तबवह आपनी ढिठाई नें आप लज्जित होय अब वानें मोसौं कह्यौ है कि जाके शरीरमें मेरी

हाथ लाग्यौ मैं ताही कौं वरिहौं नातौ लंघन करि करि मरिहौं तूही ताके मनमें वस्यौ है तेरीही विरहसों वह वापरी दुख पावति है॥ यातें हौं कहतु हौं कि तू वेग चलि वाकौ मनोरथ पूरौ करन जानिये॥ जो विरह विथा तें वाकौ जीव निकरि जाय तौ तोहि स्त्री हत्या कौ पाप लागे॥ कह्यौ है वालक स्त्री गौ ब्राह्मन की हत्या तें महा नरक भोगनौ होतु है औ भगवान नें संसारमें नारी वडी वस्तु वनाई है ताही तें सव कौं प्रिय है ॥ दोहा॥ नारी नारी सव कहै नारी नरकी खान॥ अंत कालमें देखियै नारी ही में प्रान॥ अरु जे स्वर्गकी इच्छा करि नारी कौं तजतु हैं तिन कौं कामदेव पीड़ा देतु है देखौ॥ कोउ नग्न होय छारमें लोटतु है॥ कोउ आपनें हाथ आपनौ सिर खसोटतु है॥ कोउ जटा राखि पंचाग्नि माहिं वैठि जरतु है॥ कोउ कपाली आसन मारि औ ऊर्ध्व वाहु होय दुख भरतु है पुनि कह्यौ है॥ नारी सव सुख की जर है॥ इतनौं कहि वहुरि स्यार वोल्यौ कि मामा॥ हौं तिहारे हित होय कहतु हौं क्यौं कि तिहारे सुख तें हमें सुख है॥ औ दुख तें दुख आगे गदहा स्यार कौ उपदेस सुनि कामांध होय हरखि पुनि वाके साथ चल्यौ॥ कह्यौ है कि॥ जव मनुष कर्मके वस होय तव खोटी वात जानकै हू नमानै॥ विन किये न रहै॥ पुनि ज्यौं खर वहां गयौ॥ त्यौं ही सिंह नें मारि लियौ ॥ ५७ ॥ ॥ आगे सिंह स्यार कौं गदहा के ढिग राखि आप नदी न्है वे गयौ॥ जौ लौं वह स्नान ध्यान पूजा तर्पन करि आवै तौ लौं स्यार चंडार नें छुधा के मारे गदहा के कान नैन औ हियौ लै भक्षन कियौ॥ सिंह आनि देखै तौ वाकौ हृदय औ नेत्र कर्न नाहिं॥ तव उनि स्यार सों कह्यौ अरे यह तैं कहा कियौ जु आंख कान औ हियौ याकौ काढि खाय लियौ॥ तेरौ झूठौ मैं कैसें खाऊं स्यार कही स्वामी॥ ऐसौ जिन कहै॥ या जीव कौ कान आंख हियौ होत नाहीं॥ क्यौं कि कान होते तौ तिहारौ नाम इन या वन में सुन्यौं होतौ॥ अरु नेत्र होते तौ तु

हों देखि फेर न आवतौ ॥ औ हियौ होतौ तौ तिहारे करकी चोट खाय फेर न भूल जातौ यह बात स्यारतें सुनि सिंहनें गदहा बांधि खायौ इतनी कहि बानर बोल्यौ अरे जलचर॥ हौं लंबकरन नाहिं जु तेरे साथ अब आऊं क्यौं कि तैं प्रथम ही मोसों कपट कियौ बहुरि युधिष्ठिर कुम्हार की भांति सब भेद कहि दियौ मगर कही यह कैसी कथा है तहां बानर कहतु है ॥ ५० ॥ ॥ एक समें काहू देस में अति वर्षा भई तातें काल पस्यौ ॥ तब वहां के रजपूत कितेक कहूं चाकरी कौं चले तिनके साथ युधिष्ठिर नाम एक कुम्हार हू व्है लियौ वाके माथे में घाव हो कितेक दिन में काहू और देस मांहि जाय एक राजा के ह्यां चाकर भये कुम्हार के लिलार कौ घाव देखि राजानें आपनें जी में विचास्यौ कि ॥ यह कोउ बडौ सूर है जु यानें सन्मुख चोट खाई है यातें राजा वाहि वाके सब साथियन तें अधिक मानें एक दिन वह नरपति आपनें सब सुभटन सहित सभा में बैठ्यौ हो कि वानें यासों पूछ्यौ ॥ अहो रावत यह घाव तुम मस्तक पर कौनसी लराइ में खायौ इन कही महाराज मेरौ नाम युधिष्ठिर है यातें हौं झूठ नाही बोलतु मैं रजपूत नाहीं जात कौ कुम्हार हौं ॥ अरु यह घाव मैंनें रन में नांहीं खायौ ॥ याकौ भेद कहतु हौं सुनौ कि मेरे पिता के व्याह को उछाह हो तहां मैंहूं आपनी मंडली में भांग पी घर में दौस्यौ ॥ सु ठखट पस्यौ एक ठीकरा मूंडमें पैठ्यौ ताकौ यह चिन्ह है इतनी बात सुनते ही राजा रिस करि बोल्यौ इन मोहि धोखौ दियौ॥ अरु याके लिये मैंनें इन राजपूतन कौ अपमान कियौ अब याहि धकाय काढौं ॥ कुम्हार कही महाराज ऐसें जिन कीजे वरन युद्ध में मेरी परिक्षा लीजे ॥ राजा बोल्यौ अरे सब गुन संयुक्त कुल में तू जनम्यौ नांहि ऐसें स्यार सिसु कौं सिंहनी नें हू कह्यौ हो ॥ कुम्हार कही यह कैसी कथा है तब राजा कहन लाग्यौ ॥ ५१ ॥ ॥

काहू वनमें एक सिंह ओ सिंहिनी रहें सु सिंहनीनें द्वै सिसु जाये॥ तद वाकौ पति वाके लियें अनेक अनेक भांति के जीव औ जंतु मारि ल्यावे एक दिन वह सारौ दिवस फिर्यौ पै वाके हाथ कोऊ जंतु न आयौ जब सूरज अस्त भयौ तब निरास हो घरको आवन लाग्यौ॥ तहां गैलमें एक स्यारकौ सुत तुरतकौ जायौ इन पायौ॥ ताहि जतन सों मुंहमें राखि सिंहनीके ढिग जीवतु ल्यायौ वाहि देखि वाघनि बोली हे नाथ कहा आज और जंतु न पायौ सिंह कही भद्रे सगरौ दिन भटक्यौ॥ परकछु हाथ न आयौ॥ अबही डगरमें आवतु यह हाथ पर्यौ सु याहि बालक जानि मैं नांहिं मार्यौ॥ तेरे पथ्य के लिये ल्यायौ हौं॥ सिंहनी बोली स्वामी॥ यातें मेरौ पेट हू न भरैगौ॥ वृथा याहि कौं मारैं॥ कह्यौ है बाला बाल ब्राह्मन ये तीनौं अवध्य हैं विशेष आपनें घर आवें ताहि तौ कबहू न मारियें वाघ बोल्यौ॥ जो तें ऐसी विचारी तौ यह कैसें जियेगौ उन कही याहि मैं आपनौ दूध प्याय जिवाऊंगी॥ जैसें मेरे ये द्वै हैं तैसें तीसरौ यह हू रहै ऐसें कहि वह वाहि दूध प्यावन लागी आगे जब वे बडे भये तौ वे विन जानें इकठे रहैं॥ अरु स्यारसिसु तिनमें बडौ भाई कहावै॥ एक दिन वा वनमें हाथी आयौ तब सिंह सिसु बोल्यौ॥ अहो यह गज आपनें कुलकौ वैरी है चलौ याहि खेद मारैं॥ यह सुनि स्यार सिसु इतनौं कहि भग्यौ कि भाई याके सन्मुख कहां जात हौ॥ वाके साथ सिंह सिसु हू भगे अरु वे तीनौं घर आये कह्यौ है कि युद्ध समय आगे सूर होय तौ वाहि देखि औरन कौं हू सूरता होय अरु एक कायर संग्राम छोड़ भगै तौ वाके संग सब भगैं आगे सिंह सिसुनि आय मातासों कही कि मां यह हाथी देखि परायौ॥ अरु याके पाछें हम हूं आपनी निंदा सुनि स्यारकौ सिसु उनके मारिवे कौं उठ्यौ तब सिंहनी बोली॥ ये तो तें छोटे हैं तू इनतें बडौ है॥ यातें तोहि इन पै क्रोध करनौं उचित नांहिं॥ उन कही ये मेरी निंदा करतु हैं सो कहा हौं इनतें कुल बरन पराक्रम में घाट हौं कै

हाथी नांहीं मार जानतु यह सुनि सिंहनीनें वापै दया करि वाहि एकांत लै जाय कह्यौ कि पूत तू सुंदर औ बलवान है॥ परवा कुलमें जनम्यौ नांहिं जु हाथी मारै॥ अरे तू तौ स्यार है मैं तोहि दया करि आपनों दूध प्याय जिवायौ है॥ सुयै तोहि जानतु नांहिं अरु अब इनतें तोतें विरुद्ध भयौ येतो हि विनमारे नरहैं मै यातें हौं कहति हौं कि तू अब आपने सजातियन में जायरहु॥ नातौ जीवतु न वचैगौ इतनौं सुनि वह व्हांतें उठि पूंछदवा य धाय आपनें सजातीनमें जाय मिल्यौ॥ ॥ ॥ यह प्रसंग कहि राजानें कुंम्हार सों कह्यौ कि सुनि तू वा कुलमें उपज्यौ नांहिं कि लोह की आंच झेलै पुनि सभातें उठाय दियौ तानें हौं कहतु हौं रे मूर्ख जलचर तें हूं युधिष्ठिर की भांति कपट कहि दियौ सु यह कहा कियौ नीति तौ यौं है कि॥ जहां सांच बोलेतें काज विगरै औ झूठतें सुधरै तहां सांच सौं झूठ ही भलौ कह्यौ है। जु मिथ्या कहे काहू कौ जीव बचै॥ औ आपनौ महात्म रहै तौ राखियै॥ है ठौर झूठ वोलवे कौ दोष नांहिं अरु विन वोले काज सरै॥ तौ कबहू न वोलियै॥ औ हर काम में चपलता करि विन स्वारथ न वोल उठियै देखौ बगुला मुनि धर्म साधे निज काज करै औ चपल होय सुवा वोलि बंधमें परै इतनौं कहि पुनि वानर बोल्यौ॥ अरे मूढ तैं स्त्री के संतोष के लये ऐसौ अधर्म विचार्यौ कि मोहि मारन कौं उपस्थित भयौ कह्यौ है॥ नारी कौ मन भायौ सहज में होय तौ करियै अरु वाके कहे मूर्ख होय निज धर्म न विसरियै क्यौंकि स्त्री जन आप स्वारथी होति हैं विन की प्रतीत कबहू न कीजै कीजै तौ जैसें एक ब्राह्मन प्रतीत करि पछतायौ तैसें पछतावनौं होय मगर पूछी यह कैसी कथा है तहां वानर कहनि लाग्यौ॥ ॥ ॥ काहू गांव में एक ब्राह्मन रहै॥ ताकी नारि अति सुंदरी चंद्रमुखी चंपक बरनी मृगनैनीं पिकवैनी गजगौंनी कटिकेहरी अरु जाके कर पद कोमल कमलसे नारंगी सम कुच वार स्याम घटा की समान दांत हीरा की सी पांति वोठ बिंवाफल जान भौंह धनुष मान पुनि कीर की

सीनाक॥कपोतकीसी कंठ॥औ करतारनें वाहि ऐसी संवारी कि॥मा
नौं सांचे कीसी ढारी वाके रूपकी ईर्षा सब कुटुम्ब की नारी स्वायौ करैं
अब यह चरित्र वाके पतिनें देख्यौ तब वह घर की माया छोडि॥वाके
आधीन होय वाहि साथ ले परदेस कौं चल्यौ कितेक दूरजाय वाकी स्त्री
नें कह्यौ हे स्वामी॥मोहि प्यास लागी है॥उन कही प्रिये तू ह्यां बैठ हौं ज
ल ल्वा जलाऊं यह कहि वह तौ पानी सोधन गयौ औ ह्यां प्यास के मारे या
कौ प्रान निकरि रह्यौ॥वह आय याहि मरी देखि अति विलाप करनि
लाग्यौ तब आकाश वानी भई कि अरे॥याकी तौ आयु पूरी भई पर जौ
तेरी यासौं अधिक सनेह है तौ तू आपनी आधी आव याहि दे ऐसें सुनि वि
प्रनें हाथ पांय धोय आचमन करि पवित्र होय आधी बैस वाहि दई व
ह झट उठि बैठी भई जल पीये दोऊ आगे चले औ काहू गांव के निक
ट जाय एक माली की बारी मांहिं उतरे जब ब्राह्मन गांव में सीधौ लैन
गयौ॥तब ब्राह्मनी बारी में फिरन लागी तहां देखै तौ एक पंगु कुवां पै
बैठ्यौ॥गाय गाय रहट को बरध हांकि रह्यौ है॥वाकौ गान सुनि ब्राह्म
नी रीझि ताके निकट जाय कहनि लागी अरे॥मेरौ मन तोसौं अटक्यौ
तू मेरौ मनोरथ पूरौ कर उन कही अरी घरगई॥हौं पंगु तू मोहि क
हा करैगी॥इन कही दई मारे निगोडे तोहि या बातसौं कहा काम जो
मैं कहौं सो तू कर अरु जौ तू मेरौ कह्यौ न करैगौ तौ मैं तोहि हत्या दूंगी
यह सुनि वानें वाकौ मनोरथ पूरौ कियौ तब ब्राह्मनी प्रसन्न होय बो
ली॥आजतें यह जीव तेरौ दियौ है॥ ॥ ॥ आगे सीधौ लै विप्र आ
यौ॥ अरु रसोई करि जब स्त्री पुरुष भोजन कौं बैठे तब ब्राह्मनीनें पं
गु कौं हू जिमायौ॥पुनि जब ह्यां तें चलिबे कौं भये तब ब्राह्मन नें आप
नें पति सों कह्यौ कि हे स्वामी जा बेर तू मोहि छांडि सीधौ लैन नगर में
जातु है वा समें हौं अकेली रहति हौं॥यातें यह लूलौ माली कौ टहल
वा है॥औ अच्छौ गावतु है याहि संग लीजै तौ मेरे निकट रह्यौ करैगौ

उनकही प्रिये॥ एकतौ गैलमें आपनी देह निकाहनी कठिन दूजै या पं
गुकौं केसें लै चलैंगे इन कही स्वामी एक पिटारी आनि देउ तामें राखि
याहि हौं निज मूंड पर अच्छी भांति लै चलिहौं॥ तुम या बात की चिन्ता
जिन करौ यह सुनि उनि पिटारी आनि दियौ इन वाहि वामें राखि सिर
धरलियौ आगे एक वनमें जाय ब्राह्मनी ने निज मन मांहिं विचार्यौ
कि यह ब्राह्मन जबलौं रहैगौ तबलौं हौं या पंगुसों निर्भय होय भो
ग न कर सकौंगी॥ ऐसें विचारि समैं पाय विप्रकौं कूपमें डारि पंगु
की पिटारी सिरलै ज्यौं एक नगरमें बढी त्यौं राजाके सेवक याहि
पकरि नगर पतिपै लैगये उन पिटारी खुलवाय पंगुकौं देखि॥ क
ह्यौ यह कोहै इन कह्यौ महाराज यह मेरी पति है॥ याके शत्रुन कै
भयतें आपनें मूंडपै लिये डोलति हौं॥ अब तिहारी सरन आनि ल
ईहै॥ जैसी जानौं तैसी करौ राजा कही तू मेरे नगरमें रहि हौं तेरी
आजीविका करैं देतु हौं तेरी शत्रु आवै तौ मोसों कहियो॥ इतनी क
हि राजानें वाकौ गांव में चुंगी कर दई॥ वह वाहि लै वहां सुखसों रहन
लागी॥ *॥ ॥ आगे दई केजो कोउ वनजारो वा वनमें आय नि
कस्यौ तानें वा ब्राह्मनकौं कुवांसो काढ्यौ॥ कह्यौ है जु आयु नपूरी
होय तौ वाघ वैरी अग्नि जल के दुखन तें बचै॥ पुनि वह ब्राह्मन वा
ही नगरमें आयौ॥ जहां ब्राह्मनी ही॥ जब ब्राह्मनी नें आपनौ पति
देख्यौ तब उन राजा सौं जाय कह्यौ महाराज॥ मेरे स्वामी कौ रिपु
आयौ यह सुनि राजानें वाहि पकरि मंगायौ॥ अरु कह्यौ रे विप्र तू या
हि क्यौं दुख देत हैं॥ औ कहा मांगतु है ऐसी बात राजा के मुखतें
सुनि॥ ब्राह्मननें निज मन में विचार्यौ कि॥ जो इनही मेरी ममता
त्यागी तौ मोकौं हू या की प्रीति तजनी उचित है क्यौं कि मन टूट्यौ फे
र न मिलै॥ जो फटिक कौ पान ऐसें विचारि ब्राह्मन नें राजा सौं कही
कि पृथ्वीनाथ हौं यातें न कछू मांगौं॥ नकहौं पर मेरी यापै आधीआ

कु है सो दिवाय देउ राजा ब्राह्मनकी बात झूठ समझि चुप ह्वै रह्यौ ॥ अ
रु ब्राह्मनी आगली भेद न जानि बोल उठी कि धर्मावतार ॥ जा भांति
यह कहै तारीति सौं याकी आर्बल देउ बहुरि विप्र बोल्यौ हाथ पा
य धोय आचमन करि पवित्र होय ऐसें कहि कि मैं तेरी आयुल ई ही
सो पाछी दई उन वैसेंही कह्यौ ॥ औ कहत ही वाकौ प्रान घटतें नि
करि गयौ राजासभासहित देखि भैचक रह्यौ पुनि वाकौ भेद पूछ्यौ
तब ब्राह्मननें सब भेद कह्यौ ॥ या बातके सुनत ही राजानें ब्राह्म
न कौं विदा कियौ ॥ अरु आप नियम लियौ कि नारी की बात कब
हू सांची न मानिये ॥ तातें हौं कहतु हौं अरे मूर्ख चंचल चर स्त्री की बा
त कौ विस्वास कबहू न करिये कह्यौ है जो नारी के बस परै सो कहा न
करै ॥ जैसें राजा भोज औ पांडे वररुचि कियौ मगर पूछी यह कैसी
कथा है तहां बानर कहतु है ॥ ❀ ॥ ॥ एक समय रात्र कौं राजाभोज
की रानी राजासों रिसानी तब उन अनेक उपाय मनाबे कौं किये
पर वानें याकी बात क्यौं हू न मानी औ कह्यौ जो तुम घोरा बनि मोहि
चढाय आंगन में लै फिरौ अरु हौं एड़ करि चाबुक चटकाऊं तौ तिहा
री गायौ गाऊं ॥ उन सुनि वैसें ही करि आपनौ मनोरथ साध्यौ औ वाही
रात्र पांडे की पंडियानि हू रूठी तब पांडेनें कही तू काहू भांति हू हट छो
ड़ि उन कही तू मेरी अपराधी है यातें तोहि भद्र करौं तौ मेरौ क्रोध मिटै
कह्यौ है जो अति चतुर होय सो रस रीति समझि प्रीति के बस परै आगे
पांडेनें दाढ़ी मूछ औ मूंड़ मुंड़वायौ औ वाकौ गायौ गायौ भोर भये ज
ब राजा सभामें आय बैठ्यौ तब पांडेनें जाय आसीस दई ॥ उन याहि
देखि हंसिकै कही अहो विप्र विन पर्व भद्र कहां भये ॥ इन विद्याके
बल रात की बात विचारि कह्यौ महाराज जहां घोरा की भांति हींसै तहां
विन पर्व हू मुंडन होय यह सुनि राजा मौन गहि रह्यौ तातें हौं कहतु
हौं अरे दुष्ट जलचर ॥ जैसे राजा औ पांडेनें कियौ ॥ तैसें तू हू कामांध हो

य स्त्री के वस भयौ ॥ ❀ ॥ ॥ वे दोऊ ऐसें वत राय रहे हे कि वाही समय
एक जल चरनें आय मगर सों कही भाई तेरी स्त्री मकरे क्रोध के मरवे कौं
ह्वै रही है ॥ अरु घरमें तेरे एक और मगर आय रह्यौ है यह सुनि मगर दु
खपाय बोल्यौ हाय ॥ मैं अभागे यह कहा कियौ जु ऐसी दुष्ट पतनी के
कहे आपनौं धर्म कर्म खोय दियौ ॥ पुनि उन वानरसों कह्यौ कि मि
त्र तू मेरी अपराध क्षिमा कर ॥ क्यौं कि मैं अवया दुख तें प्रान छांड़िहों
वानर बोल्यौ अरे मूरख तेरे घरमें विगार होनौं तौ युक्त ही हो पर तोहि
ऐसी दुष्ट स्त्री कैं गये उछाय करनौं जोग है क्यौं कि कह्यौ है कलहका
रिनी नारी औ विष विपत की जर है यातें जो अपनी आत्मा कौ सुख
चाहै सो वासों विरक्त रहै तौ ही भलौ वाके मनमानें सो कहै औ करै
नारीन के चरित्र भांति भांति के हैं ते कहां लौं कहौं परन्तु एती ही बात
में जानियौ कि जे चतुर औ सज्ञान हैं ते तिन के आधीन कबहू न होंयगे
मगर कही अहो ॥ मोतें है चूक भई ताही तें इत मित्राई गई औ उत
स्त्री जैसें एक नारि कौ जार भयौ न भर्तार वानर कही यह कैसी कथा है
तहां मगर कहतु है ॥ ❀ ॥ ॥ एक किसान की स्त्री तरुनि औ वह बूढ़ौ
फूस तातें वाकी मनोरथ पूजि न सकै ॥ यह नित प्रति पर पुरुष हेरयौ क
रै औ काम के मारे याकौ मन धाम में न लागै उदास रहै एक दिन कोऊ प
राये वित्त चित्त कौ चोर याहि आन मिल्यौ वासों इन कही हे सुलक्षन
मेरौ पति बूढ़ौ ह्वै रह्यौ है जौ तू मेरौ जार होय तौ मैं घर कौ द्रव्य ले तेरे संग
चलौं उन कही तें नीकी विचारी भलौ मैं होंउगौ इन कही तौ तू सकारे
आइयौ हौं तेरे साथ चलौंगी आगे भोर भये वह आयौ औ वाहि वित्त
समेत लै नगर के बाहर कौं धायौ कोस एक जाय मन में विचार करनि
लाग्यौ कि यह एक तौ जोवनवती दूजें याहि पर पुरुष की इच्छा है कदा
चित जैसें यह मोहि मिली तैसें काहू औरसों मिल जाय तौ फेर मैं कहा
करौंगौ यह विचारि एक नदी के तीर जाय बोल्यौ भद्रे प्रथम नदी पार वित्त

वस्त्र धरि आऊं॥ पाछे पीठ पर चढाय तोहि लै जाऊंगी॥ वानें या बात के सुनत ही वसन आभूषन की गठरी दई इन लै पार होय आपनी वाट लई सो लई विभिचारिनी नदी तीर पछताय नीची नार किये बैठि रही ही कि एक स्यारनी मास कौ लोथरा लिये तहां आई अरु एक माछरी हू पानी तें निकरि रेत पर बैठी ही वाहि देखि स्यारनी निरास होय चील की वोर तकनि लागी तब विभिचारिनी बोली कि हे कु गंवाय अब देखति है उन कही एक तौ हौं चतुर अरु मोहू तें दूनी तू जु तेरी सब सुगयौ॥ औ जर भयौ न भर्तार इतनी कथा कहि मगर बोल्यौ भाई मेरी हू वही दसा है पर अब कौन उपाय करौं। नीति मे तौ कार्य साधबे कौं चार उपाय कहे हैं॥ साम दाम डंड भेद अब इनमें तें मोहि जो करनौ जोग होय सो कही वानर कही अरे मूढ कौं उपदेस कबहू न दीजे बहुरि मगर बोल्यौ मित्र हौं शोक समुद्र में डूबतु हौ॥ तू मोहि काढ तोहि जस धर्म होयगौ कह्यौ है॥ औ मूरख काज विगारै तौ हू चतुर सुधार लेय॥ मैं मूढ तू चतुर तातें जामें मेरौ भलौ होय सो मुझि बताय वाकी दीनता देखि बनचर बोल्यौ भाई तू आपनें घर जा सजाती सो युद्ध कर क्यौं कि जो जीति है तौ घर पावै है औ मरि है तौ स्वर्ग कह्यौ है उत्तम जन सों साम उपाय कीजे मनुहार करि कार्य लीजे अरु अति बलवान कौं धन दै दाम उपाय करि आपनौं काज संवारिये पुनि दुष्ट तें दंड उपाय कै अपनपौ राखियै॥ बहुरि समान सों भेद उपाय करि वाहि छल बल करि मार नाखियै जैसें एक स्यारनें कियौ मगर कही यह कैसी कथा है॥ पुनि वानर कहतु है॥ ॥ ॥ काहू स्यारनें वन में एक मरौ हाथी पायौ पर वाकौ कठिन चाम यातें खा हैवा न गयौ तौं ही एक सिंह आयौ यह देखत ही वाके सन्मुख उठि धायौ औ हाथ जोरि बोल्यौ स्वामी या गज कौं आप अंगीकार कीजे उन कही हौं काहू कौ मास्यौ खातु नाहीं मेरौ यह धर्म है यातें यह मैं तोही कौं दि

थौ इतनी कहि वह चल्यौ गयौ पुनि एक तेंदुआ आयौ॥ वाहि देखि स्यारनें जीमें विचार्‌यौ कि यह दुष्ट है याकौं भेद उपाय करि डराइये ऐसें मन में ठानि यह वाके सनमुख जाय गुमान सों हित् होय बोल्यौ॥ अहो ह्यां कहां आवतु हौ यह गज सिंह मारि गंगा न्हान गयौ है मोहि याकी रखवारी राखि कै ज्यौं बघेला नें याकी बात सुनी॥ अरु वाके चरन चिन्ह देखे त्यौं हीं पीठ दई इतेक में एक चीता आयौ ताहि निहारि जंबुक नें विचार्‌यौ जु यासौं हाथी कौ चाम फड़वाय लीजै तौ भलौ ऐसें विचारि इनचीतासों कह्यौ॥ अहो भगिनी सुत मैं तोहि अनेक दिन पाछै देख्यौ ज्यौं भूख्यौ है तौ यह गज सिंह मारि नदी न्हैवे कौं गयौ है जौ लौं वह आवै तौ लौं कलेवा करि चल्यौ जा॥ उन कही मामा हौं आपनौं मांस राखौ तौ लाख॥ सिंह कौ मार्‌यौ गज कैसे खाउं॥ स्यार बोल्यौ अरे हौं याकौ रखवारौ हौं तेरे आडे ठाढ़ौ रहतु हौं॥ तू खा जब सिंह आवैगौ मैं पुकारौंगौ तब तू भाग जैयो॥ उन याकी बात मानि ज्यौं हीं वाकी खाल फारि कछु मांस मुख में लियौ त्यौं ही स्यार पुकार्‌यौ अरे भाग सिंह आयौ यह सुनत प्रमान वह उठि दौर्‌यौ॥ या भांति स्यार नै वासों दाम उपाय करि॥ निज काज साध्यौ आगे सजातीन सों दंड उपाय करि युद्ध कियौ अरु वह हाथी काहू कौं न खान दियौ॥ तातें हौं कहतु हौं कि साम दाम दंड भेद चार उपाय कहे हैं पर जैसौ जहां बूझिये तैसौ तहां करिये बहुरि मगर कही हौं विदेस जैहौं बंदर बोल्यौ अरे॥

एक चित्रांगद नाम कूकर परदेस में जाय काहू गृहस्थ के घर पैठ्यौ औ अच्छौ अच्छौ खाय जब बाहर आयौ तब वा गांव के स्वाननि वाहि घेर अति मार दई॥ पुनि इन दुख पाय निज नगर की बाट लई॥ अरु घर आयौ तब याके कुटुम्ब ने पूछ्यौ कि विदेस जैबे की अवस्था कहौ जु ह्वां कैसें रहै॥ इन कही परदेस में और तौ सब भलौ पर सजाती देख नाहीं सकतु जौ कोउ मोसौं पूछै तौ मेरे जानें घरतें निकसनौं

उचित कौं हूनां हिं अरे मगर तातें हौं कहतु हौं कि तेरी दुष्टपत्नी तौ गई पे तू अबही सकाम है॥ यातें नयौ ब्याह कर॥ कह्यौ है कुवा कौ नीर वड़ की छांह तुरत बिलोयो घी खीरकौ भोजन वालस्त्री ये सब प्रान कौं पोषतु हैं॥ अरु अवस्था प्रमान काज कीजै॥ तौ दोष नाहीं वानर तें यह उपदेस सुनि मगर निज घर गयो औ उन नयो विवाह कियो घर मांड्यो॥ सब दुख छांड्यो॥ आनंदसों रहन लाग्यो॥ इतनी कथा संपूरन करि विस्नुशर्मा नें राजपुत्रन कौं असीस दई कि तिहारी जय होय औ शत्रुन की हार यह सुनि राजपुत्रन हू वस्त्र आभूषन द्रव्य मंगाय भेट धरि पाय लाग गुरु कौं बिदा कियो अरु आप नीतिमार्ग सों निज राज काज करनि लागे ॥꧁॥

इति लब्धप्रनाश पंचम कथा संग्रहः संपूर्णः ॥꧁॥ ꧁॥ ꧁ ॥

ईश्वर के मदद से गोविन्द रघुनाथ थत्ते ने यराजनिति यथाप्रत्र अपने बनारस अखबार के छापेखाने में छपवाया जिल्द २५५ दरफिजिल्द ॥ ≈

छापने वाला रामफल । वकल रामन्नाभट्ट तैलंग मिती अषाढ सुदी १ संवत १९११ शाके १७७९ तारीख २५ जून सन् १८५४ ई०

य किताब महल्ले दुधविनायक छापेखाने मे मिलेगी ―